तुलसी रामायण

1008 पंक्तियों में

(संक्षिप्त रामचरितमानस)

भोजपुरी गद्य अनुवाद संगे

सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता

अनुवादक

अम्बे कुमारी

श्री राम चरित भवन

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

तुलसी रामायण

1008 पंक्तियों में

(संक्षिप्त रामचरितमानस)
भोजपुरी गद्य अनुवाद संगे

सम्पादक
ओमप्रकाश गुप्ता

अनुवादक
अम्बे कुमारी

श्री राम चरित भवन, ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

प्रकाशक

श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher

Shri Ram Charit Bhavan
Houston, USA

© 2023 तुलसीकृत रामचरितमानस के अंश को छोड़कर शेष प्रकाशक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2023

ISBN: 978-1-7362088-7-8

पुस्तक के समस्त अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिक। जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

समर्पण

ई संकलन हम आपन दिवंगत बाबूजी श्री कल्यानप्रसाद रामजीलाल अग्रवाल अउरी माई त्रिवेनी के चरण में आदर के साथे समर्पित करत बानी। उ भगवान राम के साँच भक्त रहन। अइसे त उ अब हमरा बीच नईखन, तबो उनकर राम-भक्ति हमेशा प्रेरणा देत रही।

ओमप्रकाश गुप्ता

प्रस्तावना

सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै॥
(मानस 7.130.X15-X16)

जवन आदमी पाँच-सात चौपाई के भी आपन हृदय में धर लेवेलन, ओकरा पाँच ढ़ंग से अविद्या से उपजल विकार से श्रीराम जी मुक्त कर देवेलन।

रामचरितमानस के आखिरी में गोस्वामी जी ऊपर दरसावल दूगो लाईन लिखले बाड़न। विद्वान लोग ई लाईन के खासकर से 'सत पंच' के अर्थ आपन-आपन बुद्धि के अनुसार निकलले बाड़न। 'सत पंच' के ढ़ेर अर्थ में से प्रचलित एगो अर्थ ह सात-पाँच। तुलसीदास जी शायद कह रहल बाड़न कि अगर कवनों आदमी मानस के पाँच-सात लाईन के भी हृदय में धर लेवेला त उ सभ दोष से मुक्त हो जाला। उनकरा ई बात के अनुमान रहल होई कि आवेवाला समय में लोग सभ के शायद समूचा रामचरितमानस पढ़े के समय ना मिले। ऐहिसे उ खाली पाँच-सात लाईन के जीवन में उतारे के बात कहले होईहन।

गोस्वामी जी के ई लाईन से प्रेरित होके अउरी ई सोचके कि आज हमनिके जीवन केतना व्यस्त बा। हमरा अईसन लागल कि मानस के एगो छोट रुप यदि बन जाए त आधुनिक समाज अउरी आवेवाला पीढ़ी खातिर शायद काम लायक बन जाए। ई विचार के फलस्वरुप रउआ सभ के सेवा में 'तुलसी रामायण 1008 पंक्ति संगे' प्रस्तुत बा। गीताप्रेस से प्रकाशित रामचरितमानस में 12,503 लाईन बा (एकरा में संस्कृत में लिखल श्लोक के पंक्ति के गिनती शामिल नईखे)। हइसे प्रस्तुत छोट मानस मूल पुस्तक के करीब 8 प्रतिशत ही बा। ई छोट रामायण में 121 गो दोहा, 15 गो सोरठा अउरी 708 गो चौपाई बा। बचल 28 गो लाईन दूसर छंद से बा। आशा बा कि पाठक आपन व्यस्त जीवन से एकरा पढ़े के समय निकाल पईहन। मानस से बटोरल 1008 गो लाईन के अलावा ई किताब में उनकर सरल भोजपुरी अनुवाद भी देवल गईल बा। किताब के आखिरी में श्री रामायण जी के आरती, श्री

राम-स्तुति अउरी किताब में आईल पात्र सभ के छोट परिचय भी बा। रामचरितमानस के हरेक शब्द लाखों-करोड़ों बेर लिखल, पढ़ल अउरी बोलल गईल बा। ऐहिसे हरेक शब्द अपना-आप में एगो मंत्र जईसन बन गईल बा। लाखों शब्द अउरी हजारों लाईन में से खाली तनकि लाईन के बटोरल कईसे जाए ई अपना आप में एगो चुनौती रहे। बटोरत समय नीचे के बात के खास ध्यान रखल गईल।

1. मानस कथा के घटना के सततता अउरी निरंतरता बनल रहे।
2. जहँवा तक हो सके मुख्य घटना सभ के छोट में ही सही लेकिन उल्लेख जरूर होखे।
3. प्रसंग के आपसी तालमेल अउरी घटना के बहाव बनल रहे।
4. हरेक 7-8 चौपाई के बाद एगो दोहा नाहीं त सोरठा रहे।
5. यदि कनहुँ छंद (दोहा, चौपाई, सोरठा के अलावा) के प्रयोग होईल होखे त ओकरा तुरंते बाद एगो दोहा/सोरठा आवे।

विद्वान पाठक लोग से हमार हाथ जोड़के प्रार्थना बा कि उ ई छोट रामायण के गोस्वामी जी द्वारा रचल रामचरितमानस के पर्याय बिल्कुल ना समझीं जा। हम नईखीं मानत कि कवनों रचना रामचरितमानस के जगह ले सकता। हमार ऐगुड़े आशा बा कि रउआ ई छोटका रामायण से प्रेरणा लेके पूरा रामचरितमानस पढ़े के आनंद जरुर लीहीं। ई किताब से राउर मन में भगवान राम के जीवन-कहानी के विस्तार से जाने के जिज्ञासा पैदा होखे, इहे ई किताब के खास मकसद बा।

ई हमार सौभाग्य बा कि भगवान राम हमरा मानस के छोट रामायण एकत्रित करें खातिर प्रेरित कईलन। यदि तुलसी बाबा ना होखतन त रामायण भी ना होखित। बाबा रउआ के करोड़ों बेर प्रणाम! हम आयोवा विश्वविद्यालय के (भूतपूर्व) आचार्य फिलिप लटगेण्डोर्फ के आभार कईसे प्रकट करीं, उ त हमार रामायण गुरु हवन। जबो हमरा मन में कवनों प्रश्न उठेला हम बिना कवनों संकोच के पूछेनी। अउरी उ जल्दीये एगो सद्गुरु के जईसन हमरा रास्ता देखावेलन। हम आदरणीय भाई श्री सत्यदेव जी जे खुद रामायण के बहुत बड़ विद्वान हवन के खास रुप से ऋणी बानी। ई संकलन के पहिला प्रारुप के हरेक लाईन के पढ़ के उ ढ़ेरों अमूल्य सुझाव देलन।

हम पंडित प्रभुदयाल मिश्र, भाई श्री रामलक्ष्मण गुप्त, डा राम गोपाल सिंह, श्रीमती उषा मेहरा, डाo आरती 'लोकेश', श्री निरंजन शर्मा, प्रो. ज्ञान प्रकाश शास्त्री, सुश्री विनीता मिश्रा, सुश्री अलका प्रमोद अउरी दूसर दोस्त सभ अउरी हितैषी सभ के बहुते आभारी बानी जिनकर अथाह सहयोग से ई यज्ञ पूरा होईल। हम भाई श्री बलराम ठकराल जी के खास रुप से उल्लेख करल चाहम जे हिन्दी अउरी अंग्रेजी के प्रारुप के बेर-बेर पढ़लन अउरी हरेक बेर अमूल्य सुझाव देलन। हम ई यज्ञ में उनकरा बराबर के सहभागी समझेनी।

आपन छोट भाई शिवप्रकाश अग्रवाल के विषय में का कहीं जवन लक्ष्मण के जईसन आपन बड़ के हरेक काम खातिर हमेशा तत्पर रहेलन। प्रिय शिव, भगवान राम तोहरा हमेशा खुश रखस।

ई किताब के भोजपुरी गद्य में अनुवाद करे खातिर हम डाo अम्बे कुमारी जी के ऋणी बानी जे बड़ी धीरज अउरी उत्साह से इ मंगल काम के पूरा कईली। भगवान श्रीराम उनकरा के हमेशा खुश रखस।

आखिरी में साकेत में रहेवाले माई-बाबूजी अउरी सभ गुरु लोग के चरणकमल के आदर से प्रणाम करत बानी जिनकर आशीर्वाद के बिना हमार जीवन में कुछो संभव नईखे। अईसे त पूरा प्रयास रहल कि किताब में गलती ना रहे लेकिन तबो जवन भी गलती रह गईल होखे ओकरा खातिर हम अकेले ही दोषी बानी, ऐहिसे क्षमा चाह तानी। 'तुलसी रामायण 1008 पंक्ति संगे' पर राउर सभ के टिप्पणी के इंतजार रही। जय सिया राम।

ओमप्रकाश गुप्ता
श्री राम चरित भवन, ह्युस्टन
तुलसी जयंती, संवत 2079

मानस के लाईन सभ के अवस्थिती के संकेत व्यवस्था

मानस के हरेक लाईन के एगो अनन्य संकेत देवल गईल बा ताकि ओकरा आसानी से दरसावल जा सके। ई संकेत के तीन भाग बा। पहिला भाग काण्ड क्रम, दूसर दोहा/सोरठा क्रमांक अउरी तीसर लाईन क्रमांक अउरी छंद के प्रकार बतावता।

काण्ड क्रम संकेत

1. बालकाण्ड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किंधाकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड 6. लंकाकाण्ड 7. उत्तरकाण्ड

छंद प्रकार संकेत

D दोहा, **S** सोरठा, **C** चौपाई, **X** छंद

उदाहरण:

1. सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।। 1.8.C2
   ई लाईन बालकाण्ड में दोहा 7 अउरी 8 के बीच के ह। ई दोहा 7 के बाद के दूसर लाईन ह अउरी एगो चौपाई ह।

2. सिंह ठवनी इत उत चितव धीर बीर बल पुंज।। 6.18.D2
   ई लाईन लंकाकाण्ड में 18वाँ दोहा के दूसर लाईन ह।

3. प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन। 1.17.S1
   ई लाईन बालकाण्ड में 17वाँ सोरठा के पहिला लाईन ह।

4. सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै। 7.130.X15
   ई लाईन उत्तरकाण्ड में दोहा 129 अउरी 130 के बीच के ह। ई दोहा 129 के बाद के बाद 15वाँ लाईन ह अउरी छंद ह।

तुलसी मानस महिमा

होतन ना तुलसी अगर, ना राम के हम जनतीं।
सामने खाड़ रहतन भगवन, तबो ना पहचनतीं ।।

मंथन वेद के कईलन, मानस-मणि संसार के देलन।
तुलसी-किरपा से राम मिललन, है प्रिया जिनकर सिया।।

हजार-आठ लाईन से, बानि सार मानस के रचल।
धन्य मानम खुद के, यदि रउआ कुछो बा जँचल ।।

बन पड़ी बढ़िया जवन भगवन, बस राउरे प्रसाद बा।
हर कमी-गलती के खातिर, मन में सहजे विषाद बा ।।

'ओम' चरण में बानि पड़ल, भगवन भक्ति हमरा दीहीं।
तुलसी-रास्ता पर चल पड़ीं, किरपा हमरा पर करीं ।।

बालकाण्ड

1 जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन। 1.0a.S1
2 करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥ 1.0a.S2

जेकरा याद करे से सभ काम सफल हो जाला, जे गण सभ के नायक अउरी सुघर हाथी के मुँह वाला बाड़न, अइसन बुद्धि के भंडार अउरी शुभ गुण के धाम गणेश महाराज हमरा पर कृपा करस।

3 मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन। 1.0b.S1
4 जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥ 1.0b.S2

जेकरा किरपा से गूँगा बोले लागेला, लँगड़ा दुर्गम पहाड़ पर चढ़ जाला, उ कलियुग के सभ पाप के जला डाले वाले भगवान हमरा पर दया करस।

5 नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन। 1.0c.S1
6 करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन॥ 1.0c.S2

जे नीला कमल जइसन श्याम बाड़न, जिनकर पूरा खिलल लाल कमल जइसन आँख बा, जवन हमेशा क्षीरसागर में आराम करेलन, उ परमपिता श्री नारायण हमरा हृदय में वास करस।

7 कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन। 1.0d.S1
8 जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन॥ 1.0d.S2

जिनकर कुंद के फूल अउरी चंद्रमा के जइसन गोर शरीर बा, जे पार्वती के प्रियतम अउरी दया के धाम बाड़न, जिनकर गरीब लोगन प स्नेह बा, कामदेव के दमन करे वाले अइसन शंकर भगवान हमरा पर किरपा करस।

9 बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि। 1.0e.S1
10 महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर॥ 1.0e.S2

हम श्री गुरु के चरण के वंदना करत बानी, जे किरपा के सागर अउरी मनुज रुप में श्री हरि ही बाड़न। उनकर वचन महामोह जइसन घनघोर अँधेरा के नाश खातिर सूरज के किरण के समूह बा।

11 सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ 1.8.C2
12 करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥ 1.8.C5
सभ जग में श्री सीता राम समाईल बाड़न ई जानके हम दूनों हाथ जोड़के सबके प्रणाम करत बानी। हम रघुनाथ जी के गुण के वर्णन करल चाहत बानी, लेकिन हमार बुद्धि बहुत छोट बा अउरी उनकर चरित्र अथाह बा।

13 एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥ 1.10.C1
14 मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥ 1.10.C2
ई कथा में रघुनाथ जी के उदार नाम बा, जे बहुते पवित्र बा, वेद-पुराण के सार बा। उनकर नाम मंगल के घर ह अउरी अमंगल के हरे वाला बा। उमा साथे शिव जी हमेशा ओकर जाप करत रहेलन।

15 प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन। 1.17.S1
16 जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ 1.17.S2
हम पवनपुत्र हनुमान जी के प्रणाम करत बानी, जे दुष्ट जइसन वन के भस्म करे खातिर आग जइसन बाड़न। उ ज्ञान से भरल बाड़न अउरी उनकर हृदय-मंदिर में धनुष- बाण लेवे वाले भगवान राम बसेलन।

17 सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनउँ बिसद राम गुन गाथा ॥ 1.34.C3
18 संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा ॥ 1.34.C4
अब हम आदर के साथे शिवजी के सिर झुका के श्रीराम जी के गुण से भरल निर्मल कथा कहत बानी। श्रीहरि के चरण में आपन सिर रख के संवत् 1631 में ई कथा के शुरू करत बानी।

19 नौमी भौम बार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥ 1.34.C5
20 रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा ॥ 1.35.C7

चैत्र मास के नवमी तिथि, मंगलवार के दिन, अयोध्या में ई चरित्र प्रकाशित भइल रहे। ऐकर नाम 'रामचरितमानस' ह। ई चरित्र के सुने भर से सुने वाला के शांति मिल जाला।

21 रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन॥ 1.35.C9
22 रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥ 1.35.C11
मुनि सभ के प्रिय ई सुहावन अउरी पवित्र रामचरितमानस के रचना शिवजी कइले रहन। ई ग्रंथ ऋषि-मुनि सभ के खूबे प्रिय बा। भगवान शिवजी एकरा रचके पहिले आपन मन में रखलन अउरी बढ़िया अवसर आवे पर पार्वती के सुनईलन।

23 तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर॥ 1.35.C12
24 कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई॥ 1.35.C13
शिवजी आपन हृदय में विचार करके अउरी खुश होके ऐकर सुन्दर 'रामचरितमानस' नाम रखलन। हम इहे सुखदायक अउरी सुहावनी कथा के कहत बानी। हे सज्जन लोग! रउआ आदर से मन लगा के सुनी जा।

25 मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥ 1.112.C4
मंगल के घर अउरी अमंगल के हरेवाले, महाराज दशरथ के आँगन में खेले वाले, भगवान राम हमरा पर कृपा करस।

26 अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ॥ 1.188.C7
एक बार अवधपुरी में रघुकुल शिरोमणि दशरथ नाम के राजा भईल रहन, जेकर नाम वेद में भी प्रसिद्ध रहे।

27 कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत। 1.188.D1
28 पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत॥ 1.188.D2
कौशल्या आदि उनकर सभ प्रिय रानी लोग पवित्र आचरण करेवाला रही जा। उ सभ खूबे विनीत अउरी पति के अनुकूल व्यवहार करत रही जा अउरी उहन लोग के श्रीहरि के चरण में गहरा परेम रहे।

29 एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं॥ 1.189.C1
एक बार राजा के मन में बड़ा ग्लानि भईल कि हमरा बेटा नईखे।

30 निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ॥1.189.C3
31 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी॥ 1.189.C4
उ आपन दु:ख-सुख गुरु वशिष्ठ के सुनईलन। गुरु उनकरा के कई तरह से समझा के कहलन, "हे राजा! धीरज रखीं, रउआ के चार बेटा होईहन, जे तीनों लोक में प्रसिद्ध अउरी भक्त के डर के दूर करेवाला होईहन।"

32 सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा॥1.189.C5
33 एहि बिधि गर्भसहित सब नारी। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी॥1.190.C5
फिर मुनि वशिष्ठ श्रृंगी ऋषि के बोलाके महाराजा दशरथ से शुभ पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवईलन। जेकरा चलते सभ रानी गर्भवती होके हृदय में बहुते खुश भईली, जेकरा से उनका बड़ा सुख मिलल।

34 नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥ 1.191.C1
35 मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥ 1.191.C2
पवित्र चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के नवमी तिथि के दिन दुपहरिया के समय रहे, जे भगवान के प्रिय अभिजित मुहूर्त ह। ओह समय न त ढ़ेर सरदी रहे ना ही गरमी। उ पवित्र समय सभ लोक के शांति देवेवाला रहे।

36 भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी। 1.192.X1
37 हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥ 1.192.X2
38 लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी। 1.192.X3
39 भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥ 1.192.X4
ई बेला में दीन-दु:खी पर दया करेवाले अउरी माई कौशल्या के हित चाहेवाले किरपा करेवाले भगवान प्रकट भईलन।ऋषि-मुनि लोगन के मन के हरेवाले अद्भुत रुप के देखके माई बड़ी खुश भईली। बादल जईसन उनकर श्याम शरीर आँख के आनंद देवेवाला रहे। उनकर चारों हाथ अस्त्र-शस्त्र से भरल रहे, उ गहना अउरी

वनमाला पहिनले रहन, उनकर आँख विशाल रहे। ऐह ढ़ंग से शोभा के समुन्दर अउरी खर राक्षस के मारेवाले भगवान प्रकट भईलन।

40 बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार। 1.192.D1
41 निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥ 1.192.D2

ब्राह्मण, गाय, देवता अउरी संत के खातिर भगवान मनुष्य बनके अवतार लिहलन। उनकर शरीर उनकर आपन इच्छा से बनल बा। उ खुद माया, गुण अउरी इन्द्रिय से परे बाड़न।

42 दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना॥ 1.193.C3
43 जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई॥ 1.193.C5

महाराज दशरथ बेटा के जन्म के समाचार सुनके जइसे ब्रह्मानंद में समा गईलन अउरी मन में सोचे लगलन कि जिनकर नाम सुनला से ही कल्याण होखेला, उहे भगवान हमरा घरे आइल बाड़न।

44 कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ॥ 1.195.C1

उनकर दूसर मेहरारु लोग कैकेयी अउरी सुमित्रा भी सुन्दर बेटा के जन्म दिहली जा।

45 नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी॥ 1.197.C2
46 सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥ 1.197.C6

थोड़ा समय बाद नामकरण के बेरी राजा दशरथ ज्ञानी मुनि वशिष्ठ के आमंत्रित कईलन।गुरु वशिष्ठ कहलन, "जे सुख के धाम अउरी सभ लोक के शांति देवेवाला बाड़न, उनकर नाम 'राम' ह।"

47 बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥ 1.197.C7
48 जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥ 1.197.C8

"जे संसार के भरण-पोषण करेलन, उनकर नाम 'भरत' होई। जिनका याद कइला से दुश्मन के नाश हो जाला, जे वेद में भी प्रसिद्ध बाड़न उनकर नाम 'शत्रुघ्न' होई।"

49 लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार। 1.197.D1
50 गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥ 1.197.D2

जे शुभ लक्षण के धाम, राम के बहुते प्रिय अउरी सभ संसार के आधार अउरी बहुते उदार बाड़न, गुरु वशिष्ठ उनकर नाम 'लक्ष्मण' रखलन।

51 बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी॥ 1.198.C3
52 भरत सत्रुहन दूनउ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई॥ 1.198.C4
छोटहने से राम के आपन हितैषी अउरी मालिक जानके लक्ष्मण उनकर चरण में परेम लगईलन। भरत अउरी शत्रुघ्न दूनों भाई में, स्वामी अउरी सेवक के जवन परेम के प्रशंसा होला, ओइसने परेम हो गईल।

53 बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा॥ 1.203.C1
54 कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई॥ 1.203.C2
राम ढ़ेर प्रकार से बाल-लीला कईलन अउरी आपन सेवक सभ के खूबे आनंद दिहलन। ऐह तरह से कुछ समय बीत गईला प चारों भाई बड़ होखला प आपन कुटुम्बी सभ के सुख देवेवाला भईलन जा।

55 भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥ 1.204.C3
56 गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई॥ 1.204.C4
कुमार अवस्था आवे प गुरु, बाबू जी अउरी माई उनकर यज्ञोपवीत संस्कार कईलन। राम गुरु वशिष्ठ के आश्रम में पढ़े गईलन अउरी थोड़े समय में उ सभ विद्या सीख गईलन।

57 कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल। 1.204.D1
58 प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल॥ 1.204.D2
कोसलपुर के आदमी, औरत अउरी बच्चा सभ के किरपा करेवाले रघुनाथ आपन प्राण से भी बढ़ के प्रिय लागेलन।

59 बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी॥ 1.206.C2
60 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं॥ 1.206.C3

जंगल में विश्वामित्र नाम के एगो महान ज्ञानी मुनि के पवित्र आश्रम रहे। जहँवा ऋषि-मुनि जप, यज्ञ, अउरी योग आदि करत रहन जा, लेकिन उ मारीच अउरी सुबाहु नाम के राक्षस से खूबे डेरात रहन जा।

61 देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं॥ 1.206.C4
62 गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी॥ 1.206.C5
यज्ञ होखल देख के राक्षस दउड़ल आवत रहन अउरी उपद्रव मचावत रहन, जेकरा से मुनि दुखी होत रहन। गाधि के बेटा विश्वामित्र के मन में चिंता भईल कि ई पापी राक्षस बिना हरि के मारे ना मरिहन।

63 तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा॥ 1.206.C6
64 एहूँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई॥ 1.206.C7
उनकर मन में तब विचार आईल कि भगवान धरती के भार उतारे खातिर अवतार ले ले बाड़न। उ सोचे लगलन कि इहे बहाने जाके हम उनकर चरण के देखीं अउरी राजा से विनती ककेे दूनों भाई के ईहाँ ले आईं।

65 बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार। 1.206.D1
66 करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार॥ 1.206.D2
ऐहि ढंग से बहुते मनोरथ करत मुनि के जाए में तनको देर ना लागल अउरी उ जल्दिये अयोध्या पहुँच गईलन। सरयू नदी में नहा के उ राजा दशरथ के दरबार में पहुँचलन।

67 केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ बारा॥ 1.207.C8
68 असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही॥ 1.207.C9
महाराज कहलन, "हे मुनि! रउआ कवन कारण से आईल बानी? कहीं, हम ओकरा पूरा करे में तनको देर ना करब।" विश्वामित्र कहलन, "हे राजा! राक्षस सभ के झुण्ड हमरा सतावत रहेलन, ऐहिसे हम रउआ से कुछ माँगे आईल बानी।"

69 अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा॥ 1.207.C10
70 सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी॥ 1.208.C1

"रउआ राम अउरी उनकर छोट भाई लक्ष्मण के हमरा साथे भेज दीहीं। उनकर हाथ से राक्षस सभ के मरा गईला प हम सुरक्षित हो जाईम।" मुनि के बहुते अप्रिय वचन सुनके राजा के हृदय काँप गईल, उनकर मुँह के चमक फीका पड़ गईल।

71 तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा॥ 1.208.C8
72 अति आदर दोउ तनय बोलाए। हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए॥ 1.208.C9
तब गुरु वशिष्ठ राजा दशरथ के बहुते ढंग से समझईलन, जेकरा से राजा के मन के संदेह दूर हो गईल। राजा बड़ी आदर से आपन दूनों बेटा के बोलईलन अउरी हृदय से लगाके उहन लोग के बहुते ढ़ंग से समझईलन।

73 पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन। 1.208b.S1
74 कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन॥ 1.208b.S2
आदमी सभ में सिंह के जईसन दूनों वीर मुनि के डर दूर करेके खातिर खुश होके चल पड़लन। उ किरपा के सागर, धीर बुद्धि वाला अउरी सभ संसार के कारण के भी कारण हवन।

75 चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई॥ 1.209.C5
76 एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥ 1.209.C6
रस्ता में मुनि ताड़का नाम के राक्षसी के देखवलन, जवन खिसिया के उनकरा मारे खातिर दउड़ल। राम एगुड़े बाण से ओकर प्राण ले लेलन अउरी दीन जानके ओकरा आपन पद दिहलन।

77 प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई॥ 1.210.C1
आश्रम पहुँचला के बाद सबेर होईला प राम मुनि से कहलन, "रउआ बिना कवनो डर के यज्ञ करीं।"

78 सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही॥ 1.210.C3
79 बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा॥ 1.210.C4

ई समाचार सुनते ऋषि-मुनि सभ के दुश्मन राक्षस मारीच गुस्सा के साथी सभ साथे उहाँ विघ्न डाले खातिर आ गईल। राम बिना फल के बाण ओकरा मरलन, जेकरा लागे से उ सौ योजन (1 योजन=8 मील) दूर समुन्दर के पार जाके गिरल।

80 पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥ 1.210.C5
81 तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥ 1.210.C7
फिर उ अग्निबाण से सुबाहु के मरलन। ओने छोट भाई लक्ष्मण राक्षस सभ के सेना के नाश कर देलन। तनी दिन उहाँ रहके राम ब्राह्मण सभ पर बड़ी किरपा कईलन।

82 तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥ 1.210.C9
83 धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा ॥ 1.210.C10
तनकि समय बाद मुनि कहलन, "हे भगवन! धनुषयज्ञ के एगो उत्सव देखे चल तानी जा।" ई सुनके राम अउरी लक्ष्मण खूबे खुश होके बड़का मुनि विश्वामित्र के साथे चल देलन जा।

84 आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥ 1.210.C11
85 पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥ 1.210.C12
रस्ता में उनकरा एगो आश्रम दिखाई पड़ल जहँवा पशु, पक्षी, जीव-जंतु ना रहे। उहँवा पत्थर के एगो शिला देखके भगवान ओकरा बारे में पूछलन। मुनि तब ई विषय में विस्तार से जानकारी देलन।

86 गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर। 1.210.D1
87 चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥ 1.210.D2
उ कहलन, "गौतम मुनि के मेहरारु अहल्या के शरीर शाप के कारण पत्थर के हो गईल बा। उ बहुते धैर्य से राउर पैर के धूल चाहत बाड़ी। हे रघुवीर! इनकरा पर किरपा करीं।"

88 परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही। 1.211.X1
89 देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥ 1.211.X2

भगवान के पवित्र अउरी शोक के नाश करेवाला पैर से छूअईते अहल्या एगो तपोमूर्ति के रुप में प्रकट हो गईली। अपना सामने संसार के सुख देवेवाले रघुकुल के नायक रामचंद्र जी के देखके अहल्या हाथ जोड़ के खड़ा हो गईली।

90 अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही। 1.211.X3
91 अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥ 1.211.X4
खूबे प्रेम के कारण उ अधीर हो गईली। उनकर शरीर पुलकित हो गईल, उनकर मुँह से शब्द ना निकलत रहे। बहुते भाग्यवान अहल्या भगवान के पैर छुअली, उनकर दूनों आँख से जल के धार बहे लागल।

92 मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई। 1.211.X7
93 राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥ 1.211.X8
उ प्रार्थना करे लगली, "हे भगवान! हम एगो अपवित्र मेहरारू हईं, रउआ संसार के पवित्र करेवाला हईं। रउआ रावण के दुश्मन अउरी सभ लोग के सुख देवेवाला हईं। हे कमल जइसन आँख वाला! हे संसार के डर से छोड़ावेवाला! हम राउर शरण में बानी, हमार रक्षा करीं! रक्षा करीं।"

94 एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी। 1.211.X15
95 जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी॥ 1.211.X16
ऐह ढंग से बेर-बेर भगवान राम के पैरों में गिरके, मनचाहा वरदान पा के, गौतम ऋषि के मेहरारु अहल्या खुश होके आपन पति के लोक में चल गईली।

96 अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल। 1.211.D1
97 तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल॥ 1.211.D2
भगवान राम अइसने दीनबंधु अउरी बिना कवनों कारण के दया करेवाला हवन। तुलसीदास कहत बाड़न कि हे मूरख मन! सभ कपट-जंजाल छोड़के तू उनकरे भजन कर।

98 हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया ॥ 1.212.C4
99 बिस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए ॥ 1.214.C8
खुशी से चलते-चलते राम मुनि सभ के साथे तुरंते जनकपुर के पास पहुंच गईलन। ओने मिथिला के राजा जनक के महामुनि विश्वामित्र के आवे के समाचार मिलल।

100 कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥ 1.215.C1
101 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥ 1.215.C7
राजा जनक मुनि से मिललन अउरी उनकर पैर में सिर रखके प्रणाम कईलन। मुनि सभ के नाथ विश्वामित्र खुश होके उनकरा आशीर्वाद दिहलन। दूनों भाई के देख के सभ लोग सुखी हो गईलन। उनकर आँख में पानी भर आइल अउरी शरीर रोमांचित हो गईल।

102 समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥ 1.227.C2
103 तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥ 1.228.C2
सबेरे पूजा के समय होईला पर, गुरु से अग्या लेके दूनों भाई फूल लेवे खातिर चल दिहलन जा। ओहि घड़ी सीता भी उहाँ अइली। उनकर माई उनकरा पार्वती पूजा खातिर उहाँ भेजले रही।

104 देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥ 1.230.C5
105 लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥ 1.232.C3
सीता के सुंदरता देखके राम के बहुते सुख मिलल। मने-मने उ उनकर सराहना कईलन, लेकिन मुँह से शब्द ना निकलत रहे। तबे सखी सभ भी लता के ओट से सीता के भी सुघर साँवर अउरी गोर राजकुमार के देखवलीजा।

106 लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ। 1.232.D1
107 निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥ 1.232.D2
तबे दूनों भाई लता में से अइसन परगट होइलन जा, जइसे दुगो निर्मल चाँद बादल के परत के चीर के निकलल होइहें।

108 सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥ 1.234.C3
109 गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ॥ 1.235.C4
तब सीता लजा के आपन आँख खोललली अउरी सामने रघुकुल के दूनों सिंह राम अउरी लक्ष्मण के देखली। सीता फिर माई पार्वती के मंदिर में गइली अउरी उनकर चरन के वंदना करके हाथ जोड़ के कहली।

110 जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥ 1.235.C5
111 जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥ 1.235.C6
"हे पर्वत सभ के राजा हिमाचल के बेटी! हे महादेव शंकर के मुँह जईसन चंद्रमा के चकोरी! राउर जय होखे! हे हाथी के मुँह वाले गणेश अउरी छह मुँह वाले कार्तिकेय के माई! हे संसार के जन्म देवेवाली! हे बिजली के चमक जईसन देह वाली! राउर जय होखे!"

112 मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥ 1.236.C3
113 सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥ 1.236.C7
"रउआ हमार मन के बात अच्छा से जानतानी, ऐहिसे कि सभकर हृदय में रउआ हमेशा रहेनी।" सीता के प्रार्थना सुनके माई पार्वती कहली, "हमार आशीर्वाद से तोहार मन के बात जरूर पूरा होई।"

114 मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो। 1.236.X9
115 करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥ 1.236.X10
116 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली। 1.236.X11
117 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥ 1.236.X12
"तोहर मन के जे भा गईल बा, उ साँवर सुघर वर तोहरा सहजे मिली। उ करुणा के धाम ह, सबकुछ जानेवाला ह, तोहार शील अउरी स्नेह के जानताड़न।" ऐह ढ़ंग से माई पार्वती के आशीर्वाद सुनके सीता अउरी उनकर सखी लोग खुश हो गईली। तुलसीदास जी कहत बाड़न, "माई भवानी के बेर-बेर पूजा करके सीता खुश मन से आपन महल के लौट गईली।"

118 जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि । 1.236.S1
119 मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥ 1.236.S2
माई गौरी के अपना अनुसार जानके सीता के हृदय में जवन खुशी होइल उ कहल ना जा सके। शुभ मंगल के कारण उनकर बायाँ अंग फड़के लागल।

120 हृदयँ सराहत सीय लोनाई । गुर समीप गवने दोउ भाई ॥ 1.237.C1
121 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे । रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥ 1.237.C4
ओने दूनों भाई भी सीता के सुंदरता के बड़ाई करत-करत गुरु के पास गईलन जा। गुरु दूनों भाई के आशीर्वाद दिहलन कि तोहार मन के इच्छा सफल होखे। राम अउरी लक्ष्मण ई सुनके बहुते खुश भईलन जा।

122 पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला । देखन चले धनुषमख साला ॥ 1.240.C4
123 हरषे जनकु देखि दोउ भाई । मुनि पद कमल गहे तब जाई ॥ 1.244.C4
फिर मुनि लोग के साथे राम धनुष यज्ञशाला देखे चललन। महाराज जनक दूनों भाई के देखके बड़ा खुश होईलन। उ मुनि के चरणकमल पकड़ लेलन अउरी उनकरा रंगमंच के ओरे ले गईलन।

124 सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल । 1.244.D1
125 मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥ 1.244.D2
उहाँ सभ मंच में जवन मंच सबसे सुघर, उज्ज्वल अउरी विशाल रहे, ओह पर राजा मुनि अउरी दूनों भाई के बईठवलन।

126 बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल । 1.249.D1
127 पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ॥ 1.249.D2
राजा जनक के भाट सभ ई शुभ घोषणा कईलन जा, "हे राजा सभ! हम आपन बाँह उठाके महाराज जनक के बड़का प्रण के कहत बानी जा।"

128 नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू।गरुअ कठोर बिदित सब काहू॥ 1.250.C1
"राजा सभ के बाँह के बल चंद्रमा ह त शिव जी के धनुष राहु ह, जवन बहुते भारी अउरी कठोर बा, ई सभ कोई के मालूम बा।"

129 सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा ॥ 1.250.C3
130 त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही ॥ 1.250.C4
"त्रिपुरारी शिव जी के ई कठोर धनुष के राजा सभ के ई समाज में जे कोई भी आज तूड़ी, तीनों लोकों के विजय के साथे, राजकुमारी सीता बिना कवनों सोच-विचार के निश्चित रूप से ओकरा से बियाह करिहन।"

131 सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे ॥ 1.250.C5
132 तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं॥ 1.250.C7
महाराज जनक के ई प्रतिज्ञा सुनके सभ राजा के मन में सीता के साथे बियाह के इच्छा जाग उठल। उ वीर अहंकारी मने-मने तमतमाये लगलन। बड़ा ताव से उ शिव के धनुष के देखत रहन, निगाह जमा के ओकरा पकड़त रहन, करोड़ों ढ़ंग से जोर लगावत रहन, लेकिन उ उनसभ से हिलत तक नईखे।

133 तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ। 1.250.D1
134 मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥ 1.250.D2
मूरख राजा सभ तमक के धनुष के पकड़त रहन जा, लेकिन जब उ ना उठत रहे त लजा के चल देत रहन जा। अइसन लागत रहे कि वीर सभ के बाँह के बल पा के धनुष अउरी भारी होखल जात रहे।

135 नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने ॥ 1.251.C6
136 अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी ॥ 1.252.C3
राजा सभ के ई दशा देखके जनक जी अकुला गईलन अउरी खिसिया के कहलन, "आपन वीरता प अभिमान करेवाला कवनों वीर अब मत खिसियाये। हम जान गईनी की धरती पर अब कवनों वीर रहले नईखे।"

137 रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई। तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥ 1.253.C1
लक्ष्मण कहलन, "जवन समाज में एको रघुवंशी होखे, उहाँ अइसन बात कोई ना कहेला।"

138 लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥ 1.254.C1

139 सकल लोग सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने॥ 1.254.C2
उनकर खिसियाईल बात सुनके धरती डगमगाये लागल अउरी सभ दिशा के हाथी काँपे लगलन। सभ लोग अउरी राजा डर गईलन। सीता के हृदय में खुशी भईल अउरी राजा जनक सकुचा गईलन।

140 बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी॥ 1.254.C5
141 उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा॥ 1.254.C6
तब शुभ समय जानके विश्वामित्र खूब स्नेह से बोललन, "हे राम! उठअ, शिवधनुष तुड़ के जनक के दुःख मिटाव।"

142 उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बालपतंग। 1.254.D1
143 बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग॥ 1.254.D2
तब मंच जईसन उदयगिरि पर रघुकुल में बड़े राम बच्चा सूरज के जईसन उगलन। ई दृश्य देखके सभ संत जईसन कमल खिल उठलन अउरी उनकर भौंरा जईसन आँख खुश हो गईल।

144 गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा॥ 1.261.C5
145 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा॥ 1.261.C8
राम मने-मने गुरु के प्रणाम कईलन अउरी फिर बहुत फुर्ती से धनुष के उठा लेलन। उ धनुष के ओहि क्षण बीच से तोड़ देलन,जेकर भयंकर ध्वनि से सभ लोक गूँज उठल।

146 सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा॥ 1.263.C8
147 गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥ 1.264.C8
तब गुरु शतानंद के अग्या मिले प सीता राम के पास चलली। उ सुघर दृश्य के देखके उनकर सहेली सभ मधुर गीत गावे लगली। सीता राम के गला में वरमाला पहिना दिहली।

148 तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥ 1.268.C2
149 अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥ 1.270.C3

उ अवसर पर शिवधनुष के टूटल सुनके भृगुकुल जईसन कमल के सूरज परशुराम उहाँ आ पहुँचलन। बहुते खिसिया के उ कठोर वचन बोललन, "अरे मूर्ख जनक! बता, ई धनुष के तोड़लस?"

150 अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥ 1.270.C5
राजा जनक बहुते डेरा गईलन, उनकरा कवनो उत्तर ना बुझात रहेाई देखके उहाँ आइल दुष्ट राजा मने-मने बहुते खुश होइलन।

151 सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु। 1.270.D1
152 हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥ 1.270.D2
जब राम लोगन के डेराईल अउरी सीता के सहमल देखलन। उ हृदय में बिना कवनों खुशी अउरी दुःख के बोललन।

153 नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥ 1.271.C1
154 सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥ 1.271.C4
"हे नाथ! शिव जी के ई धनुष के तुड़ेवाला राउर कवनों एगो नौकरे होई।" तब परशुराम कहलन, "सुन राम! जे भी ई शिवधनुष तुड़ले होई, उ सहस्रबाहु जईसन हमार दुश्मन ह।"

155 सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥ 1.271.C6
156 बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥ 1.271.C7
परशुराम के बात सुनके लक्ष्मण मुस्करईलन अउरी अपमानित करेवाला बोली में बोललन, "हे गोसाईं! हमनिके लड़कपन में अईसन बहुते छोट-छोट धनुष के तुड़ली जा, लेकिन पहिले त रउआ अईसन खिस कबो नईखी कईले।"

157 छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥ 1.272.C3
"ई धनुष त छुअते टूट गईल, एकरा में रघुनाथ जी के भला कवन दोष? हे मुनि! रउआ बिना कवनों कारण के काहे खिसियात बानी?"

158 बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥ 1.272.C4

159 बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥ 1.272.C5
परशुराम आपन फरसा के ओरे देखके कहलन, "अरे शठ! लगता तू हमार स्वभाव के बारे में नईखस सुनले। हम तोरा छोट लईका समझ के नईखी मारत। अरे मूरख! का तू हमरा खाली मुनिए समझले बाड़े।"

160 बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥ 1.273.C1
161 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥ 1.273.C2
लक्ष्मण हँस के कोमल बोली से कहलन, "अहो बड़े मुनि! अरे, रउआ त महान योद्धा निकलनी। बेर-बेर हमरा आपन फरसा अईसे देखाव तानी, जईसे फूँक से पहाड़ उड़ावल चाह तानी।"

162 लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु। 1.276.D1
163 बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥ 1.276.D2
लक्ष्मण के ई उत्तर परशुराम के खीस के आग में आहुति जईसन रहे। उनकर खीस के बढ़त देखके रघुकुल के सूरज रामचंद्र ठंढ़ा पानी के जईसन ई शांत वचन कहलन।

164 सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना। बालक बचनु करिअ नहिं काना॥ 1.279.C2
165 बिप्रबंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई॥ 1.284.C5
"हे नाथ! रउआ त सुभावे से ज्ञानी हईं। रउआ बच्चा के बात पर गौर ना करे के चाहीं। ब्राह्मण वंश के अईसन महिमा ह कि जे रउआ से डेराला, उ सबकोई से अभय हो जाला।"

166 सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के॥ 1.284.C6
167 राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥ 1.284.C7
रघुनाथ के कोमल लेकिन गूढ़ वचन सुनके परशुराम के बुद्धि के परदा खुल गईल। उ बोललन, "हे राम! हे लक्ष्मीपति! हमार ई धनुष हाथ में लिहिं अउरी एकरा खींचीं, जेकरा से हमार संदेह मिट जाए।"

168 देत चापु आपुहिं चलि गयऊ। परसुराम मन बिसमय भयऊ ॥ 1.284.C8
169 कहि जय जय जय रघुकुलकेतू। भृगुपति गए बनहि तप हेतू ॥ 1.285.C7
जईसे उ धनुष राम के हाथ में देवे लगलन उ अपने आपे चल गईल। ई देखके उनकरा बहुते अचरज भईल अउरी राम के जय-जयकार करते तप खातिर जंगल चल गईलन।

170 जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥ 1.286.C5
171 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाईं। अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं ॥ 1.286.C6
तब राजा जनक मुनि विश्वामित्र के प्रणाम करके कहलन, "राउर किरपा से राम ई धनुष तुड़ले हवन। आज दूनों भाई हमार बेड़ा पार कर देलन। हे स्वामी! अब हमरा के ठीक अग्या दीहीं।"

172 दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥ 1.287.C1
173 मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला। पठए दूत बोलि तेहि काला ॥ 1.287.C2
मुनि बोललन, "रउआ दूत के अयोध्या भेज के महाराज दशरथ के बोलाईं।" राजा जनक खुश होके कहलन, "हे किरपा करेवाला! बहुत अच्छा!" अउरी ओहि घड़ी आपन दूत के अयोध्या भेज देलन।

174 पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥ 1.290.C1
175 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥ 1.290.C3
दूत राम के पवित्र नगरी अयोध्या में पहुँचलन अउरी उ सुघर नगर के देखके बड़ा खुश भईलन। उ महाराज दशरथ के प्रणाम करके जनक जी के संदेश पत्र दिहलन जा, जेकरा राजा बड़ा खुशी से खुदे उठके लिहलन।

176 तब उठि भूप बसिष्ट कहुँ दीन्हि पत्रिका जाइ। 1.293.D1
177 कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ ॥ 1.293.D2
राजा उठके वशिष्ठ जी के पत्रिका दिहलन अउरी दूत सभ के आदर से बोलाके उनकरा से सब बात सुनवईलन।

178 चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात। 1.299.D1

179 होत सगुन सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात ॥ 1.299.D2
फिर गुरुदेव के अनुमति पा के राजा के अग्या से नगर के बाहर कई गो रथ पर बारात सजे लागल। जे कोई जवन काम करे खातिर जाता, ओकरे सुघर शगुन हो रहल बा।

180 सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निसाना॥ 1.314.C1
181 प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू। चले बिलोकन राम बिआहू ॥ 1.314.C3
देवता लोग सुंदर मंगल अवसर जानके नगाड़ा बजावत फूल बरसावे लगलन। उ सभ प्रेम से पुलकित होके अउरी हृदय में उत्साहित होके रामचन्द्र के बियाह देखे चललन।

182 दसरथु सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे॥ 1.319.C5
183 एहि बिधि रामु मंडपहिं आए। अरघु देइ आसन बैठाए॥ 1.319.C8
जनकपुर पहुँच के दशरथ जी आपन समाज साथे बईठलन। उनकर उ वैभव के देखके लोकपाल भी लजा गईलन। ऐह ढ़ंग से राम मण्डप में अईलन अउरी उनकरा अर्घ्य देके आसन पर बईठावल गईल।

184 सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लवाई॥ 1.322.C8
185 तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू॥ 1.323.C8
सीता के सिंगार करके सखी लोग उनका मंडप में ले अइली जा। दूनों कुल के गुरु लोग उ अवसर के रीति, व्यवहार अउरी कुलाचार पूरा कइलन जा।

186 होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं। 1.323.D1
187 बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं॥ 1.323.D2
हवन के समय आग के देवता देह धरके बहुत खुशी से आहुति लिहलन। चारों वेद ब्राह्मण के भेष धरके बियाह के विधि बतवलन।

188 कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं। नयन लाभु सब सादर लेहीं॥ 1.325.C1
189 राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं॥ 1.325.C8

वर-कन्या के सुघर भाँवर के पड़त देखके सभ आदर के साथे आपन आँख के लाभ ले रहल बाड़न। राम सीता के माँग में सिंदूर भर रहल बाड़न, ई शोभा के वर्णन केहु ढ़ंग से ना करल जा सके।

190 एहि बिधि राम बिआह उछाहू। सकइ न बरनि सहस मुख जाहू॥ 1.331.C8
191 बहुबिधि भूप सुता समुझाईं। नारिधरमु कुलरीति सिखाईं॥ 1.339.C1
ऐह ढ़ंग से राम बियाह के उत्सव होईल, जेकर वर्णन हजार मुँहवाला शेष जी भी ना कर सकेलन। राजा जनक बेटी सीता के बहुत ढ़ंग से समझवलन अउरी उनकरा मेहरारु के धर्म अउरी कुल के रीति सिखवलन।

192 सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी॥ 1.339.C3
193 चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई॥ 1.343.C7
सीता के विदाई पर उनकरा चलत घड़ी नगर के लोग बहुत बेचैन हो गईलन। मंगल के राशि शुभ शगुन होखे लागल। डंका बजाके बारात चले लागल। ओह घड़ी छोट-बड़ सभ लोग खुश रहन।

194 समउ जानि गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा॥ 1.347.C7
195 आए ब्याहि रामु घर जब तें। बसइ अनंद अवध सब तब तें॥ 1.361.C5
अयोध्या पहुँच के ठीक समय पर गुरु वशिष्ठ दशरथ के नगर में घुसे के अग्या देलन। जब से राम बियाह के घरे अईलन, अयोध्या में सभ ढ़ंग के आनंद होखे लागल।

196 सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं। 1.361.S1
197 तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु॥ 1.361.S2
राम अउरी सीता के शुभ बियाह-प्रसंग जे भी प्रेम से गावेलन अउरी सुनेलन, उ हमेशा उत्साह अउरी आनंद से रहेलन, ऐहिसे कि रामचंद्र जी के यश ही मंगल के धाम ह।

अयोध्याकाण्ड

198 श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि । 2.0.D1
199 बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥ 2.0.D2

श्री गुरु के चरण-कमल के धूर से आपन मन के आईना के साफ करके, हम श्री रघुनाथ के उ निर्मल यश के वर्णन करत बानी, जवन चार गो फल (धर्म, अर्थ, काम अउरी मोक्ष) के देवेवाला ह।

200 जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥ 2.1.C1
201 सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी ॥ 2.1.C6

जब से राम बियाह के अयोध्या अइलन, उहाँ रोज नया मंगल हो रहल बा, आनंद के बधावा बज रहल बा। नगर के सभ लोग राम के चंद्रमा जइसन मुँह के देख के सभ प्रकार से सुखी बाड़न।

202 एक समय सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥ 2.2.C1
203 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥ 2.2.C6

एक बार राजा दशरथ सभ समाज के साथे आपन राजसभा में बइठल रहन। राजा सहज सुभावे से आईना आपन हाथ में लिहलन अउरी ओकरा में आपन मुँह देखके मुकुट के सीधा कइलन।

204 श्रवन समीप भए सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥ 2.2.C7
205 नृप जुबराजु राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥ 2.2.C8

उ देखलन कि कान के पास के बाल सफेद हो रहल बा, जइसे बुढ़ापा उनकरा उपदेश दे रहल बा कि राम के युवराज बनाके आपन जीवन अउरी जन्म के लाभ काहे ना लेत बाड़अ।

206 यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ । 2.2.D1
207 प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ 2.2.D2

मन में ई विचार ले के राजा एगो शुभ दिन पुलकत शरीर अउरी खुश मन से गुरु वशिष्ठ के पास जाके आपन बात बतईलन।

208 बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु । 2.4.D1
209 सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ॥ 2.4.D2

गुरु बोललन, "हे राजा! अब रउआ देर ना करीं, तुरते सभ सामान के बेवस्था करीं। शुभ दिन अउरी सुंदर मंगल तबे होई, जब राम युवराज होईहन।"

210 मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥ 2.5.C1
211 जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहि टीका ॥ 2.5.C3

राजा खुश होके आपन महल में पहुँचलन अउरी सुमंत्र साथे बाकी सभ मंत्री के बोलाके कहलन, "यदि रउआ पंच लोग के ठीक लागे त हृदय में खुश होके राम के राजतिलक करीं जा।"

212 जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥ 2.5.C6
213 सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा ॥ 2.7.C3

मंत्री बोललन, "रउआ संसार के मंगल करेवाला काम सोचले बानी। हे नाथ! जल्दीये करीं, देर ना लगाईं।" राम के राज्याभिषेक के सुहावन समाचार सुनते अयोध्या में बड़ा धूम से बधावा बजे लागल।

214 दीख मंथरा नगरु बनावा। मंजुल मंगल बाज बधावा ॥ 2.13.C1
215 पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलकु सुनि भा उर दाहू ॥ 2.13.C2

रानी केकैयी के दाई मंथरा जब देखलस कि नगर सजल बा अउरी चारों ओरे सुंदर मंगल के बधावा बज रहल बा, उ लोगन से उत्सव के कारण पूछलस। राम के अभिषेक के बात सुनके ओकर हृदय जल उठल।

216 भरत मातु पहिं गइ बिलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि रानी॥ 2.13.C5

उदास होके उ भरत के माई कैकेयी के पास गईल। रानी हँस के पूछली, "तू उदास काहे बाड़े?"

217 सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु । 2.13.D1
218 लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥ 2.13.D2
मंथरा के चुप देखके रानी चिंता में हो गईली अउरी डेरात-डेरात पूछली, "अरी! कुछो कहत काहे नईखी? राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न अउरी महाराज दशरथ कुशल से त बाड़न?" ई सुनके कुबड़ी मंथरा के बहुत पीड़ा होइल।

219 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देइ जुबराजू ॥ 2.14.C2
220 जारै जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥ 2.16.C7
उ बोललस, "हे रानी! राम के छोड़के आज अउरी कोई के कुशल नईखे, जेकरा महाराज युवराज बना रहल बाड़न। हमार सुभाव त जलावे लायक बा, लेकिन तोहर बुरा हमरा से देखल नईखे जात।"

221 भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई॥ 2.19.C1
222 रामहि तिलक कालि जौं भयऊ । तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ॥ 2.19.C6
होनहारी के वश कैकेयी के मंथरा पर विश्वास हो गईल, फिर शपथ दिया के ओकरा से सभ बात पूछे लगली। मंथरा कहलस, "यदि कल राम के राजतिलक हो गईल त समझ लिह कि ब्रह्मा तोहरा खातिर दुख के बिया बो देले बाड़न।"

223 कैकयसुता सुनत कटु बानी। कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी॥ 2.20.C1
224 काह करौं सखि सूध सुभाऊ । दाहिन बाम न जानउँ काऊ ॥ 2.20.C7
मंथरा के कड़वा बात सुनके कैकेयी डेरा के सूख गईली, लेकिन कुछो ना कह सकली। सँभल के रानी बोललली, "हे सखी! हम का करीं? हमार त सुभावे सीधा बा, हम दायाँ-बायाँ कुछो त ना जानेनी।"

225 अपनें चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह । 2.20.D1
226 केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ॥ 2.20.D2
"अपना चलते हम आज तक कभी कोई के बुरा नईखी कईले, न जाने कवन पाप से विधाता एके साथे हमरा अईसन असहनीय दुख देहलन।"

227 दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती॥ 2.22.C5
228 सुतहि राजु रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू॥ 2.22.C6
मंथरा बोललस, "राउर दूगो वरदान राजा के पास रखल बा, ओकरा आज माँग के आपन छाती ठंढ़ा कर ल। आपन बेटा भरत खातिर राज्य अउरी राम खातिर वनवास माँग के सौत के सभ आनंद छीन ल।"

229 कोप समाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति बिगोई॥ 2.23.C7
230 कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ॥ 2.25.C1
रानी कैकेयी कोप के सभ साज सजके घर में सुत गईली। राज करत उ आपन खराब बुद्धि से नष्ट हो गईल। कैकेयी के कोपभवन जाय के बात सुनके राजा दशरथ सहम गईलन। डर के मारे उनकर पैर आगे न पड़त रहे।

231 जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी॥ 2.25.C8
232 बिहसि मागु मनभावति बाता। भूषन सजहि मनोहर गाता॥ 2.26.C7
कैकेयी के पास जाके राजा कोमल वचन बोललन, "हे प्राणप्रिय! तू काहे रुसल बाड़ू? हँसके मन के भावेवाला वस्तु माँग ल अउरी आपन सुघर अंग के गहना से सजाव।"

233 मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु। 2.27.D1
234 देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु॥ 2.27.D2
कैकेयी बोलली, "हे प्रियतम! रउआ 'माँग-माँग' कहत त जरूर बानी, लेकिन कबो लेवेनी-देवेनी कुछो ना। रउआ दूगो वरदान देवे के कहले रहीं, हमरा त ओकरा मिले में भी संदेह बा।"

235 थाती राखि न मागिहु काऊ। बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ॥ 2.28.C2
236 रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई॥ 2.28.C4
राजा बोललन, "धरोहर रखके तू कबो कुछ मँगले ही नईखू। आपन भूले के सुभाव के चलते हमरा भी याद ना रहल। रघुकुल में हमेशा से ई रीति चलल आ रहल बा कि प्राण भले काहे ना चल जाए, लेकिन दिहल वचन से पीछे ना हटल जाला।"

237 सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका ॥ 2.29.C1
238 तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी ॥ 2.29.C3
कैकेयी बोलली, "हे प्राणप्रिय! हमार मन के भावेवाला पहिला वर ई दीहीं कि भरत के राजतिलक होखे। हमार दूसर वर ई ह कि राम तपस्वी के भेष में उदासीन भाव से चौदह वर्ष जंगल में रहस।"

239 बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती ॥ 2.31.C4
यह सुनके राजा एकदम डेरा गईलन अउरी आपन छाती कड़ा करके बड़ा विनम्रता से रानी के बढ़िया लागे वाला बोली बोललन।

240 लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति। 2.31.D1
241 मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति ॥ 2.31.D2
"राम के राज्य के कवनो लोभ नईखे, उ त भरत से बहुत प्रेम करेलन। हम हीं बड़-छोट के विचार करके राजनीति के पालन करत रहीं।"

242 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम बिनु नाहीं ॥ 2.33.C2
243 मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरहँ जनि मारसि मोही ॥ 2.34.C7
"मन में बिना कवनो छल-कपट के आपन सुभाव से कहत बानी कि बिना राम के हमार जीवन संभवे नईखे। तू हमार मुड़ी माँग ले, अभी दे दीहीं, लेकिन राम के विरह में हमरा मत मार।"

244 राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू ॥ 2.37.C1
राम-राम रटते-रटते राजा दशरथ अईसे व्याकुल भईलन जईसे बिना पाँख के पक्षी बेहाल हो जाला।

245 गए सुमंत्रु तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं ॥ 2.38.C3
246 सचिउ सभीत सकइ नहिं पूँछी। बोली असुभ भरी सुभ छूँछी ॥ 2.38.C8
सबेर होखला प मंत्री सुमंत्र राजमहल में गईलन लेकिन उहाँ के भयानक स्थिति देखके उनकरा अंदर जईते डर लागत रहे। मारे डर के उनकरा से कुछो पूछल ना जात रहे। तब अशुभ से भरल अउरी शुभ से खाली कैकेयी बोललस।

247 परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु। 2.38.D1
248 रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु॥ 2.38.D2
"राजा के रात भर नींद ना आईल, ऐकर कारण त भगवाने जानस। राम-राम रटके सबेर कर देलन, लेकिन एकर कारण नईखन बतावत।"

249 आनहु रामहि बेगि बोलाई। समाचार तब पूँछेहु आई॥ 2.39.C1
250 करुनामय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ॥ 2.40.C3
"ऐहिसे तू जल्दीये जाके राम के बोला लाव, तब आके सभ समाचार पूछिह।" राम त सुभावे से कोमल अउरी करुणा से भरल बाड़न। उहँवा आके उ पहिला बेर अईसन दुःख देखलन, जवन अभी तक सुनले भी ना रहन।

251 मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करिअ जतन जेहिं होइ निवारन॥ 2.40.C5
252 देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना॥ 2.40.C7
उ कैकेयी से बोललन, "हे माई! हमरा बाबूजी के दुःख के कारण बताव ताकि ओकरा दूर करेके उपाय करल जा सके।" कैकेयी बोलली, "हे राम! राजा हमरा दूगो वरदान देले रहन। हमरा जवन अच्छा लागल, हम आज माँग लेनी।"

253 सब प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई॥ 2.41.C4
254 भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥ 2.42.C1
राम के सभ बात सुनाके रानी कैकेयी अईसन बईठल, जईसे निष्ठुरता देह धईले होखे। राम बोललन, "हमार प्राण से प्यारा भाई भरत राज पईहन, आज विधाता सभ ओरे से हमरा ओरे बाड़न।"

255 जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा॥ 2.42.C2
256 आयसु पालि जनम फलु पाई। ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई॥ 2.46.C3
"यदि अईसन काम खातिर भी हम जंगल ना गईनी त मूर्ख सभ के समाज में हमार गिनती सबसे पहिले होई। राउर अग्या के पालन करके अउरी आपन जन्म के फल पाके हम जल्दीये लौट आईम। ऐहिसे हमरा अग्या दीहीं।"

257 समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ। 2.57.D1

258 जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ ॥ 2.57.D2
जब सीता के राम के जंगल जाएके समाचार मिलल त उ अकुला उठली। आपन सास के पास जाके उनकर दूनों चरणकमल के वंदना कईली अउरी सिर झुका के बईठ गईली।

259 चलन चहत बन जीवन नाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥ 2.58.C3
260 की तनु प्रान कि केवल प्राना। बिधि करतबु कछु जाइ न जाना॥ 2.58.C4
उ सोचे लगली कि हमार प्राणनाथ आज जंगल जा रहल बाड़न, हमार कवन पुण्य कर्म से उनकर साथ संभव होई। ई शरीर अउरी प्राण दूनों साथे जईहन कि खाली प्राण? विधाता का करेवाला बाड़न कुछो पता नईखे।

261 मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं ॥ 2.61.C1
राम माई के सामने कहे में लजात बाड़न, लेकिन समय के जरुरत के देखके बोललन।

262 हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥ 2.63.C5
263 रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी। चंदबदनि दुखु कानन भारी ॥ 2.63.C8
"हे हंस जईसन चाल वाली! तू जंगल के जोग नईखू। तोहरा जाये से लोग हमरा अपयश दिहन। हृदय में अइसन विचार के तू इहाँ घरे प रहअ। हे चंद्रमा जईसन मुँह वाली! जंगल में बड़ा भारी दुःख ह।"

264 सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि। 2.63.D1
265 सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि ॥ 2.63.D2
"सुभाव से भला चाहेवाले गुरु अउरी स्वामी के सीख के जे सिर प रख के ना माने, उ मने-मने बहुते पछताला, ओकर हित के हानि जरुरे होला।"

266 मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं। पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं॥ 2.64.C7
267 कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा ॥ 2.68.C3

सीता बोललली, "हे नाथ! हम भी ऐकर मन में बार-बार विचार कईनी, पति के वियोग जईसन संसार में कवनों दुःख नईखे।" ई सुनके सूर्यवंश के मालिक कृपालु राम सीता के सोच-विचार छोड़के साथे चलेके कहलन।

268 समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए ॥ 2.70.C1
269 राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृनु तोरें ॥ 2.70.C6
जब लक्ष्मण ई समाचार पईलन, उ बड़ा व्याकुल होके उदास मुँह से राम के ओरे दौड़ पड़लन। राम भाई लक्ष्मण के हाथ जोड़ के शरीर अउरी घर सभ से नाता तोड़ के खाड़ देखलन।

270 मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा ॥ 2.71.C3
271 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू ॥ 2.71.C4
राम बोललन, "यदि हम तोहरा साथ लेके जंगल जात बानी त अयोध्या सभ ओरे से अनाथ हो जाई। गुरु, पिता, माई सभ अउरी सभ परिवार प असहनीय दुःख के भार पड़ी।"

272 उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ। 2.71.D1
273 नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ ॥ 2.71.D2
प्रेम के वश लक्ष्मण से कुछो कहत ना बनल। अकुला के राम के पैर पकड़ के बोललन, "हे नाथ! रउआ हमार मालिक हईं अउरी हम राउर नौकर हईं। रउआ हमरा छोड़ भी देब त हमार का वश बा?"

274 गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू ॥ 2.72.C4
275 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी ॥ 2.72.C6
"हे नाथ! हम सुभावे से कहत बानी कि रउआ छोड़के गुरु, माई, बाप केहु के नईखी जानत। रउआ गरीब के साथी हईं, सभकर हृदय के अंदर के बात जानेवाला हईं। स्वामी! हमार त सब कुछ खाली रउऐ हईं।"

276 मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥ 2.73.C1
लक्ष्मण के विनती सुनके राम बोललन, "हे भाई! जा, माई से विदा माँग के आव ताकि हम जल्दीये जंगल जा सकीं।"

277 पूँछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी॥ 2.73.C5
278 जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं॥ 2.74.C4
लक्ष्मण माई सुमित्रा के पास गईलन। माई उदास मुँह देखके ओकर कारण पूछली। उ सभ कथा विस्तार से सुनईलन। माई बोलली, "यदि राम अउरी सीता जंगल जा रहल बाड़न त अवध में तोहर कुछो काम नईखे।"

279 बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृपमंदिर आए॥ 2.76.C2
280 सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी॥ 2.76.C8
माई से विदा लेके लक्ष्मण राम अउरी सीता के सुघर चरण के पूजा कईलन अउरी उनकरा साथे महाराज दशरथ के महल में अईलन। सीता के साथे आपन दूनों बेटा के जंगल में जाये खातिर तैयार देखके राजा बहुते व्याकुल भईलन।

281 नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा॥ 2.77.C2
282 रामु तुरत मुनि बेषु बनाई। चले जनक जननिहि सिरु नाई॥ 2.79.C8
तब राम बड़ा प्रेम से उनकर चरण में झुकके विदा मँगलन। फिर उ मुनि के भेष बनाके अउरी माई-बाप के सिर नवाके चल देलन।

283 सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत। 2.79.D1
284 बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥ 2.79.D2
जंगल खातिर जरुरी सामान लेके राम मेहरारु अउरी भाई साथे ब्राह्मण अउरी गुरु के चरण पूजा कईलन अउरी सभ के अचेत करके जंगल ओरे चल देलन।

285 सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृंगबेरपुर पहुँचे जाई॥ 2.87.C1
तनिके समय बाद सीता अउरी मंत्री सुमंत्र के साथे दूनों भाई श्रृंगवेरपुर पहुँचलन।

286 यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥ 2.88.C1
287 नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें॥ 2.88.C5
जब निषादराज गुह के राम के आवे के समाचार मिलल, उ आपन प्रिय भाई-बंधु लोग के साथे लेके उनकरा पास आके बोललन, "हे नाथ! राउर चरणकमल के देखे से ही हम कुशल हो गईनी, अब हम भाग्यशाली लोग में गिनल जाईम।"

288 लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा॥ 2.89.C5
उ राम के रात में ठहरे के जगह देखईलन। भगवान प्रशंसा करते कहलन, "ई जगह सभ ओरे से सुघर बा।"

289 बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए॥ 2.100.C2
290 मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥ 2.100.C3
दूसर दिन राम जबरदस्ती सुमंत्र के लौटईलन अउरी खुदे गंगा के किनारे अईलन। उहँवा उ केवट से गंगा पार करे खातिर नाव मँगलन, लेकिन उ ना लाईल। उ कहे लागल, "हम राउर सभ राज जान गईल बानी।"

291 छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥ 2.100.C5
292 जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥ 2.100.C8
"राउर चरण के धूर के छुए से पत्थर के शिला औरत हो गईल, हमार नाव त लकड़ी के ह जवन पत्थर से ढ़ेर कठोर नईखे। हे भगवन! यदि रउआ ओह पार जाईल चाह तानी त हमरा पहिले आपन चरणकमल के धोवे के अग्या दीहीं।"

293 कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥ 2.101.C1
294 अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥ 2.101.C7
किरपा के सागर राम मुस्काके कहलन, "हे केवट! तू उहे करअ जेकरा से तोहर नाव ना जाए।" तब केवट बड़ा आनंदित होके खूबे प्रेम से भगवान के चरणकमल के धोवे लागल।

295 पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार। 2.101.D1
296 पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार॥ 2.101.D2
भगवान के चरण के धोके अउरी परिवार साथे उ पानी के पी के, उ आपन पितर सभ के भवसागर से पार कईलन अउरी फिर खुशी से भगवान के गंगा पार ले गईलन।

297 केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥ 2.102.C2
298 पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी॥ 2.102.C3
केवट उतर के भगवान के दण्डवत प्रणाम कईलन। भगवान के मन में संकोच भईल कि हम इनकरा कुछो उतराई ना देनी। पति के हृदय के बात जानेवाली सीता खुश मन से आपन मणि के अँगूठी उतार के भगवान के देली।

299 कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई॥ 2.102.C4
300 नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥ 2.102.C5
जब राम केवट से कहलन कि आपन उतराई ल, तब केवट व्याकुल होके उनकर चरण पकड़ लेलन अउरी बोललन, "हे नाथ! आज हमरा का कुछ ना मिलल? हमार दोष, दुःख अउरी गरीबी के आग आज बुता गईल।"

301 बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ। 2.102.D1
302 बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥ 2.102.D2
राम, सीता अउरी लक्ष्मण के बहुत आग्रह के बादो जब केवट कुछो ना लेलस त करुणा के धाम श्रीराम आपन निर्मल भक्ति के वरदान देके ओकरा विदा कईलन।

303 तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ। 2.104.D1
304 सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ॥ 2.104.D2
तब भगवान गणेश अउरी शिव जी के याद कईलन अउरी गंगा के माथा नवा के दोस्त निषादराज गुह, भाई लक्ष्मण अउरी सीता के साथे जंगल के ओरे चल देलन।

305 तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए॥ 2.106.C7
306 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥ 2.107.C5

तनकि समय बाद भगवान भारद्वाज मुनि के पास पहुँचलन। उनकरा दण्डवत करते ही मुनि राम के हृदय से लगा के बोललन, "हे भगवान! आज हमार तप, तीर्थवास, त्याग, जप, योग, वैराग्य सभ सफल हो गईल।"

307 सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने ॥ 2.108.C1
308 सो बड़ सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू ॥ 2.108.C3
मुनि के वचन सुनके राम लजा गईलन अउरी भक्ति-भाव के आनंद से अघा गईलन। उ बोललन, "हे मुनिश्वर! रउआ जेकरा आदर दीहीं उहे बड़ बा, ओकरे में सभ गुण भरल बा।"

309 राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ। 2.108.D1
310 चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ ॥ 2.108.D2
राम रात के उँहें आराम कईलन। सबेरे प्रयागराज में नहा के, खुशी से मुनि के सिर नवा के उ सीता, भाई लक्ष्मण अउरी सेवक गुह के साथे चल देलन।

311 आगें रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें ॥ 2.123.C1
312 उभय बीच सिय सोहति कैसें। ब्रह्म जीव बिच माया जैसें ॥ 2.123.C2
आगे-आगे राम बाड़न, पीछे-पीछे लक्ष्मण। तपस्वी के भेष में दूनों खूब सुघर लागत रहन। दूनों के बीच में सीता अईसन लागत रही, जईसे ब्रह्म अउरी जीव के बीच में माया।

313 देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए ॥ 2.124.C5
314 देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भए सुकृत सब सुफल हमारे ॥ 2.126.C1
सुघर जंगल, तालाब अउरी पर्वत सभ के देखते-देखते भगवान बाल्मीकि मुनि के आश्रम में पहुँचलन। भगवान कहलन, "हे मुनिराज! राउर चरण के देखला से आज हमार सभ पुण्य-कर्म सफल हो गईल।"

315 अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई ॥ 2.126.C2
316 अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ ॥ 2.126.C5

अब जहँवा राउर अग्या होखे, ऋषि-मुनि सभ के परेशानी मत होखे, अईसन मन में जान के उ जगह बताईं, जहँवा हम सीता अउरी लक्ष्मण के साथे जाके रहीं।

317 पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ। 2.127.D1
318 जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥ 2.127.D2

मुनि बोललन, "हे राम! रउआ हमरा से पूछ रहल बानी कि हम कहँवा रहीं, हम ई पूछत सकुचात बानी कि अईसन कवन जगह बा, जहँवा रउआ नईखीं! पहिले उ जगह हमरा बता दीहीं, तब हम रउआ के रहे के जगह बता सकेनी।"

319 काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥ 2.130.C1
320 जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥ 2.130.C2

"जेकरा मन में काम, क्रोध, मद, लोभ, क्षोभ, राग, द्रोह, कपट, दंभ अउरी माया नईखे-हे रघुराज! रउआ उनकरा हृदय में वास करीं।"

321 तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥ 2.130.C5

"रउआ छोड़ के जेकरा मन में दूसर कवनों ठिकाना नईखे-हे राम! रउआ उनकर मन में बसीं।"

322 कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक॥ 2.132.C2
323 चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥ 2.132.C3

फिर मुनि बोललन, "हे सूर्यकुल के नायक! समय के अनुसार रउआ के एगो सुख देवेवाला जगह बताव तानी, रउआ चित्रकूट पर्वत पर वास करीं। उहँवा रउआ खातिर सभ तरह के सुविधा बा।"

324 चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ। 2.132.D1
325 आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥ 2.132.D2

फिर उ चित्रकूट के बड़ा भारी महिमा के वर्णन कईलन। सीता साथे दूनों भाई उहाँ पहुँच के श्रेष्ठ मंदाकिनी नदी में नहईलन जा।

326 चित्रकूट रघुनंदनु छाए। समाचार सुनि सुनि मुनि आए॥ 2.134.C5
327 जब तें आइ रहे रघुनायकु। तब तें भयउ बनु मंगलदायकु॥ 2.137.C5
राम चित्रकूट में आके बस गईलन, ई समाचार सुनके ढ़ेर ऋषि-मुनि उहाँ अईलन। जब से रघुकुल के नायक उहाँ रहे लगलन, तब से उ जंगल मंगल देवेवाला हो गईल।

328 कहेउँ राम बन गवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा॥ 2.142.C4
329 अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें॥ 2.147.C5
तुलसीदास कहत बाड़न कि हम श्रीराम के सुघर वनगमन के वर्णन कईनी, अब सुमंत्र कवना ढंग से अयोध्या लौटलन उ सुनअ। अँधेरा होईला प उ अयोध्या में घुसलन अउरी रथ के दुअरिये प छोड़ के उ चुपके से राजमहल में ढूँकलन।

330 अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी॥ 2.148.C1
331 जाइ सुमंत्र दीख कस राजा। अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा॥ 2.148.C4
बड़ा दुख से सभ रानी उनकरा से राम के समाचार पूछली जा, लेकिन सुमंत्र बोली के बेचैन होईला से कवनों उत्तर ना दे पईलन। उ महाराज के अईसे बईठल देखलन जईसे कवनो बिना अमृत के चंद्रमा होखे।

332 बिलपत राउ बिकल बहु भाँती। भइ जुग सरिस सिराति न राती॥ 2.155.C3
333 हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते॥ 2.155.C7
बेचैन राजा तरह-तरह से विलाप करत रहन। उ रात एगो युग जईसन लंबा हो गईल, जईसे बीतते ना रहे। दुखी राजा कहे लगलन, "हे रघुनंदन! हे प्राणप्रिय राम! तोहरा बिना जियत अब ढ़ेर दिन बीत गईल।"

334 राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम। 2.155.D1
335 तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम॥ 2.155.D2
बेर-बेर राम-राम कहके, राम के वियोग में आपन देह छोड़के, महाराज दशरथ सुरलोक सिधार गईलन।

336 सोक बिकल सब रोवहिं रानी। रूपु सीलु बलु तेजु बखानी॥ 2.156.C3

337 बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिं पुरबासी ॥ 2.156.C5
शोक से बेचैन होके सभ रानी लोग रो-रोके महाराज के रुप, शील, बल अउरी तेज के बखान करे लगली जा। नौकर-दाई भी बेचैन होके विलाप करत रहन, अयोध्या के घरे-घरे लोग रो रहल बाड़न।

338 तेल नावँ भरि नृप तनु राखा। दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥ 2.157.C1
339 धावहु बेगि भरत पहिं जाहू। नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥ 2.157.C2
गुरु वशिष्ठ नाव में तेल भरवा के ओकरा में राजा के देह रखवईलन। फिर दूत के बोला के कहलन, "जल्दी दौड़ के भरत के पास जा, लेकिन राजा के मरे के समाचार कहीं केकरो से मत कईह।"

340 अनरथु अवध अरंभेउ जब तें। कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें ॥ 2.157.C5
341 देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥ 2.157.C6
ओने जब से अयोध्या में अनर्थ शुरू होईल, भरत के भी अपशगुन होत रहे। उनकरा रात में भयंकर सपना देखाई देत रहे अउरी दिन में ढ़ेर बुरा-बुरा विचार आवत रहे।

342 एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ। 2.157.D1
343 गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ॥ 2.157.D2
भरत ऐह तरीका से सोच-विचार करत ही रहन कि अयोध्या से दूत आ पहुँचलन। गुरु के अग्या सुन के उ तुरते श्री गणेश मना के चल पड़लन ।

344 सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ। 2.171.D1
345 हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥ 2.171.D2
अयोध्या पहुँच के उ सभ परिस्थिति देखलन। गुरु वशिष्ठ दुखी होके कहलन, "हे भरत! सुनअ होनी बड़ा बलवान ह। हानि-लाभ, जीयल-मरल, यश-अपयश सभ विधाता के हाथ में बा।"

346 भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥ 2.173.C6
347 रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा॥ 2.174.C3

"हे भरत! तोहर बाबूजी जईसन राजा ना त होईल बा, ना होई। उ तोहरा राज्य के गद्दी देले बाड़न, बाबूजी के वचन के तोहरा पालन करे के चाहीं।"

348 सौंपेहु राजु राम के आएँ। सेवा करेहु सनेह सुहाएँ॥ 2.175.C8
349 कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयसु अहई॥ 2.176.C1
"जब राम वापस लौटिहन, तब ई राज्य उनकरा सौंप के सुन्दर स्नेह से उनकर सेवा करिह।" माई कौशल्या भी धीरज रख के कहली, "हे बेटा! गुरु जी के अग्या पथ्य जईसन यानि कि हितकारी बा।"

350 मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥ 2.177.C1
351 हित हमार सियपति सेवकाई। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई॥ 2.178.C1
भरत बोललन, "गुरु जी हमरा के सुघर उपदेश देले बाड़न। प्रजा अउरी मंत्री सभ के इहे मत बा। हमार भलाई त श्रीराम के सेवा में ही बा, जेकर अवसर माई कैकेयी कुटिलता करके छीन ले ले बाड़ी।"

352 जाउँ राम पहिं आयसु देहू। एकहिं आँक मोर हित एहू॥ 2.178.C7
353 भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही॥ 2.184.C4
"ऐहिसे हमरा अग्या दीहीं कि हम श्रीराम के पास जाईं। निश्चय के साथे हमार भलाई ऐकरे में बा।" सभ भरत के बड़ाई करे लगलन अउरी कहलन कि राउर देह राम के प्रेम के साक्षात मूर्तिये ह।

354 अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह। 2.184.D1
355 सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह॥ 2.184.D2
"हे भरत! रउआ बड़ी बढ़िया बात कहनी, हमनिके जरुरे जंगल चले के चाहीं। हम सभ शोक के समुन्दर में डूबत रहीं जा, रउआ आके हमनिके बड़ा सहारा दिहनी।"

356 सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ। 2.187.D1
357 सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ॥ 2.187.D2
विश्वास के लायक सेवक लोग के नगर सौंप के अउरी सबके आदर से भेज के, राम अउरी सीता के चरण के याद करके, दूनों भाई भरत अउरी शत्रुघ्न चल देलन जा।

358 नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया। पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया॥ 2.216.C5
359 एहि बिधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं॥ 2.220.C5
ना त उनकरा पैर में जूता बा, ना ही सिर पर छाया बा। उनकर प्रेम, नियम, व्रत अउरी धर्म सच्चा बा। भरत के ऐह ढंग से रस्ता में जाते देखके मुनि अउरी सिद्ध भी उनकर सराहना करत रहन।

360 मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी॥ 2.224.C4
361 करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही॥ 2.224.C5
रस्ता में उनकरा किरात, कोल अउरी दूसर वनवासी, ब्रह्मचारी, संन्यासी अउरी विरक्त लोग मिलत रहन। भरत उनकरा प्रणाम करके पूछत बाड़न, "श्रीराम , लक्ष्मण अउरी सीता कवन जंगल में बाड़न?"

362 ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं॥ 2.224.C6
363 भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन॥ 2.239.C2
उ भगवान के सभ समाचार कहत रहन अउरी भरत के देख के आपन जन्म के फल पईलन। चलत-चलत भरत सभ मंगल के घर, भगवान के सुघर अउरी पवित्र आश्रम देखलन।

364 पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं॥ 2.240.C2
365 उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥ 2.240.C8
"हे नाथ! रक्षा करीं! रक्षा करीं!" कहके भरत धरती प एगो डंडा जईसन गिर पड़लन। भरत के आवाज सुनके राम प्रेम से अधीर हो उठलन। उनकर कपड़ा कहुँ, धनुष कहुँ, तरकस कहुँ अउरी बाण कहुँ जा गिरल।

366 बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान। 2.240.D1
367 भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥ 2.240.D2
उ जबरदस्ती भरत के उठा के हृदय से लगा लेलन। भरत-राम के ई मिलाप देखके कोई के आपन सुध ना रहल।

368 तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात। 2.259.D1

369 कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात ॥ 2.259.D2
तब गुरु वशिष्ठ कहलन, "हे भरत! सभ सकुचाहट छोड़ के किरपा के समुन्दर प्रिय भाई से आपन हृदय के बात कहअ।"

370 देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी ॥ 2.268.C7
371 तिलक समाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना ॥ 2.268.C8
भरत बोललन, "हे भगवान! हमार एगो विनती सुनि, फिर जईसन ठीक समझीं ओईसन करीं। हम राजतिलक के सामान सजाके लाईल बानी। हे भगवान! राउर मन माने त ग्रहण करके सफल करीं।"

372 नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनबास दुखारी ॥ 2.290.C4
373 उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा ॥ 2.290.C6
राम गुरु वशिष्ठ से कहलन, "हे नाथ! भरत, सभ माई अउरी अयोध्या के लोग सभ शोक से व्याकुल अउरी वनवास से दुःखी बाड़न। रउआ जईसन ठीक समझीं ओइसन करीं, ऐहिसे कि हम सबके भलाई रउआ के हीं हाथ में बा।"

374 बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू ॥ 2.296.C7
375 राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई ॥ 2.296.C8
"रउआ अउरी महाराज जनक के होते हमार कुछो कहल ठीक नईखे। रउआ दूनों जना जवन अग्या देब जा, हम शपथ लेत बानी कि ओकर पालन करम।"

376 राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत। 2.296.D1
377 सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत ॥ 2.296.D2
उनकर ई शपथ सुनके सभा साथे मुनि वशिष्ठ अउरी जनक भी सकुचा गईलन। कोई से कुछो कहत ना बनल, सब भरत के मुँह के ओरे देखे लगलन।

378 सभा सकुच बस भरत निहारी। राम बंधु धरि धीरजु भारी ॥ 2.297.C1
379 करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे। रामु राउ गुर साधु निहोरे ॥ 2.297.C5
सभा के संकोच के वश में देखके भरत बड़ा धैर्य धईलन। उ पहिले सभके प्रणाम कईलन, फिर राम, जनक, गुरु अउरी संत लोग से विनती कईलन।

380 प्रभु पितु बचन मोह बस पेली। आयउँ इहाँ समाजु सकेली॥ 2.298.C5
381 सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ। आयउँ लाइ रजायसु बाएँ॥ 2.300.C1
"हम रउआ अउरी बाबूजी के वचन के मोह के चलते टाल के अउरी सभ समाज के इकट्ठा करके इहाँ चल अईनी। हम शोक, स्नेह अउरी बाल सुभाव से अग्या के ना मान के इहाँ आ गईनी।"

382 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल मानेउ मोरा॥ 2.300.C2
383 कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी॥ 2.301.C7
"हे कृपालु! रउआ अपना ओरे से देख के सभ ओरे से हमार भलाईये मनले बानी।" किरपा के समुन्दर राम सुघर शब्द के साथे भरत के आदर से हाथ पकड़ के अपना पास बईठइलन।

384 करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात। 2.304.D1
385 गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात॥ 2.304.D2
भगवान बोललन, "हे तात! कर्म, वचन अउरी मन से निर्मल तोहरा जईसन खाली तुहीं बाड़अ। गुरुजन के समाज में, सभ के सामने अउरी ई खराब घड़ी में, आपन छोट भाई के गुण के वर्णन हम कईसे करीं?"

386 तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥ 2.305.C3
387 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू॥ 2.306.C3
"हे भरत! तोहरा सबके कर्तव्य के, हमार अउरी आपन परम हित करेवाला धर्म के पता बा। तू भी अग्या के पालन करअ, हमरा से भी कराव, अउरी सूर्यकुल के पालक बनअ।"

388 सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी॥ 2.306.C5
389 जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा॥ 2.306.C7
"ई सोचके अउरी भारी संकट सहके भी प्रजा अउरी परिवार के सुखी करअ। हे तात! तू कोमल बाड़अ ई जानत होखला के बावजूद भी हम कठोर वियोग के बात

कह रहल बानी। खराब घड़ी में अईसन होखल स्वाभाविक बा, हम कुछो अनुचित नईखीं कह रहल।"

390 होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए। ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए॥ 2.306.C8
391 पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई। लोक बेद भल भूप भलाई॥ 2.315.C4
"खराब घड़ी में अच्छा भाई ही सहायक होखेलन, वज्र के आघात आपन हाथ से ही रोकल जाला। हम दूनों भाई आपन बाबूजी के अग्या के पालन करेके, ऐहिसे कि राजा के भलाई से ही लोक अउरी वेद में भला होखेला।"

392 अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई॥ 2.315.C6
393 बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥ 2.316.C2
"अईसन विचार करके सब सोच छोड़ द अउरी हमार वनवास के समय तक अयोध्या के पालन करअ।" ऐह प्रकार उ भाई के बहुत ढ़ंग से समझईलन। लेकिन बिना कवनों सहारा पईले भरत के मन के ना त संतोष भईल, न शांति मिलल।

394 प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं॥ 2.316.C4
395 भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहे तें॥ 2.316.C8
भगवान किरपा करके भरत के आपन खड़ाऊँ देलन, जेकरा भरत आदर से आपन सिर पर रख लेलन। ई सहारा से उ अईसे खुश भईलन जईसे साक्षात सीतारामे मिल गईल होखस।

396 लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि। 2.318.D1
397 चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि॥ 2.318.D2
लक्ष्मण के भेंट के अउरी उनकरा प्रणाम करके, सीता के चरण के धूर माथा पर रखके, सभ मंगल के जड़ आशीर्वाद सुनके उ प्रेम से चल पड़लन।

398 हृदयँ रामु सिय लखन समेता। चले जाहिं सब लोग अचेता॥ 2.320.C7
399 प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं। सब चुपचाप चले मग जाहीं॥ 2.322.C2

सब कोई हृदय में सीता, राम अउरी लक्ष्मण के रख के बड़ा बेसुध जईसन अवस्था में अयोध्या जा रहल बाड़न। भगवान के गुण के मने-मने गान करते सब लोग चुपचाप रस्ता प चलल जा रहल बाड़न।

400 सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे॥ 2.323.C1
401 नंदिगावँ करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा॥ 2.324.C2

अयोध्या पहुँच के भरत मंत्री अउरी सेवक सभ के समझईलन। उ सभ सीख पा के आपन-आपन काम में लाग गईलन। धर्म के धुरी के धारण करे में धीरज वाले भरत नन्दिग्राम में पतई के कुटिया बना के वास करे लगलन।

402 नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति। 2.325.D1
403 मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति॥ 2.325.D2

उ रोज-रोज भगवान के खड़ाऊँ के पूजा करत रहन, उनकरा हृदय में प्रेम ना समात रहे। खड़ाऊँ से अग्या माँग-माँग के उ बहुत ढ़ंग से राज्य के कामकाज करत रहन।

404 भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं। 2.326.S1
405 सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति॥ 2.326.S2

तुलसीदास कहत बाड़न जवन लोग भरत के चरित्र के नियम के साथे आदर से सुनिहन, उनकरा सीताराम के चरण में जरुरे प्रेम होई अउरी उ संसार के विषय से मुक्त होईहन।

अरण्यकाण्ड

406 रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरित किए श्रुति सुधा समाना॥ 3.3.C1
चित्रकूट में रहके रघुनाथ जी बहुत ढ़ंग के चरित्र कईलन, जवन सुने में अमृत के जईसन प्रिय बा।

407 बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहिं मोहि जाना॥ 3.3.C2
408 सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले द्वौ भाई॥ 3.3.C3
तनकि समय बाद राम मन में अईसन अनुमान कईलन कि सब कोई हमरा जान गईल बा, अब ईहाँ बड़ा भीड़ हो जाई। ऐहिसे सब ऋषि-मुनि से विदा लेके दूनों भाई सीता के साथे उहाँ से चल दिहलन।

409 अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ। सुनत महामुनि हरषित भयऊ॥ 3.3.C4
410 अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता॥ 3.5.C1
जब भगवान अत्रि ऋषि के आश्रम में पहुँचलन, समाचार सुनके महामुनि बड़ा खुश भईलन। सुशील अउरी विनम्र सीता ऋषि-मेहरारु अनुसूया के पैर छूके उनकरा से मिलली।

411 दिब्य बसन भूषन पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए॥ 3.5.C3
412 कह रिषिबधू सरस मृदु बानी। नारिधर्म कछु ब्याज बखानी॥ 3.5.C4
अनसूया सीता के दिव्य कपड़ा अउरी गहना पहनवली, जवन रोज नया स्वच्छ अउरी सुहावन बनल रहे। फिर ऋषि-मेहरारु आपन कोमल वचन से औरत के कुछ धर्म बखान के कहली।

413 सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं। 3.5b.S1
414 तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥ 3.5b.S2
"हे सीता! सुनअ, तोहार त नामे लेके औरत सभ पतिव्रत धर्म करिहन जा। तोहरा त राम प्राण के जईसन प्रिय बाड़न, हम ई पतिव्रत धर्म के कथा संसार के खाली भलाई खातिर कहले बानी।"

415 मुनि पद कमल नाइ करि सीसा। चले बनहि सुर नर मुनि ईसा॥ 3.7.C1
मुनि अत्रि के चरण में सिर नवाके, देवता, मनुष्य अउरी ऋषि-मुनि लोग के मालिक श्रीराम जंगल के चल देलन।

416 मिला असुर बिराध मग जाता। आवतहीं रघुबीर निपाता॥ 3.7.C6
417 पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे॥ 3.9.C5
रस्ता में विराध नामके राक्षस मिलल, सामने अईते राम ओकरा मुआ देलन। फिर उ जंगल में आगे चललन। ढ़ेर सारे बड़े-बड़े मुनि उनकरा साथे हो लेलन।

418 अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया॥ 3.9.C6
419 निसिचर निकर सकल मुनि खाए। मुनि रघुबीर नयन जल छाए॥ 3.9.C8
जब राम आगे हड्डी के एगो ढ़ेर देखलन, बड़ी दया से मुनि लोग से ओकर कारण पूछलन। ई जानके कि राक्षस सभ के मुनि लोग के मारके खईला से ई ढ़ेर बनल बा, राम के अँखियाँ में करुणा के आँसू भर आईल।

420 निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह। 3.9.D1
421 सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह॥ 3.9.D2
आपन बाँह उठाके भगवान प्रतिज्ञा कईलन कि हम धरती से सभ राक्षस के नाश कर देम। फिर सभ ऋषि-मुनि के आश्रम में जा-जाके उनलोग के सुख देलन।

422 मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना॥ 3.10.C1
423 मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक॥ 3.10.C2
महर्षि अगस्त्य के सुतीक्ष्ण नाम के एगो ज्ञानी शिष्य रहन, जेकर भगवान में बहुत प्रेम रहे। मन, कर्म अउरी वाणी से उ राम के चरण के सेवक रहन। उ सपना में भी कवनों दूसर देवता पर भरोसा ना करत रहन।

424 कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी॥ 3.11.C1
425 जो कोसलपति राजिव नयना। करउ सो राम हृदय मम अयना॥ 3.11.C20
सुतीक्ष्ण बोललन, "हे भगवान! हमार विनती सुनीं। हम कवना विधि राउर स्तुति करीं? हे कोसलपति! हे कमलनयन! रउआ हमार हृदय में आपन घर बनाईं।"

426 अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम। 3.11.D1
427 मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम॥ 3.11.D2
"हे भगवान! छोट भाई लक्ष्मण अउरी माई सीता के साथे धनुष-बाण धारण करके, हमार हृदय लेखा आसमान में चंद्रमा जईसन स्थिर होके हमेशा वास करीं।"

428 एवमस्तु करि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा॥ 3.12.C1
"अईसने होखे" कहके लक्ष्मीपति राम खुश होके अगस्त्य ऋषि के पास चल देलन।

429 अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥ 3.13.C3
430 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी॥ 3.13.C4
उहाँ पहुँच के राम बोललन, "हे भगवन! कृपया हमरा सलाह दीहीं, हम कवन विधि ऋषि-मुनि सभ के द्रोही राक्षस सभ के नाश करीं?" भगवान के वाणी सुनके मुनि मुस्काके बोललन, "हे नाथ! रउआ का सोच के हमरे से ई प्रश्न कईले बानी?"

431 ते तुम्ह सकल लोकपति साईं। पूँछेहु मोहि मनुज की नाईं॥ 3.13.C9
432 संतत दासन्ह देहु बड़ाई। तातें मोहि पूँछेहु रघुराई॥ 3.13.C14
"रउआ त सभ लोकपाल के मालिक हईं, लेकिन हमरा से एगो साधारण आदमी जईसन पूछ रहल बानी। रउआ हमेशा आपन सेवक के बड़ाई देवेनी, ऐहिसे हे राम! रउआ हमरा से ई पूछले बानी।"

433 है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ॥ 3.13.C15
434 दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिबर कर हरहू॥ 3.13.C16
"हे भगवन! ई दण्डकवन में एगो मन के हरे वाला अउरी पवित्र जगह बा, जेकर नाम पंचवटी ह। ई जंगल पर श्रेष्ठ मुनि गौतम ऋषि के भयंकर शाप लागल बा। रउआ उ शाप के हर के ई जंगल के पवित्र करीं।"

435 बास करहु तहँ रघुकुल राया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया॥ 3.13.C17
436 चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी निअराई॥ 3.13.C18
"हे रघुकुल के मालिक! रउआ उहाँ रहके सभ ऋषि-मुनि पर दया करीं।" मुनि के अग्या लेके राम उहाँ से चल पड़लन अउरी जल्दीये पंचवटी के पास पहुँच गईलन।

437 गीधराज सैं भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ। 3.13.D1
438 गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ॥ 3.13.D2
उहाँ गीधराज जटायु से भेंट होईल। उनकरा साथे बहुते तरीका से प्रेम बढ़ा के उ गोदावरी नदी के पास पतई के कुटिया बना के रहे लगलन।

439 सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी॥ 3.17.C3
440 पंचबटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा॥ 3.17.C4
शूपर्णखा नाम के रावण के एगो बहिन रहे, जवन नागिन जईसन भयंकर अउरी दुष्ट हृदयवाली रहे। एक बार उ पंचवटी गईल अउरी दूनों भाई के देखके कामवासना से विचलित हो गईल।

441 रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई॥ 3.17.C7
442 तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। यह सँजोग बिधि रचा बिचारी॥ 3.17.C8
माया से आकर्षक भेष धरके उ राम के पास गईल अउरी मुस्का के बोललस, "ना त तोहरा जईसन कवनों सुघर आदमी बा, ना हमरा जईसन कवनों सुघर औरत। लगता विधाता हमनिके जोड़ी बड़ी सोच-समझ के बनईले बाड़न।"

443 सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ कुआर मोर लघु भ्राता॥ 3.17.C11
सीता के ओरे देखके भगवान कहलन, "हम त बियाहल बानी, लेकिन हमार छोट भाई कुमार (जंगल में अकेले) बा।"

444 गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी॥ 3.17.C12
445 सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा॥ 3.17.C13
तब उ लक्ष्मण के पास गईल। ओकरा दुश्मन रावण के बहिन जानके, लक्ष्मण भगवान के ओरे देखके कोमल वचन बोललन, "हे सुंदरी! हम त उनकर नौकर हईं, उनकरा अधीन बानी, हमरा से बियाह करके तोहरा सुख ना मिली।"

446 पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई॥ 3.17.C17
447 लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई॥ 3.17.C18

लौट के उ राम के पास गईल, राम फिर ओकरा लक्ष्मण के पास भेज देलन। लक्ष्मण बोललन, "तोरा उहे बियाही जे लाज के तिनका जईसन तोड़ के छोड़ देले होई।"

448 तब खिसिआनि राम पहिं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई॥ 3.17.C19
449 सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई॥ 3.17.C20
तब उ खिसिया के राम के पास गईल अउरी उहाँ उ आपन असली भयंकर रूप देखवलस। सीता के डेराईल देख के राम भाई लक्ष्मण के संकेत देलन।

450 लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि। 3.17.D1
451 ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि॥ 3.17.D2
लक्ष्मण बड़ा फुर्ती से ओकर नाक-कान काट लेलन। जईसे ओकरा माध्यम से रावण के चुनौती भेजत होखस।

452 नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा॥ 3.18.C1
453 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता। धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता॥ 3.18.C2
बिना नाक-कान के शूपर्णखा बहुते विकराल लागे लागल। ओकरा देह से खून अइसे बहत रहे जईसे कवनों करिया पर्वत से गेरू के धारा बहत होखे। रोवत-रोवत उ खर-दूषण के पास गईल अउरी बोललस, "भईया लोग! तोहर वीरता अउरी बल के धिक्कार बा।"

454 तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई॥ 3.18.C3
455 धूरि पूरि नभ मंडल रहा। राम बोलाइ अनुज सन कहा॥ 3.18.C10
उनकरा पूछला पर शूपर्णखा सब बात समझा के बतवलस। सुनके खर-दूषण सेना लेके चल देलन। सभ आसमान धूर से भर गईल। तब राम भाई लक्ष्मण से कहलन,

456 लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर। आवा निसिचर कटकु भयंकर॥ 3.18.C11
457 देखि राम रिपुदल चलि आवा। बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा॥ 3.18.C13
"राक्षस सभ के भयंकर सेना आ रहल बा, तू सीता के लेके पर्वत के खोह में चल जा।" जब दुश्मन के सेना पास आ गईल, राम हँसके आपन कठोर धनुष चढ़ा के राक्षस सभ से युद्ध करे लगलन।

458 राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान। 3.20a.D1
459 करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान॥ 3.20a.D2
राम-राम कहके राक्षस देह छोड़ देत रहन अउरी मोक्ष पावत रहन। ऐह ढ़ंग से कृपानिधान राम उपाय करके क्षणे भल में दुश्मन सभ के मार गिरवलन।

460 धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा॥ 3.21.C5
461 बोली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी॥ 3.21.C6
खर-दूषण के विनाश देखके शूपर्णखा लंका में जाके रावण के उकसईलस। उ बहुत गुस्सा के बोललस, "तू देश अउरी खजाना के सुधिए भुला देले बाड़अ।"

462 कह लंकेस कहसि निज बाता। केइँ तव नासा कान निपाता॥ 3.22.C2
463 अवध नृपति दसरथ के जाए। पुरुष सिंघ बन खेलन आए॥ 3.22.C3
लंकापति रावण पूछलस, "तू आपन बात कह, तोर नाक-कान के काट देलस?" उ बोललस, "अयोध्या के राजा दशरथ के बेटा, जवन आदमी सभ में सिंह जईसन बाड़न, दंडकवन में शिकार खेले आईल बाड़न।"

464 सोभा धाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्यामा॥ 3.22.C8
465 तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा॥ 3.22.C10
"उ शोभा के धाम बाड़न, उनकर नाम राम ह। उनकरा साथे एगो सुघर जवान औरत भी बिया। उनकर छोट भाई लक्ष्मण हमार नाक-कान काट देलन। हम तोहर बहिन हईं, ई सुनके उ हमार हँसी करे लगलन।"

466 सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति। 3.22.D1
467 गयउ भवन अति सोचबस नीद परइ नहिं राति॥ 3.22.D2
शूपर्णखा के समझा के अउरी आपन बल के बखान के रावण आपन महल में चल गईल। खूबे चिंता के मारे ओकरा भर रात नींद ना आईल।

468 सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा॥ 3.23.C3
469 तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ॥ 3.23.C4

उ सोचे लागल कि देवता सभ के आनंद देवेवाला अउरी धरती के भार दूर करेवाला भगवान यदि अवतार ले ले बाड़न त हम उनकरा से जरुरे दुश्मनी करब अउरी उनकर बाण से प्राण छोड़के भवसागर से पार हो जाईम।

470 इहाँ राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥ 3.23.C8
शिव जी कहत बाड़न, "हे पार्वती! इहाँ श्री रामचन्द्र एगो योजना बनईलन, उ सुघर कथा के सुनअ।"

471 सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करबि ललित नरलीला ॥ 3.24.C1
472 तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर नासा ॥ 3.24.C2
एक दिन राम सीता से बोललन, "हे प्रिये! सुघर पतिव्रत करेवाली सुशीला, हम अब कुछ सुघर नर लीला करब। जब तक हम राक्षस सभ के नाश करीं, तू आग में वास करअ।"

473 जबहिं राम सब कहा बखानी। प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी ॥ 3.24.C3
474 निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता। तैसइ सील रूप सुबिनीता ॥ 3.24.C4
ऐह ढ़ंग से जब राम सभ योजना समझईलन, सीता भगवान के चरण के हृदय में रख के आग में समा गईली। उ आपन छाया उहाँ छोड़ देली, जवन शील, रुप अउरी विनय में उनकरा जईसने रही।

475 दसमुख गयउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा ॥ 3.24.C6
476 होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी ॥ 3.25.C2
फिर सभ योजना बनाके, स्वार्थ से भरल नीच रावण आपन मामा मारीच के पास गईल अउरी सिर नवाके बोललस, "तू छल करेवाला नकली हिरण बनअ जेकरा से हम राजबहू सीता के हर सकीं।"

477 तेहि बन निकट दसानन गयऊ। तब मारीच कपटमृग भयऊ ॥ 3.27.C1
478 सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सुमनोहर बेषा ॥ 3.27.C3

तब रावण उ जंगल के नजदीक गईल जहँवा राम के कुटिया रहे। मारीच कपट से सोना के हिरन बन गईल। सीता खूबे सुघर हिरन के देखली, जेकर अंग-अंग मन के हरेवाला रहे।

479 सत्यसंध प्रभु बधि करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही॥ 3.27.C5
480 प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी॥ 3.27.C10
उ राम से बोललली, "हे सत्यप्रतिज्ञ भगवन! ई हिरन के मारके ओकर चमड़ा ला दीहीं।" तब राम हिरन के पीछे दउड़लन। भगवान के देखके हिरन आगे-आगे भाग चलल। राम भी धनुष पर बाण चढ़ा के ओकरा पीछे-पीछे दउड़लन।

481 प्रगटत दुरत करत छल भूरी। एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी॥ 3.27.C13
482 तब तकि राम कठिन सर मारा। धरनि परेउ करि घोर पुकारा॥ 3.27.C14
ऐह ढ़ंग से प्रकट होवत, छिपत अउरी दूसर छल करत उ हिरण भगवान के बहुत दूर ले गईल। तब राम निशाना साध के ओकरा कठोर बाण मरलन। बाण के लगते उ जोर से 'हे लक्ष्मण, हे लक्ष्मण' के घोर पुकार करते धरती पर गिर पड़ल।

483 बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ। 3.27.D1
484 निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ॥ 3.27.D2
देवता लोग भगवान के गुण के गाथा गवते-गवते ढ़ेर सारा फूल बरसावे लगलन। गरीब सभ के भाई श्रीराम उ मारीच जईसन राक्षस के भी आपन परम धाम दे देलन।

485 आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥ 3.28.C2
486 जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥ 3.28.C3
ओने सीता जब दुःख से भरल आवाज सुनली, त डेराके लक्ष्मण से कहली, "तू जल्दी जा, तोहर भाई बड़ संकट में बाड़न।" लक्ष्मण हँसके कहलन, "हे माई! सुनी।"

487 भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥ 3.28.C4
488 मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥ 3.28.C5

"जिनकर भौंह के खाली ईशारा से ही सभ सृष्टि के नाश हो जाला, ओकरा पर का सपना में भी कवनों संकट आ सकेला?" तब सीता हृदय में चुभेवाला कुछो मार्मिक बात कहली, जेकरा से भगवान के प्रेरणा से लक्ष्मण के मन विचलित हो गईल।

489 बन दिसि देव सौंपि सब काहू। चले जहाँ रावन ससि राहू॥ 3.28.C6
490 सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती कें बेषा॥ 3.28.C7

सीता के जंगल अउरी सभ दिशा के देवता लोग के सौंप के लक्ष्मण उहाँ चललन जहँवा रावण जईसन चंद्रमा के निगले वाला राहु के जईसन राम रहन। ऐह बीच सून आश्रम देखके रावण संन्यासी के भेष में सीता के पास आईल।

491 नाना बिधि करि कथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई॥ 3.28.C11
492 कह सीता सुनु जती गोसाईं। बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं॥ 3.28.C12

उ तरह-तरह के सुंदर कहानी कहके सीता के राजनीति, भय, अउरी प्रेम देखवलस। सीता बोललली, "हे यति गोसाईं! सुन, तू दुष्ट के जईसन बोल ताड़े।"

493 क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ। 3.28.D1
494 चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ॥ 3.28.D2

तब गुस्सा होके रावण सीता के आपन रथ में बईठा लेलस अउरी आकाश के रस्ता बड़ा उतावला होके चलल, लेकिन डर के मारे ओकरा से रथ हाँकल ना जात रहे।

495 बिबिध बिलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही॥ 3.29.C4

सीता विलाप करत बोललली कि हमरा पर भगवान के किरपा त बहुत बा, लेकिन उ स्नेही अब दूर रह गईलन।

496 गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी॥ 3.29.C7
497 धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें॥ 3.29.C10

गीध के राजा जटायु उनकर दुःख से भरल आवाज सुनके पहचान लेलन कि ई त रघुकुल तिलक राम के मेहरारु हई। तब गुस्सा होके उ पक्षी के राजा ओईसहीं दउड़ल जईसे पहाड़ के ओरे बजर छूटल होखे।

498 तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना॥ 3.29.C21
499 काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी॥ 3.29.C22
तब खिसियाईल रावण खीस में आके आपन बड़ा भयंकर तलवार चंद्रहास से उनकर पंख काट देलस। भगवान राम के अद्भुत लीला के याद करके जटायु धरती पर गिर पड़लन।

500 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी॥ 3.29.C23
सीता के फिर से रथ पर चढ़ा के रावण उहाँ से बड़ा तेजी से चल देलस, ऐहिसेकि ओकरा मन में अभियो बहुते डर रहे।

501 गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी॥ 3.29.C25
502 एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ॥ 3.29.C26
रस्ता में एगो पहाड़ पर बईठल बंदर सभ के देखके सीता भगवान के नाम लेके नीचे कपड़ा डाल देली। ऐह ढ़ंग से रावण सीता के हर ले गईल अउरी उनकरा के अशोक वन में जाके रखलस।

503 जेहि बिधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम। 3.29b.D1
504 सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम॥ 3.29b.D2
जवन रुप में भगवान राम कपटी हिरन के साथे दउड़ल रहन, ओहि रुप के हृदय में रख के सीता उहाँ राम नाम रटत रहत रही।

505 आश्रम देखि जानकी हीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना॥ 3.30.C6
506 लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाँती॥ 3.30.C8
ओने दूनों भाई जब आश्रम लउटलन, सीता के उहाँ ना देखके, राम एगो साधारण आदमी के जईसन बहुत बेचैन हो गईलन। लक्ष्मण उनकरा बहुत ढ़ंग से समझईलन, लेकिन उ लता अउरी पेड़ तक से सीता के बारे में पूछत आगे चललन।

507 आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥ 3.30.C18
508 तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा॥ 3.31.C1

आगे उ गीधपति जटायु के पड़ल देखलन, जवन राम के उ चरण के याद करत रहे, जेकरा में उनकर ईश्वरीय चिह्न रहे। जटायु धीरज से उनकरा से कहलन, "हे जन्म-मृत्यु के डर के नाश करेवाले भगवान राम सुनी।"

509 नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही॥ 3.31.C2
510 दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपानिधाना॥ 3.31.C4
"हमार ई दशा दुष्ट रावण कईल ह, जवन सीता जी के हर के ले गईल ह। हे कृपानिधान! हम रउआ के देखे खातिर ही अब तक प्राण रोकले रहीं,अब ई चलल चाह ताड़न।"

511 जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई॥ 3.31.C8
512 परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥ 3.31.C9
आँखियाँ में जल भरके रघुनाथ कहे लगलन, "हे तात! रउआ आपन कर्म से बढ़िया गति पईले बानी। जेकरा मन में दूसरा के हित रहेला, संसार में ओकरा खातिर कुछो मुश्किल नईखे।"

513 तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा॥ 3.31.C10
514 ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा॥ 3.34.C5
"हे तात! देह छोड़ के रउआ हमार धाम जाईं। हम रउआ के का दीहीं, रउआ त खुदे पूरनकाम बानी।" उनकरा बढ़िया गति देके उदार राम शबरी के आश्रम में जा पहुँचलन।

515 कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि। 3.34.D1
516 प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥ 3.34.D2
शबरी रस से भरल स्वादिष्ट कंद, मूल अउरी फल लाके राम के देली। बेर-बेर बड़ाई करके भगवान ओकरा बड़ा प्रेम से खईलन।

517 केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥ 3.35.C2
शबरी बोललली, "हम कवना ढ़ंग से राउर स्तुति करीं? हम नीच जाति के अउरी बहुत छोट बुद्धि के बानी।"

518 कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥ 3.35.C4
519 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥ 3.35.C7
रघुनाथ बोललन, "हे भामिनी! हमार बात ध्यान से सुनअ। हम त खाली एगो भक्ति के नाता मानेनी। हम तोहरा अब नवधा भक्ति के ज्ञान देत बानी। सावधान होके सुनअ अउरी आपन मन में राखअ।"

520 नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥ 3.36.C6
521 सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥ 3.36.C7
"ई नौ भक्ति में से जेकरा भीरी एको गो होला, उ जड़-चेतन, औरत-आदमी, कोई होखे, हे भामिनी! हमरा बहुते प्रिय ह। तू त सभ ढ़ंग के भक्ति से भरल बाड़ू।"

522 जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबरगामिनी॥ 3.36.C10
523 पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥ 3.36.C11
"हे भामिनी! अब यदि तू हाथी के चाल वाली सीता के बारे में कुछो जान ताड़ू त बतावा।" शबरी बोललली, "हे रघुवीर! रउआ पम्पा नाम के तालाब पास जाईं। उहाँ राउर दोस्ती बंदर सभ के राजा सुग्रीव से होई, उ सभ जानकारी दिहन।"

524 जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि। 3.36.D1
525 महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ 3.36.D2
तुलसीदास कह ताड़न जवन नीच जाति अउरी पाप के जन्मभूमि रही, अईसन औरत के भी जे मुक्त कर देलन, हे महामंद मन! अईसन भगवान के भूला के तू सुख चाह ताड़।

किष्किन्धाकाण्ड

526 आगें चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्बत निअराया॥ 4.1.C1
रघुनाथ जी फिर आगे चललन अउरी ऋष्यमूक पर्वत के पास पहुँचलन।

527 तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा॥ 4.1.C2
528 अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना॥ 4.1.C3
उहाँ बंदर सभ के राजा सुग्रीव आपन मंत्री सभ के साथे रहत रहन। जेकर तुलना ना हो सके अइसन राम अउरी लक्ष्मण के आवत देखके सुग्रीव डेरा गईलन अउरी बोललन, "हे हनुमान! ई दूनों आदमी रुप अउरी बल के भण्डार बाड़न।"

529 धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई॥ 4.1.C4
"तू ब्रह्मचारी के रुप में जाके देखअ अउरी उनकर मन के भाव के समझ के हमरा सूचित करअ।"

530 बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ॥ 4.1.C6
531 को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा॥ 4.1.C7
हनुमान ब्राह्मण के भेष में राम के पास गईलन अउरी सिर झुका के पूछे लगलन, "हे वीर! साँवर अउरी गोर देहवाला अउरी क्षत्रिय के भेष में जंगल में घूमेवाला, रउआ के हईं?"

532 जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार। 4.1.D1
533 की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार॥ 4.1.D2
"का रउआ संसार के कारण अउरी सभ लोक के मालिक खुदे भगवान हईं, जे लोगन के भवसागर पार उतारे अउरी धरती के भार कम करे खातिर आदमी के अवतार ले ले बानी?"

534 कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु बचन मानि बन आए॥ 4.2.C1
राम बोललन, "हम कोसल देश के राजा दशरथ के बेटा हईं अउरी उनकर वचन मान के इहाँ जंगल में आइल बानी।"

535 नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई॥ 4.2.C2
536 इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही॥ 4.2.C3
"हम दूगो भाई हईं, हमार नाम राम अउरी लक्ष्मण ह। हमरा साथे सुघर सुकुमार हमार मेहरारु रही, जिनकर नाम वैदेही ह। राक्षस उनकर इहाँ अपहरण कर ले ले बाड़न। हे विप्र! हम उनकरे के ढूँढ़त फिर रहल बानी।"

537 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना॥ 4.2.C5
538 पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही॥ 4.2.C7
आपन भगवान के पहचान के हनुमान उनकर चरण में गिर गईलन। शिव जी कहत बाड़न, "हे पार्वती! उ सुख के वर्णन ना कईल जा सके।" फिर धीरज रखके हनुमान उनकर स्तुति कईलन। आपन नाथ के पहचान के उनकर हृदय में बहुते खुशी भईल।

539 मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं॥ 4.2.C8
540 नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई॥ 4.4.C2
हनुमान बोललन, "हे मालिक! हम रउआ के पहचान ना सकनी, ऐहिसे हमार पूछल त उचित रहे, लेकिन रउआ एगो साधारण आदमी जईसन कईसे पूछ रहल बानी? हे नाथ! ई पहाड़ पर बंदर सभ के मालिक सुग्रीव रहेलन,जवन राउर दास हवन।"

541 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे। दीन जानि तेहि अभय करीजे॥ 4.4.C3
542 जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा। अतिसय जन्म धन्य करि लेखा॥ 4.4.C6
"रउआ उनकरा से दोस्ती करीं अउरी गरीब जानके उनकरा निर्भय कर दीहीं।" मिलला पर जब सुग्रीव राम के देखलन त उ आपन जन्म के बहुत धन्य मनलन।

543 तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ। 4.4.D1
544 पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ॥ 4.4.D2

हनुमान दूनों ओरे के सभ कथा सुनईलन अउरी आग के साक्षी में उनकरा में गहरा दोस्ती करवा देलन।

545 नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई॥ 4.6.C1
546 रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी॥ 4.6.C11
सुग्रीव बोललन, "हे नाथ! हम अउरी बालि दूगो भाई हईं। हम दूनों में अईसन प्रेम रहे जेकर वर्णन ना कईल जा सके। एगो गलतफहमी के चलते उहे भाई दुश्मन के जईसन हमरा बहुत मरलस। हमार सब कुछ इहाँ तक कि हमार मेहरारु भी छिन लेलस।"

547 ताकें भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला॥ 4.6.C12
548 लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप सायक गहि हाथा॥ 4.7.C25
"हे कृपालु रघुवीर! हम ओकरा डर से सभ लोक में बेहाल होके भागत फिर रहल बानी।" सुग्रीव के बात सुनके अउरी ओकरा साथे लेके, राम हाथ में धनुष-बाण लेके चल पड़लन।

549 सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारि समुझावा॥ 4.7.C27
550 भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महाधुनि गर्जा॥ 4.8.C2
सुग्रीव के ललकार सुनिए के बालि खिसिया के दउड़ल। ओकर मेहरारु तारा पैर पकड़ के युद्ध ना करे खातिर ओकरा बहुत समझईली लेकिन उ एगो ना मानल। बालि अउरी सुग्रीव दूनों भीड़ गईलन। बालि सुग्रीव के खूबे धमकईलस अउरी घूँसा मार के बड़ा जोर से गर्जल।

551 तब सुग्रीव बिकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा॥ 4.8.C3
552 मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला॥ 4.8.C4
घूँसा के चोट सुग्रीव के वज्र जईसन लागल अउरी उ व्याकुल होके भागल। राम के पास आके सुग्रीव कहलन, "हे कृपालु रघुवीर! हम रउआ के पहिलहीं कहले रहीं कि ई भाई ना, हमार काल हा।"

553 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ॥ 4.8.C5

554 मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ॥ 4.8.C7
राम उनकरा संतावना देके बोललन, "तू दूनों भाई एके जईसन लागे लजा, ईहे दुविधा के चलते हम बालि के ना मरनी।" फिर सुग्रीव के गला में फूल के माला डाल के, ओकर आत्मविश्वास बढ़ाके, ओकरा फिर से लड़े खातिर भेजलन।

555 बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि । 4.8.D1
556 मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥ 4.8.D2
सुग्रीव बहुते छल-बल कईलन, लेकिन अंत में उ डर के मारे हृदय से हारे लागल। तब राम तान के बालि के हृदय में एगो बाण मार के ओकरा धरती पर गिरा देलन।

557 धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं । मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ॥ 4.9.C5
558 मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥ 4.9.C6
बालि बोललस, "हे भगवन! रउआ धर्म के रक्षा करे खातिर अवतार ले ले बानी, फिर हमरा बहेलिया जईसन छिप के काहे मरनी? हम दुश्मन अउरी सुग्रीव प्यारा? हे नाथ! हमार कवन अवगुण के चलते रउआ हमरा मरनी हईं?"

559 अनुज बधू भगिनी सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥ 4.9.C7
560 इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बधें कछु पाप न होई ॥ 4.9.C8
राम बोललन, "अरे शठ! छोट भाई के मेहरारु, बहिन, बेटा के मेहरारु अउरी आपन बेटी, ई चारों एके जईसन होखे ली जा। इनकरा यदि कोई खराब नजर से देखेला त ओकरा मारे में कवनों पाप ना होला।"

561 सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि । 4.9.D1
562 प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ 4.9.D2
बालि बोललस, "हे राम! मालिक के सामने हमार कवनों चतुराई ना चली। अंतिम समय में राउर शरण पा के भी का हम पापिये रहनी?"

563 राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग । 4.10.D1
564 सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ 4.10.D2

श्रीराम के चरण में गहरा प्रेम रख के बालि आपन देह ओइसे ही छोड़ देलस, जईसे हाथी के आपन गला से फूल के माला गिरे के आभास तक ना होला।

565 लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज। 4.11.D1
566 राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज ॥ 4.11.D2

राम के अग्या होईला पर लक्ष्मण तुरते नगर के लोग अउरी ब्राह्मण सभ के बोला के सुग्रीव के राज्य दे देलन अउरी अंगद के युवराज बनईलन।

567 जब सुग्रीव भवन फिरि आए। रामु प्रबरषन गिरि पर छाए ॥ 4.12.C10
568 इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा। राम काजु सुग्रीवँ बिसारा ॥ 4.19.C1

राज्य पा के सुग्रीव आपन महल में चल अईलन। वर्षा ऋतु आवे के चलते राम प्रवर्षण पर्वत पर रहे गईलन। तनकि समय बीतला के बाद हनुमान के लागल कि सुग्रीव भगवान राम के काम भूला गईल बाड़न।

569 निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा।चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा॥ 4.19.C2

ऐहिसे सुग्रीव के पास जाके अउरी उनकर चरण में सिर झुका के, हनुमान उनकरा चारों (साम, दाम, दण्ड, भेद) ढ़ंग से समझईलन।

570 सुनि सुग्रीवँ परम भय माना। बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ॥ 4.19.C3
571 अब मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा ॥ 4.19.C4

बात सुनके सुग्रीव बहुत डेरा गईलन अउरी बोललन, "मोहमाया से हमार ज्ञान हर लेवल गईल रहे। हे हनुमान! जेने-जेने बंदर लोग के झुण्ड रहेलन, ओने-ओने दूत भेजके उनकरा बोलाव।"

572 राम काजु अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा ॥ 4.22.C6
573 जनकसुता कहुँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आएहु भाई ॥ 4.22.C7

बंदर लोग के बहुत बड़ सेना के इकट्ठा होईला पर सुग्रीव कहलन, "श्री रामचन्द्र के काम अउरी हमार अनुरोध समझ के चारों ओरे जा जा। हे भाईयों, राजा जनक के बेटी सीता के खोज के एक महीना में लौट अईह।"

574 सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना॥ 4.23.C1
575 सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू। सीता सुधि पूँछेहु सब काहू॥ 4.23.C2
"हे धीरबुद्धि अउरी चतुर नील, अंगद, हनुमान, जामवंत! रउआ सभ योद्धा दक्खिन दिशा ओरे जा अउरी सबसे सीता के पता पूछ जा।"

576 पाछें पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा॥ 4.23.C9
577 परसा सीस सरोरुह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी॥ 4.23.C10
सभकरा बाद हनुमान प्रणाम कईलन। ई जानके कि उनकर हाथ हमार काम होई, भगवान हनुमान के अपना पास बोलवलन। उ आपन कमल जईसन हाथ हनुमान के माथा पर फेरलन अउरी आपन सेवक जानके आपन हाथ के अँगूठी देलन।

578 चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह। 4.23.D1
579 राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह॥ 4.23.D2
सभ बंदर जंगल, नदी, तालाब, पर्वत अउरी पर्वत के खोह में सीता के खोज करे लगलन। उ राम के काम में ऐतना मगन रहन कि आपन देह के मोह भी भुला गईलन।

580 इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काज कछु नाहीं॥ 4.26.C1
समय बीतला पर बंदर विचार करे लगलन कि दिहल समय त निकल गईल, लेकिन अभी तक कुछो काम ना होईल।

581 कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी॥ 4.26.C3
582 इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गएँ मारिहि कपिराई॥ 4.26.C4
अंगद आँख में पानी भरके कहलन, "दूनों ढ़ंग से अब हमार मौत आ गईल। इहाँ त सीता के कुछो पता ना लागल, लौटे पर बंदर के राजा सुग्रीव हमरा उहाँ मार डलिहन।"

583 हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना। नहिं जैहैं जुबराज प्रबीना॥ 4.26.C9
584 जामवंत अंगद दुख देखी। कहीं कथा उपदेस बिसेषी॥ 4.26.C11

अंगद के दुखी जानके बंदर उनकरा संतावना देवे लगलन, "हे निपुण युवराज! हमनिके सीता के खोजले बिना वापस ना लौटल जाई।" जामवंत भी विशेष उपदेश के कथा सुनाके कहलन,

585 निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि। 4.26.D1
586 सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि॥ 4.26.D2

"देवता, धरती, गाय अउरी ब्राह्मण सभ के खातिर भगवान आपन इच्छा से अवतार लेवे लन। सगुण के उपासना करेवाला सभ मोक्ष के छोड़ के उनकर सेवा में रहेलन।"

587 एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती। गिरि कंदराँ सुनी संपाती॥ 4.27.C1
588 बाहेर होइ देखि बहु कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा॥ 4.27.C2

ऐह ढ़ंग से जब बंदर सभ में कथा-बातचीत होत रहे, तब पर्वत के गुफा में बईठल गीध सम्पाती उनकर बात सुनलन। बहरे आके ढ़ेर बंदर देखके उ बोललन, "आज जगदीश हमरा घरे बईठल भोजन भेज देलन।"

589 डरपे गीध बचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना॥ 4.27.C5

गीध के बात सुनके सभ डेरा गईलन अउरी सोचे लगलन कि साचों में आज हमनिके मौत आ गईल।

590 कह अंगद बिचारि मन माहीं। धन्य जटायू सम कोउ नाहीं॥ 4.27.C7
591 राम काज कारन तनु त्यागी। हरि पुर गयउ परम बड़भागी॥ 4.27.C8

अंगद तब मन में विचार के बोललन कि जटायु के जईसन धन्य कोई नईखे, उ भगवान राम के काम खातिर आपन देह छोड़ देलन। बहुते भाग्यशाली उ भगवान के धाम जा चूकल बाड़न।

592 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई॥ 4.27.C10
593 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रह रावन सहज असंका॥ 4.28.C11

सम्पाती बंदर सभ के निर्भय करके सभ बात पूछलन। तब उ सभ बात सम्पाती के सुनईलन। उ बोललन, "समुन्दर के ओह पार त्रिकुट पर्वत पर लंका बसल बा। उहाँ सुभावे से निडर राक्षस रावण रहेला।"

594 तहँ असोक उपबन जहँ रहई। सीता बैठि सोच रत अहई॥ 4.28.C12
595 जो नाघइ सत जोजन सागर। करइ सो राम काज मति आगर॥ 4.29.C1
"उहाँ अशोक नाम के एगो वाटिका रहे, जहँवा सीता सोच में मगन बईठल बाड़ी। जे भी सौ योजन (आठ सौ मील) के ई समुन्दर लाँघ सकेला, उहे राम के काम कर सकेला।"

596 जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा। नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा॥ 4.29.C7
रीछ के राजा जामवंत बोललन, "हम अब बूढ़ा हो गईल बानी, देह में पहिले जईसन बलो ना रहल।"

597 बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ। 4.29.D1
598 उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ॥ 4.29.D2
"दैत्यराज बलि के बाँधे के बेरी भगवान ऐतना अधिक बढ़लन कि उनकर बड़ आकार के वर्णन ना कईल जा सके। ओह घड़ी हम दउड़ के खाली दू घड़ी में उनकर सात गो परिक्रमा कर ले ले रहीं।"

599 अंगद कहइ जाउँ मैं पारा। जियँ संसय कछु फिरती बारा॥ 4.30.C1
अंगद कहलन, "हम उ पार त जा सकेनी लेकिन वापस लौटे में मन में तनकि संदेह बा।"

600 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना॥ 4.30.C3
601 पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥ 4.30.C4
जामवंत तब हनुमान से कहलन, "हे बलवान! तू चुप काहे बईठल बाड़अ? तू पवनदेव के बेटा हव अउरी उनकरे जईसन तोहर बल बा। तू बुद्धि, विवेक अउरी विज्ञान के भंडार हव।"

602 राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥ 4.30.C6
603 सहित सहाय रावनहि मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी॥ 4.30.C9

"तोहार जन्म राम के कामे करे खातिर भईल बा।" ई सुनके हनुमान पर्वत के आकार जईसन हो गईलन अउरी बोललन, "हम रावण अउरी ओकर सेना के मुआ के अउरी त्रिकूट पर्वत के उठा के इहाँ ला सक तानी।"

604 जामवंत मैं पूँछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही॥ 4.30.C10
605 एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई॥ 4.30.C11
"हे जामवंत! हम रउआ से पूछतानी, हमरा ठीक सलाह दीहीं।" जामवंत बोललन, "हे तात! अभी तू खाली ऐतने करअ कि सीता के देखके उनकर समाचार ले आव।"

606 भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि। 4.30a.D1
607 तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥ 4.30a.D2
श्री रघुनाथ के जस जिये-मरे के रोग के अचूक दवाई ह। जवन आदमी अउरी औरत सुनिहन त्रिशिरा के दुश्मन भगवान राम उनकर सभ मन के इच्छा के जरुरे पूरा करिहन।

सुन्दरकाण्ड

608 जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥ 5.1.C1
609 तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई।सहि दुख कंद मूल फल खाई॥ 5.1.C2
जामवंत के सुघर वचन हनुमान के हृदय के बहुत बढ़िया लागल। उ बोललन, "हे भाई! रउआ सभ कंद,मूल, फल खाके दुःख सहके हमार इंतजार करिह जा।"

610 बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥ 5.1.C6
611 जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता॥ 5.1.C7
फिर बेर-बेर रघुनाथ के याद करके बहुत बलवान हनुमान बड़ा फुर्ती से उछललन। जवन पर्वत से उ उछललन, उ तुरते पाताल में चल गईल।

612 जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना॥ 5.1.C8
613 जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी॥ 5.1.C9
जईसे राम के अमोघ बाण चलेला, ओईसहीं हनुमान भी तेजी से चल पड़लन। समुन्दर हनुमान के राम के दूत जानके आपन भीतर रहल मैनाक पर्वत से कहलस, "तू जाके हनुमान के थकान दूर करअ।"

614 हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम। 5.1.D1
615 राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम॥ 5.1.D2
हनुमान ओकरा छू के प्रणाम कईलन अउरी कहलन, "भगवान राम के काम पूरा कईले बिना हमरा भला आराम केने?"

616 जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा॥ 5.2.C1
617 सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता॥ 5.2.C2
जब देवता सभ हनुमान के लंका जईते देखलन, उनकर विशेष बल अउरी बुद्धि के इम्तिहान लेवे खातिर साँप सभ के माई सुरसा के उहाँ भेजलन। उ आके हनुमान से कहली,

618 आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा॥ 5.2.C3
619 राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं॥ 5.2.C4
"आज देवता लोग तोहरा हमार भोजन खातिर भेजले बाड़न।" ई सुनके हनुमान बोललन, "हम श्रीराम के काम पूरा करके अउरी उनकरा माई सीता के समाचार सुनाके, रउरा पास वापस लौट आईम।"

620 तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई॥ 5.2.C5
621 कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना॥ 5.2.C6
"तब हम आके राउर मुँह में घुस जाईम। हे माई! हम साचों कह रहल बानी, हमरा के जाय दा।" जब कवनों उपाय से उ ना जाय देली, हनुमान कहलन, "त फिर हमरा खा काहे नईखू लेत?"

622 जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा॥ 5.2.C7
623 जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा॥ 5.2.C9
तब सुरसा आपन मुँह एक योजन (आठ मील) चौड़ा फैला ले ली। हनुमान ओकरा से दुगना अपना के बड़ कईलन। जईसे-जईसे सुरसा आपन मुँह के बड़ करत गईली, ओईसे-ओईसे उ भी दुगुना आकार लेत गईलन।

624 सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा॥ 5.2.C10
625 बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा॥ 5.2.C11
फिर सुरसा आपन मुँह सौ योजन कईली। ई देखके हनुमान बहुत छोट रुप धर लेलन। उ सुरसा के मुँह में जाके जल्दी बहरे आ गईलन अउरी सिर झुका के विदा मँगलन।

626 राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान। 5.2.D1
627 आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान॥ 5.2.D2
सुरसा कहली, "तू बल अउरी बुद्धि से भरल बाड़अ, तू ही रामचन्द्र के काम करब।" आशीर्वाद देके सुरसा लौट गईली अउरी हनुमान खुश होके आगे चल पड़लन।

628 निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई॥ 5.3.C1
629 सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा॥ 5.3.C4
उ समुन्दर में एगो राक्षसी रहत रहे, जवन माया से आकाश में उड़त पक्षी सभ के ओकर छाया के सहारे पकड़ लेत रहे। उ उहे छल हनुमान साथे कईलस। ओकर कपट उ तुरंते भाँप लेलन।

630 ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा॥ 5.3.C5
तब स्थिर बुद्धि मारुती के बेटा वीर हनुमान ओकरा मार के समुन्दर के पार पहुँच गईलन।

631 मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी॥ 5.4.C1
632 नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी॥ 5.4.C2
उहाँ हनुमान आपन आकार मच्छर जईसन छोट बना लेलन अउरी भगवान राम के याद करके उ लंका के ओरे चल पड़लन। उहाँ लंकिनी नाम के एगो राक्षसी लंका के रक्षा करत रहे। हनुमान के देखके उ बोललस, "हमार उपेक्षा करके कहाँ जा रहल बाड़े?"

633 मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनीं ढनमनी॥ 5.4.C4
634 पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका॥ 5.4.C5
तब हनुमान ओकरा एक घूँसा मरलन, जेकरा से उ खून के उल्टी करते धरती पर लुढ़क गईल। तब लंकिनी अपना आप के सँभाल के उठल अउरी डर के मारे हाथ जोड़ के विनती करे लागल।

635 जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा॥ 5.4.C6
636 बिकल होसि तैं कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे॥ 5.4.C7
"जब ब्रह्मा रावण के वरदान देलन, चलत-चलत हमरा ई संकेत देलन कि जब कवनों बंदर के मार से तू बेचैन हो जईबू, तब समझ लिह कि राक्षस सभ के नाश होखेवाला बा।"

637 तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग। 5.4.D1
638 तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥ 5.4.D2*
"हे तात! यदि स्वर्ग अउरी मोक्ष के सुख के तराजू के एगो पलड़ा में रखल जाए, उ मिलके भी उ सुख के बराबर ना हो सकेलन, जवन दूसर पलड़ा में रखल सत्संग के एगो क्षण भर से मिलेला।"

639 प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥ 5.5.C1
640 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥ 5.5.C4
"रउआ कोसल के राजा रामचंद्र के हृदय में रख के लंका में घुस के सब काम करीं।" भगवान राम के याद करके हनुमान बहुत छोट भेष में लंका में घुस गईलन।

641 गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥ 5.5.C6
642 सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥ 5.5.C7
हनुमान रावण के महल में गईलन, जवन बहुत सुघर रहे, जेकर वर्णन ना हो सके। उ उहाँ रावण के सुतल देखलन, लेकिन सीता महल में कतहुँ दिखाई ना देली।

643 भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥ 5.5.C8
फिर उनकरा एगो सुंदर महल देखाई देलस, जहँवा भगवान के एगो बहुत बढ़िया मंदिर बनल रहे।

644 रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ। 5.5.D1
645 नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ॥ 5.5.D2
उहाँ राम के धनुष-बाण के चित्र बनल रहे, उ महल के शोभा के वर्णन ना कईल जा सके। उहाँ तुलसी के नया पौधा देखके हनुमान बड़ा खुश होईलन।

646 मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा॥ 5.6.C2
647 राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥ 5.6.C3
उ मन में विचार करत ही रहन कि ओहि घड़ी विभीषण जाग उठलन। उठिये के उ राम नाम के याद कईलन। उनकरा सज्जन जानके हनुमान हृदय में खुश होईलन।

648 तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता॥ 5.8.C4
649 जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई॥ 5.8.C5
तब हनुमान कहलन, "हे भाई, सुनअ! हम सीता माई के देखल चाह तानी।" विभीषण सीता के देखे के सभ उपाय बतईलन। हनुमान उनकरा से विदा लेके चल पड़लन।

650 करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ॥ 5.8.C6
फिर उ ओहिजे छोट भेष ले लेलन अउरी जहँवा सीता रहत रही, उहे अशोकवन में पहुँच गईलन।

651 निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन । 5.8.D1
652 परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन॥ 5.8.D2
उहाँ उ सीता के चरण के ओरे टकटकी लगईले अउरी मन के भगवान राम के चरणकमल में लीन कईले देखलन। उनकर ई दशा के देखके हनुमान के बड़ा दुख होईल।

653 तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई। करइ बिचार करौं का भाई॥ 5.9.C1
654 तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा॥ 5.9.C2
उ पेड़ के पत्ता में छिप के सोचे लगलन कि अब हम का करीं? ओहि घड़ी रावण ढ़ेर औरत सभ के साथे सज-धज के उहाँ आईल।

655 बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा॥ 5.9.C3
656 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई॥ 5.10.C8
उ दुष्ट सीता के बहुत ढ़ंग से समझवलस अउरी साम,दाम,भय अउरी भेद देखवलस। जात-जात राक्षसी सभ के बोला के उ कहलस, "सीता के तरह-तरह से डेरवाव-धमकाव।"

657 देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता॥ 5.12.C12
सीता के विरह के व्याकुलता के उ क्षण हनुमान के एगो कल्प के जईसन लंबा बीतल।

658 कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब । 5.12.S1
659 जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥ 5.12.S2
तब हृदय में विचार करके हनुमान राम के अँगूठी उनकरा आगे डाल देलन। सीता के लागल कि अशोक के पेड़ अंगारा दे देलस। ई सोच के उ खुश होके अँगूठी उठा ले ली।

660 तब देखी मुद्रिका मनोहर । राम नाम अंकित अति सुंदर ॥ 5.13.C1
तब सीता राम नाम से रचल सुघर अउरी मन के हरेवाला अँगूठी देखली।

661 राम दूत मैं मातु जानकी । सत्य सपथ करुनानिधान की ॥ 5.13.C9
662 यह मुद्रिका मातु मैं आनी । दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी ॥ 5.13.C10
हनुमान कहलन, "हे माई जानकी! हम करुणा के भंडार भगवान राम के साँच शपथ लेके कहत बानी कि हम उनकर दूत हईं। हे माई! ई अंगूठी के हमहिं लाईल बानी जेकरा भगवान राम निशानी जईसन रउआ खातिर भेजले बाड़न।"

663 हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ॥ 5.14.C1
664 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी ॥ 5.14.C3
हनुमान के भगवान के सेवक जानके सीता के मन में बड़ा गहरा प्रीति हो गईल, उनकर आँख पनिया गईल अउरी देह बहुत पुलकित हो गईल। उ बोललली, "हम बलिहारी जा तनी। अब, भाई लक्ष्मण साथे, सुख के धाम रघुनाथ के कुशलता के समाचार कहअ।"

665 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता । तव दुख दुखी सुकृपा निकेता ॥ 5.14.C9
666 जनि जननी मानहु जियँ ऊना । तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना ॥ 5.14.C10
हनुमान बोललन, "हे माई! सुन्दर किरपा के धाम भगवान छोट भाई लक्ष्मण के साथे कुशल से बाड़न। खाली राउर दुःख से दुःखी बाड़न। रउआ आपन मन में दुःखी मत होईं, भगवान राम के प्रेम रउआ से दुगुना बा।"

667 रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर । 5.14.D1
668 अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर ॥ 5.14.D2
"हे माई! रउआ धीरज से रघुनाथ जी के सन्देश सुनीं।" अईसन कहत-कहत हनुमान गदगद हो गईलन अउरी उनकर आँख में पानी भर आईल।

669 कहेउ राम बियोग तव सीता । मो कहुँ सकल भए बिपरीता ॥ 5.15.C1
670 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा । जानत प्रिया एकु मनु मोरा ॥ 5.15.C6
हनुमान बोललन, "भगवान राम कहल हवन कि हे सीता! तोहार वियोग में सब कुछ हमरा उल्टा हो गईल बा। हमार अउरी तोहार प्रेम के तत्व एगो खाली हमार मन ही जानेला।"

671 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं । जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं ॥ 5.15.C7
672 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही । मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही ॥ 5.15.C8
"उ मन हमेशा तोहरा भीरी रहेला, हमार प्रेम के सार ऐतने में समझ ल।" भगवान के सन्देश सुनके सीता प्रेम में मगन हो गईली अउरी उनकरा आपन देह के सुध ना रहल।

673 कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा॥ 5.16.C4
674 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं । तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं ॥ 5.16.C5
हनुमान बोललन, "हे माई! रउआ तनकि दिन अउरी धीरज धरीं। भगवान राम बंदर सभ साथे अईहन अउरी राक्षस सभ के मार के रउआ के ले जईहन। नारद अउरी दूसर ऋषि-मुनि तीनों लोक में उनकर जस गईहन।"

675 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना ॥ 5.17.C2
676 अजर अमर गुननिधि सुत होहू । करहुँ बहुत रघुनायक छोहू ॥ 5.17.C3
सीता हनुमान के राम के प्रिय जानके आशीर्वाद देली, "हे बेटा! तू बल अउरी शील के निधान बनअ। तू अजर,अमर अउरी गुण के भण्डार बनअ। रघुकुल के नायक भगवान राम तोहरा पर बहुत किरपा करस।"

677 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥ 5.17.C6
678 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा॥ 5.17.C7
हनुमान बोललन, "हे माई! अब हम तर गईनी। राउर आशीर्वाद अचूक ह, ई बात प्रसिद्ध ह। हे माई सुनअ, ई पेड़ सभ के सुघर फल देखके हमरा बड़ा जोर के भूख लागल बा।"

679 देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु। 5.17.D1
680 रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु ॥ 5.17.D2
हनुमान के बुद्धि अउरी बल में बड़ जानके सीता कहली, "हे तात! जा, रघुनाथ जी के चरण के हृदय में रखके मीठा फल खा।"

681 चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा। फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥ 5.18.C1
हनुमान सीता के सिर नवाके बगीचा में घुस गईलन। पहिले तनकि फल खईलन, फिर उ पेड़ सभ के तूड़े लगलन।

682 सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना ॥ 5.18.C5
683 सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे ॥ 5.18.C6
ई सुनके रावण ढ़ेर योद्धा भेजलस, जेकरा देखके हनुमान गरजे लगलन। सभ राक्षस के हनुमान मार गिरईलन। जवन तनकि अधमरा रह गईलन, उ चीखत-चिल्लाईत रावण के दरबार में पहुँचलन।

684 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा ॥ 5.18.C7
685 आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा ॥ 5.18.C8
फिर रावण आपन बेटा अक्षयकुमार के भेजलस, जवन अनगिनत वीर योद्धा सभ के अपना साथे लेके चलल। ओकरा आवत देखके हनुमान एगो पेड़ हाथ में लेके ललकरलन अउरी ओकरा मार के बड़ा जोर से गरजे लगलन।

686 चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥ 5.19.C3
687 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया॥ 5.19.C9

भाई के मरे के सुनके जेकर तुलना ना हो सके अईसन योद्धा मेघनाद के बड़ा खीस बरल अउरी उ युद्ध करे खातिर चल पड़ल। उ उठके कई ढ़ंग से माया कईलस, लेकिन उ वायु के बेटा हनुमान के जीत ना सकल।

688 ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार। 5.19.D1
689 जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥ 5.19.D2

तब मेघनाद ब्रह्मास्त्र के उपयोग कईलस। हनुमान सोचलन कि यदि हम ब्रह्मास्त्र के ना मानम त ऐकर बड़ी भारी महिमा खत्म हो जाई, ऐहिसे अस्त्र लगला पर आपन इच्छा से उ मूर्च्छित हो गईलन।

690 तेहिं देखा कपि मुरुछित भयउ। नागपास बाँधेसि लै गयउ॥ 5.20.C2
691 कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा॥ 5.21.C1

हनुमान के मूर्च्छित देखके मेघनाद उनकरा नागपाश में बाँध के रावण के दरबार में ले गईल। रावण हनुमान से बोललस, "हे बंदर! तू के हव? केकरा बल पर तू वन के उजाड़ के नष्ट कर देलअ?"

692 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया॥ 5.21.C4
693 जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा॥ 5.21.C5
694 खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली॥ 5.21.C9

हनुमान बोललन, "हे रावण! जेकर बल पाके माया सभ ब्रह्माण्ड के रचना करे ली, ब्रह्मा, विष्णु अउरी महेश (क्रम से) संसार के रचना, पालन अउरी संहार करेलन, जे खर, दूषण, त्रिशिरा अउरी बालि जईसन बड़-बड़ बलवान सभ के मार देलन।"

695 जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि। 5.21.D1
696 तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥ 5.21.D2

"जिनकर तनकि-सी बल से तू चराचर संसार के जीत ले ल, जेकर प्रिय मेहरारु के तू हर लाईल बाड़अ, हम उहे भगवान राम के दूत हईं।"

697 बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥ 5.22.C7
698 राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥ 5.23.C1
"हे रावण! हम हाथ जोड़ के तोहरा से प्रार्थना करत बानी कि, आपन अहंकार छोड़ के हमार सीख सुनअ। भगवान राम के चरणकमल के हृदय में रखके तू लंका पर अचल राज्य करअ।"

699 सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना॥ 5.24.C5
700 सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए॥ 5.24.C6
हनुमान के बात सुनके रावण खूब खिसियाईल अउरी राक्षस सभ से बोललस, "ई मूरख के प्राण जल्दी काहे नईख ले लेत?" ई सुनके राक्षस हनुमान के मारे दौड़लन। ओहि घड़ी दरबार में आपन मंत्री सभ के साथे विभीषण अईलन।

701 नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता॥ 5.24.C7
702 सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर॥ 5.24.C9
बहुते विनय से सिर झुका के विभीषण बोललन कि दूत के मारल नीति के खिलाफ बा। सुनके रावण हँस के बोललस, "त ठीक बा, ई बंदर के अंग-भंग करके वापस भेज देवल जाए।"

703 कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ। 5.24.D1
704 तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ॥ 5.24.D2
"हम सबके समझा के कह तानी कि बंदर के आपन पोंछ से ढ़ेर प्रेम होला, ऐहिसे तेल में कपड़ा डुबा के ऐकर पोंछ में बाँध के, ओकरा में आग लगा द।"

705 पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुरंता॥ 5.25.C8
706 जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला॥ 5.26.C2
हनुमान जब पोंछ में आग लागल देखलन, तुरते छोट आकार में आके उ आग फैलावे लगलन। सभ नगर जरे लागल, लोग बेचैन हो गईलन। आग के करोड़ों भयंकर लपट फैले लागल।

707 जारा नगरु निमिष एक माहीं। एक बिभीषन कर गृह नाहीं॥ 5.26.C6

708 उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी॥ 5.26.C8
हनुमान एगो विभीषण के घर छोड़ के सभ नगर क्षण भर में जला देलन। उलट-पुलट के सभ लंका जला देला के बाद उ समुन्दर में कूद पड़लन।

709 पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि। 5.26.D1
710 जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि॥ 5.26.D2
समुन्दर में आपन पोंछ के आग बुझा के उ आपन थकान दूर कईलन। फिर छोट रुप लेके सीता के आगे हाथ जोड़के जाके खाड़ हो गईलन।

711 मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा॥ 5.27.C1
712 चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ॥ 5.27.C2
उ बोललन, "हे माई! रउआ हमरा आपन कवनों चिन्हानी दीहीं जईसे रघुकुल के नायक रामचंद्र हमरा रउआ खातिर देले रहन।" सीता तब चूड़ामणि उतार के दे देली जेकरा हनुमान बड़ा खुशी से ले लेलन।

713 कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥ 5.27.C3
714 दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥ 5.27.C4
सीता कहली, "हे तात! भगवान के हमार प्रणाम के साथे कईह, "हे भगवन! अईसे त रउआ सभ ढ़ंग से पूरनकाम बानी, लेकिन दुखी लोग पर दया करल राउर जस ह। ऐहिसे उ जस के याद करके हमार भारी संकट के दूर करीं।"

715 जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह। 5.27.D1
716 चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह॥ 5.27.D2
हनुमान सीता के ढ़ेर तरीका से समझा के धीरज देलन अउरी उनकर चरणकमल में सिर झुका के उ राम के पास चल देलन।

717 पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए॥ 5.30.C6
718 सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए॥ 5.30.C7
जामवंत हनुमान के सभ सुघर काम राम के सुनईलन, जवन किरपा के सागर राम के बड़ा अच्छा लागल। खुश होके उ हनुमान के हृदय से लगा लेलन।

719 चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही॥ 5.31.C1
720 सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला॥ 5.31.C9
हनुमान कहलन, "चलत घड़ी माई सीता हमरा आपन चूड़ामणि देली हई।" राम ओकरा आपन हृदय से लगा लेलन। हनुमान आगे कहलन, "हे गरीब पर दया करेवाले! उनकर विपत्ति बहुत बड़ बा। ई विषय में कुछो नाहींए कहल ही ठीक रही।"

721 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा॥ 5.34.C6
722 चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा॥ 5.35.C8
रघुपति तब बंदर सभ के राजा सुग्रीव के बोलाके कहलन, "चले के तैयारी करअ।" अग्या मिलते उनकर विशाल सेना चल पड़ल, ओकर वर्णन के कर सकेला? ना गिने जाए लायक बंदर अउरी भालू गरजे लगलन।

723 एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर। 5.35.D1
724 जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर॥ 5.35.D2
ऐह ढ़ंग से किरपा के भंडार राम समुन्दर के किनारे पहुँच गईलन। वीर बंदर अउरी भालू जेने-तेने फल खाए लगलन।

725 उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका॥ 5.36.C1
726 अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा॥ 5.38.C2
जब से हनुमान लंका के जला के गईलन, तबे से उहाँ राक्षस डेरा के रहे लगलन। ठीक समय जानके विभीषण रावण के दरबार में अईलन अउरी आपन भाई के चरण में सिर नवईलन।

727 तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥ 5.39.C1
728 देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही॥ 5.39.C6
उ बोललन, "हे तात! श्री रामचंद्र खाली आदमी ही ना हवन, सभ लोक के मालिक अउरी काल के भी काल हवन। ऐहिसे रउआ भगवान के सीता के लौटा दीहीं अउरी बिना कवनों स्वार्थ के स्नेह करेवाले राम के भजीं।"

729 सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥ 5.41.C2
730 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥ 5.41.C6
ई सुनके रावण खिसिया के बोललस, "अरे दुष्ट! तोर मौत अब नजदीके आ गईल बा।" ई कहके उ विभीषण के लात मरलस। तबो छोट भाई विभीषण रावण के पैर बार-बार पकड़लन।

731 रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि। 5.41.D1
732 मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि॥ 5.41.D2
तब विभीषण बोललन, "श्री रामचन्द्र सच्चा संकल्प वाला अउरी भगवान हवन अउरी तोर सभा काल के वश बा। ऐहिसे हम अब रघुवीर के शरण में जात बानी, हमरा कवनों दोष मत दीह।"

733 श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर। 5.45.D1
734 त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर॥ 5.45.D2
रामचंद्र के पास पहुँच के विभीषण बोललन, "हे भगवन! हम राउर सुघर यश के सुनके इहाँ आईल बानी। रउआ जन्म अउरी मौत के डर के नाश करेवाला हईं। हे दुखियों के दुःख दूर करेवाला, श्री रघुवीर! रक्षा करीं! रक्षा करीं!"

735 सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ ॥ 5.48.C1
राम बोललन, "हे दोस्त! हम आपन सुभाव बताव तानी, जेकरा काकभुशुण्डि, शिव अउरी पार्वती भी जान ताड़न।"

736 जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही॥ 5.48.C2
737 तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना॥ 5.48.C3
"यदि सभ संसार के जड़-चेतन से बगावत करेवाला भी डेराके हमार शरण में आवेला, आपन मद, मोह, कपट अउरी छल छोड़ देवेला त, हम ओकरा बड़ा जल्दीये साधु के जईसन बना देवेनी।"

738 अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा॥ 5.49.C10
739 सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा॥ 5.50.C5

अईसन कहके राम उनकर राजतिलक कईलन। आकाश से फूल के बड़ा भारी वर्षा होखे लागल। तब राम बोललन, "हे वीर बंदर के राजा सुग्रीव अउरी लंकापति विभीषण! ई गहरा समुन्दर के कईसे पार करल जाए?"

740 कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक॥ 5.50.C7
741 जद्यपि तदपि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई॥ 5.50.C8
विभीषण बोललन, "हे रघुनायक! अईसे त राउर एगुड़े बाण करोड़ों समुन्दर के सोख सकेला, नीति के अनुसार रउआ के समुन्दर के पास जाके ओकरा से पहिले विनती करे के चाहीं।"

742 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई॥ 5.51.C7
उनकर सलाह मानके, राम समुन्दर के सिर झुका के प्रणाम कईलन, फिर ओकरा किनारे कुश बिछा के बईठ गईलन।

743 बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति। 5.57.D1
744 बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति॥ 5.57.D2
तीन दिन बीतला पर भी जब जड़ समुन्दर राम के प्रार्थना ना सुनलस, भगवान खिसिया के बोललन, "बिना डर के प्रेम ना होला।"

745 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा॥ 5.58.C5
746 संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला॥ 5.58.C6
ई कहके उ धनुष चढ़ईलन, जवन लक्ष्मण के मन के बड़ा बढ़िया लागल। भगवान के भयंकर बाण धनुष पर चढ़ते समुन्दर के हृदय के अंदर आग के ज्वाला परगट हो गईल।

747 कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना॥ 5.58.C8
748 सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥ 5.59.C1
समुन्दर तब आपन अहंकार छोड़ के, सोना के थाल में ढ़ेर मणि लेके, ब्राह्मण के भेष में उहाँ आईल। डेरात-डेरात भगवान राम के चरण पकड़ के बोललस, "हे नाथ! हमार सभ अवगुण के क्षमा करीं।"

749 नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई॥ 5.60.C1
750 तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥ 5.60.C2
"हे नाथ! राउर सेना में नल अउरी नील दुगो बंदर भाई बाड़न, जेकरा बचपन में ऋषि लोग से एगो आशीर्वाद मिलल बा। इनकरा छुअला से अउरी राउर प्रताप से भारी-भारी पहाड़ भी समुन्दर में तैर जाई।"

751 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई॥ 5.60.C3
752 एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ॥ 5.60.C4
"हम भी राउर प्रभुता के हृदय में रखके, आपन बल के अनुसार सहायता करम। हे नाथ! रउआ ऐह ढ़ंग से समुन्दर के बाँधी, जेकरा से तीनों लोक में राउर सुजस गावल जाए।"

753 सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान। 5.60.D1
754 सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥ 5.60.D2
श्री रघुनाथ के गुणगान सभ सुख के देवेवाला ह। जे आदर के साथे सुनेलन, उ बिना कवनों जहाज के ही भवसागर के तर जालन।

लंकाकाण्ड

755 सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ । 6.0b.S1
756 अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥ 6.0b.S2
समुन्दर के बात सुनके राम मंत्री लोग के बोला के कहलन, "अब देरी कवन बात के? पुल बनवाव ताकि सेना ओह पार जा सके।"

757 अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ । 6.1.D1
758 आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ 6.1.D2
बंदर- भालू ऊँचा-ऊँचा पर्वत अउरी पेड़ सभ के खेल-खेल में उखाड़ के उनकरा नल अउरी नील के देत रहन, जेकरा उ बढ़िया तरीका से रच के सुन्दर पुल बनईलन।

759 देखि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि कृपानिधि बोले बचना ॥ 6.2.C2
760 करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कलपना ॥ 6.2.C4
पुल के सुघर रचना देखके कृपानिधि राम हँस के कहलन, "हम इहाँ शिव जी के स्थापित करब, हमार हृदय में ई बड़ संकल्प बा।"

761 लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥ 6.2.C6
762 जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥ 6.3.C1
भगवान शिवलिंग स्थापित करके ओकर विधि के साथ पूजा कईलन अउरी कहलन, "हमरा शिव जी के जईसन दूसर कोई प्रिय नईखे। जवन कोई रामेश्वर के देखिहन, उ देह छोड़ के हमार लोक के जईहन।"

763 सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥ 6.5.C2
764 सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥ 6.5.C10
सेना के साथे पुल प चलके राम समुन्दर के पार पहुँच गईलन। बंदर अउरी उनकर सेनापति लोग के एतना भीड़ रहे कि कहल ना जा सकत रहे। ओने समुन्दर पर पुल बंधाये जाये के समाचार सुनके रावण घबड़ा के दसों मुँह से एके साथे बोल उठल।

765 बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस । 6.5.D1
766 सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस ॥ 6.5.D2
"का साचों में वननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिन्धु, वारीश, तोयनिधि, कंपति, उदधि, पयोधि, नदीश के बाँध लेवल गईल बा?"

767 मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो । कौतुकहीं पाथोधि बँधायो ॥ 6.6.C2
768 तासु बिरोध न कीजिअ नाथा । काल करम जिव जाकें हाथा ॥ 6.6.C9
मंदोदरी जब सुनली कि भगवान रामचंद्र आ गईल बाड़न अउरी उ खेल-खेल में समुन्दर के बाँध ले ले बाड़न, उ रावण से बोललली, "हे नाथ! उनकर विरोध मत करीं, जिनकर हाथ में काल, कर्म अउरी जीव तीनों बा।"

769 तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता । जो कर्ता पालक संहर्ता ॥ 6.7.C4
770 सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना । जग जोधा को मोहि समाना ॥ 6.8.C2
"हे स्वामी! रउआ उनकर भजन करीं, जवन संसार के बनावे वाला, पालक, अउरी नाश करेवाला बाड़न।" रावण बोललस, "हे प्रिय! सुनअ, तू बेकारे डेरात बाड़ू। बताव, हमरा जईसन योद्धा ई संसार में के बा?"

771 इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥ 6.17.C1
772 मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा । दूत पठाइअ बालिकुमारा ॥ 6.17.C4
ऐने जब सबेरे रघुनाथ जगलन, मंत्री लोग के बोला के उ उनकरा से सलाह करे लगलन। जामवंत बोललन, "हम आपन सोच के अनुसार कहत बानी कि बालि के बेटा अंगद के दूत बनाके रावण के पास भेजल जाए।"

773 बालितनय बुधि बल गुन धामा। लंका जाहु तात मम कामा॥ 6.17.C6
774 बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई ॥ 6.18.C1
राम अंगद से कहलन, "हे बल, बुद्धि अउरी गुण के धाम बालि के बेटा! हे तात! तू हमार काम खातिर लंका जा।" अंगद उनकरा चरण के वंदना कईलन अउरी हृदय में प्रभुता के धर के सबके सिर नवाके चल पड़लन।

775 गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज। 6.18.D1
776 सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज॥ 6.18.D2
भगवान राम के चरणकमल के याद करके अंगद रावण के सभा में पहुँचलन। उहाँ जाके धीर, वीर अउरी बल के भंडार अंगद, सिंह जईसन शान से ऐने-ओने देखे लगलन।

777 कह दसकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर॥ 6.20.C1
778 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा॥ 6.20.C6
दस गो कंठ वाला रावण पूछलस, "अरे बंदर! तू के हव?" अंगद कहलन, "हे दस कंधा वाले! हम रघुवीर श्री रामचंद्र के दूत हईं। अब तू आपन भलाई के बात सुन। यदि ओकरा पर अमल करब त भगवान तोहार सभ अपराध क्षमा कर दिहन।"

779 दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी॥ 6.20.C7
780 सादर जनकसुता करि आगें। एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें॥ 6.20.C8
"दाँतो में तिनका दबा के, गला में कुल्हाड़ी डाल के, सभ परिवार अउरी आपन मेहरारु सभ के साथे लेके, सीता जी के आदर से आगे करके अउरी सभ डर छोड़ के हमरा साथे चलअ।"

781 रे कपिपोत बोलु संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी॥ 6.21.C1
ई सुनके रावण बोललस, "अरे बंदर के बच्चे! सँभाल के बोल। रे मूरख! का तू ना जानत बाड़े कि हम देवता सभ के घोर दुश्मन हईं?"

782 पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा॥ 6.33.C3
783 रे त्रिय चोर कुमारग गामी। खल मल रासि मंदमति कामी॥ 6.33.C5
अंगद गुस्सा होके कहलन, "तोरा गाल बजावत लाज नईखे आवत? अरे, मेहरारु-चोर अउरी गलत रस्ता पर चले वाला दुष्ट, पाप के भंडार, मंदबुद्धि अउरी कामी!"

784 सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर। 6.33a.S1
785 बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़॥ 6.33a.S2

"अरे दस कंधा वाला! जे बालि के एके बाण से मुआ देलन, का उ सामान्य आदमी हो सक ता? अरे कुजाति, अरे जड़! बीस गो आँख के होखत भी तू अंधा बाड़े, तोर जन्म के धिक्कार बा?"

786 समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा॥ 6.34.C8
787 जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥ 6.34.C9
फिर भगवान राम के प्रताप के याद करके, अंगद गुस्सा के रावण के सभा में दृढ़ता से पैर जमा के कहलन, "अरे मूरख! यदि तू हमार पैर हटा सकबे त राम लौट जईहन, हम सीता के हार जाईम।"

788 झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई॥ 6.34.C12
789 कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि कें परचारे॥ 6.35.C1
राक्षस पूरा बल से ढ़ेर उपाय लगा के अंगद के पैर उठावे खातिर झपटत बाड़न, लेकिन उनकरा से पैर हिलत तक नईखे।तब सिर नीचा करके उ अपना-अपना जगह पर लौट गईलन।अंगद के बल देखके सभ राक्षस हृदय से हार गईलन। तब अंगद के ललकार पर रावण खुदे उठ खड़ा होईल।

790 गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा॥ 6.35.C2
791 गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥ 6.35.C3
जईसे पैर पकड़े खातिर उ हाथ बढ़ईलस, अंगद बोललन, "हे रावण! हमार चरण पकड़े से तोर उद्धार ना होई। अरे मूरख! तू जाके भगवान राम के चरण काहे नईखस पकड़त?" सुनके रावण मने-मने बहुते लज्जित होके लौट गईल।

792 रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज। 6.35a.D1
793 पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज॥ 6.35a.D2
ऐह ढ़ंग से दुश्मन के बल के नाश करके, बल के भंडार अंगद खुश होके राम के पास पहुँच के उनकर चरण पकड़ लेलन। उनकर देह पुलकित बा, आँख से आनंद के आँसू बह रहल बा।

794 रिपु के समाचार जब पाए। राम सचिव सब निकट बोलाए॥ 6.39.C1
795 लंका बाँके चारि दुआरा। केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा॥ 6.39.C2
अंगद से दुश्मन के समाचार मिलते राम मंत्री लोग के सलाह खातिर बोलवलन अउरी कहलन, "लंका के चार गो बड़ा विकट केवाड़ी बा। ओकरा पर कईसे आक्रमण करल जाए, ई बात पर विचार करीं जा।"

796 करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपि कटकु बनावा॥ 6.39.C4
797 हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं॥ 6.39.C7
विचार कईला के बाद गहरा निश्चय करके सेना के चार गो दल बनावल गईल। सभ वीर खुश होके भगवान राम के चरण में सिर झुकावत रहन अउरी पर्वत सभ के शिखर लेके दौड़त रहन।

798 राम प्रताप प्रबल कपिजूथा। मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा॥ 6.42.C1
799 निज दल बिचल सुनी तेहिं काना। फेरि सुभट लंकेस रिसाना॥ 6.42.C6
भगवान राम के प्रताप से बलशाली भईल बंदर सभ के झुण्ड राक्षस सभ के मसले लगलन। रावण जब सुनलस कि ओकर सेना विचलित हो रहल बा, उ रण से भागत योद्धा सभ के खिसिया के लौटा देलस।

800 निसिचर अनी देखि कपि फिरे। जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे॥ 6.46.C5
801 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ु घेरा। नगर कोलाहलु भयउ घनेरा॥ 6.49.C9
राक्षस सभ के सेना आवत देख के बंदर लौट पड़लन अउरी उ वीर कटकटा के जहँवा-तहँवा भीड़ गईलन। उ खिसिया के दुर्गम किला के घेर लेलन, जेकरा से नगर में बहुते शोर मच गईल।

802 मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ु पुनि छेंका आइ। 6.49.D1
803 उतर्यो बीर दुर्ग तें सन्मुख चल्यो बजाइ॥ 6.49.D2
सबेरे मेघनाद जब सुनलस कि किला घेर लेवल गईल बा त उ वीर किला से उतरल अउरी डंका बजइते सामने आ गईल।

804 दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर। 6.50.D1

805 सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर॥ 6.50.D2

उ सबके दस-दस बाण मरलस, जेकरा से वीर बंदर धरती पर गिर पड़लन। बलवान अउरी धीर मेघनाद तब शेर जईसन दहड़ते हुए गरजे लागल।

806 आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ। 6.52.D1
807 लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ॥ 6.52.D2

तब लक्ष्मण भगवान राम के अग्या लेलन अउरी खिसिया के, अंगद आदि बंदर सभ के साथे, हाथ में धनुष-बाण लेके मेघनाद से युद्ध करे चल पड़लन।

808 लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा। भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा॥ 6.54.C2
809 बीरघातिनी छाड़िसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी॥ 6.54.C7

लक्ष्मण अउरी मेघनाद दूनों योद्धा बहुते खिसिया के एक-दूसरा से युद्ध करे लगलन। आपन प्राण संकट में जानके मेघनाद वीर सभ के नाश करेवाली 'वीरघातिनी' शक्ति चलवलस। तेज से भरल उ शक्ति लक्ष्मण के सीना में जा लागल, जेकरा से उ मूर्च्छित हो गईलन।

810 ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर। लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर॥ 6.55.C5
811 तब लगि लै आयउ हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना॥ 6.55.C6

ओने सभ जगह रहेवाला, ब्रह्म, अजेय, सभ लोक के मालिक अउरी करुणा के खान रामचन्द्र पूछे लगलन, "लक्ष्मण केने बाड़न?" तब तक हनुमान उनकरा लेके आ गईलन। छोट भाई के मूर्च्छित देखके भगवान बड़ा दुखी हो गईलन।

812 जामवंत कह बैद सुषेना। लंकाँ रहइ को पठई लेना॥ 6.55.C7
813 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता॥ 6.55.C8

जामवंत कहलन, "लंका में सुषेण वैद्य रहेलन, ओकरा लावे खातिर केकरा भेजल जाए?" तब हनुमान छोट भेष धरके लंका गईलन अउरी वैद्य सुषेण के उनकरा घर साथे तुरते उठा लईलन।

814 राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन। 6.55.D1
815 कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥ 6.55.D2

वैद्य सुषेण आके राम के चरणकमल में सिर झुकईलन। उ पर्वत अउरी औषधि के नाम बतईलन अउरी कहलन, "हे पवनपुत्र! उहाँ ई औषधि के लेवे जा।"

816 राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजनसुत बल भाषी॥ 6.56.C1
817 देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा॥ 6.58.C7

भगवान राम के चरणकमल के हृदय में रखके अउरी सभके ई आश्वासन देके, "हम औषधि लेके अभी आव तानी" पवनपुत्र हनुमान चल पड़लन। उहाँ पहुँच के उ पहाड़ के देखलन, लेकिन उ औषधि के पहचान ना सकलन। ऐहिसे उ एकदमे से पहाड़े के ही उखाड़ लेलन अउरी ओकरा लेके उ वापस चल पड़लन।

818 उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥ 6.61.C1
819 जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥ 6.61.C6

ओने भाई लक्ष्मण के दशा देखके राम सामान्य आदमी के जईसन दुखी होके विलाप करे लगलन, "यदि जनतीं कि जंगल में भाई के विछोह होई त हम बाबूजी के वचन के मान के जंगल ना अईतीं।"

820 प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर। 6.61.S1
821 आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस॥ 6.61.S2

भगवान के विलाप सुनके सभ बंदर व्याकुल हो गईलन। ओहि घड़ी हनुमान उहाँ अईसे अईलन, जईसे करुणरस में वीर रस आ गईल होखे।

822 तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥ 6.62.C2
823 यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥ 6.62.C5

तब वैद्य सुषेण तुरते उपचार कईलन, जेकरा से लक्ष्मण खुश होके उठ बईठलन। ई समाचार सुनके रावण बहुते दुःख के साथे आपन सिर बेर-बेर पीटे लागल।

824 ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा॥ 6.62.C6
825 कुंभकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा॥ 6.64.C2
बेचैन होके उ आपन छोट भाई कुम्भकर्ण के पास गईल अउरी तरह-तरह के उपाय करके ओकरा जगाके सभ बात बतईलस। मद से चूर अउरी युद्ध के उत्साह से भरल कुम्भकर्ण किला छोड़के बिना सेना के साथ लेले अकेले युद्ध खातिर चल पड़ल।

826 कुंभकरन कपि फौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचर धारी॥ 6.67.C7
827 देखी राम बिकल कटकाई। रिपु अनीक नाना बिधि आई॥ 6.67.C8
कुंभकर्ण बंदर सेना के तितर-बितर कर देलस। ई सुनके राक्षस-सेना भी उत्साह में आके दउड़ल। राम देखलन कि दुश्मन के तरह-तरह के सेना उनकर आपन सेना के व्याकुल कर देले बा।

828 तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा। धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा॥ 6.71.C4
829 बहु बिलाप दसकंधर करई। बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई॥ 6.72.C4
भगवान खिसिया के तेज बाण लेलन अउरी ओकरा से कुंभकर्ण के सिर धड़ से अलग कर देलन। रावण घोर विलाप करत भाई के सिर आपन हृदय से बेर-बेर लगावत रहे।

830 मेघनाद तेहि अवसर आयउ। कहि बहु कथा पिता समुझायउ॥ 6.72.C6
831 देखेहु कालि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई॥ 6.72.C7
उ अवसर पर मेघनाद उहाँ आईल अउरी ढ़ेरों कथा कहके आपन बाबूजी के समझावे लागल। उ बोललस, "कल हमार पराक्रम देखिह, अभी हम आपन ढ़ेर बड़ाई का करीं?"

832 एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना। चहुँ दुआर लागे कपि नाना॥ 6.72.C9
ऐह ढ़ंग से डींग मारत-मारत सबेर हो गईल। लंका के चारों दरवाजा पर बहुते बंदर युद्ध खातिर आ पहुँचलन।

833 मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ अकास। 6.72.D1
834 गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास॥ 6.72.D2

मेघनाद तब माया के रथ पर चढ़के आकाश में चल गईल अउरी जोर से हँसके गरजल, जेकरा से बंदर सभ के सेना डेरा गईल।

835 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥ 6.75.C8
836 जौं तेहि आजु बधें बिनु आवौं। तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥ 6.75.C13
तब रघुनाथ कहलन, "हे लक्ष्मण! जा, आज मेघनाद के युद्ध में जरुरे मुआ दिह। देवता लोग के डेराईल देखके हमरा बड़ा दुःख हो रहल बा।" लक्ष्मण बोललन, "हे भगवन! यदि आज ओकर वध कईले बिना लौट जाईब त हम राम के सेवक ना कहाईब।"

837 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा ॥ 6.76.C15
838 छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा ॥ 6.76.C16
कोसलपति राम के प्रताप के याद करके लक्ष्मण वीर जईसन अभिमान से बाण चढ़ाके ओकरा मेघनाद के ओरे छोड़लन, जवन ओकर छाती के बीच में जाके लागल। मरत घड़ी उ सभ कपट छोड़ देलस।

839 सुत बध सुना दसानन जबहीं। मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥ 6.77.C6
840 चलेउ निसाचर कटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥ 6.79.C1
आपन बेटा के मरे के समाचार सुनते रावण बेहोश होके धरती पर गिर पड़ल। होश में अईला पर रावण अपार चतुरंगिणी सेना के कईगो दल लेके युद्ध खातिर चल पड़ल।

841 इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मर्दै लाग भयउ अति क्रोधा ॥ 6.82.C5
842 पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं। यह खल खाइ काल की नाईं ॥ 6.82.C7
उ बहुते खिसिया के बंदर सेना के झपट के अउरी डपट के मसले लागल। व्याकुल हो के बंदर-भालू सभ भगवान राम के पास जाके दुहाई देलन, "हे भगवन! रक्षा करीं! रक्षा करीं! ई दुष्ट हमनिके काल के जईसन खईले जा रहल बा।"

843 बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर। 6.89.D1
844 द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर॥ 6.89.D2

तब सबकरा ओरे देखके राम गंभीर वचन बोललन, "हे वीर लोग! तू सभ बहुते थाक गईल बाड़ जा, ऐहिसे हमार अउरी रावण के द्वन्द्व युद्ध देखअ जा।"

845 दस दस बान भाल दस मारे। निसरि गए चले रुधिर पनारे॥ 6.92.C8
846 तीस तीर रघुबीर पबारे। भुजन्हि समेत सीस महि पारे॥ 6.92.C10

राम रावण के दसों सिर में दस-दस बाण मरलन, जवन आर-पार निकल गईल। ओकरा सिर सभ से खून के पनाला बह चलल। भगवान फिर तीस तीर चला के रावण के दसों सिर अउरी बीसों बाँह के काट के धरती पर गिरा देलन।

847 काटत बढ़हिं सीस समुदाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई॥ 6.102.C1
848 मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा॥ 6.102.C2

कटते रावण के सिर ओहि ढ़ंग से बढ़त रहे, जईसे लोभी के लोभ ओकर हर लाभ के बाद बढ़ेला। जब ढ़ेर श्रम के बादो दुश्मन मरत ना दिखल, भगवान विभीषण के ओरे देखलन।

849 उमा काल मर जाकीं ईछा। सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा॥ 6.102.C3
850 नाभिकुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें॥ 6.102.C5

शिव जी कह ताड़न, "हे पार्वती! जेकरा इच्छा करे भर से काल भी मर जाला, उ भगवान आपन सेवक विभीषण के प्रेम के परीक्षा ले रहल बाड़न।" विभीषण बोललन, "हे नाथ! रावण के नाभि में अमृत के वास बा, उ ओकरे बल पर जी रहल बा।"

851 खैंचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस। 6.102.D1
852 रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस॥ 6.102.D2

तब धनुष के कान तक खींच के, राम इकतीस बाण छोड़लन। उनकर बाण अईसे चलल जईसे उ काल के साँप होखे।

853 सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा॥ 6.103.C1
854 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा। तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा॥ 6.103.C3
एगो बाण नाभि के अमृतकुण्ड के सोख लेलस, अउरी बचल बाण ओकर सिर अउरी भुजा सभ में जाके लागल। ओकर धड़ के प्रचंड वेग से दौड़े के कारण धरती धँसे लागल। तब भगवान बाण मारके धड़ के दुगो टुकड़ा कर देलन।

855 गर्जेउ मरत घोर रव भारी। कहाँ रामु रन हतौं पचारी॥ 6.103.C4
मरत घड़ी भी रावण गरजते हुए बोलल, "राम कहँवा बाड़न? हम ललकार के उनकरा रण में मारब।"

856 तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन॥ 6.103.C9
857 बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा॥ 6.103.C11
मरत घड़ी ओकर तेज भगवान के मुँह में समा गईल। ई देखके शिव अउरी ब्रह्मा बड़ा खुश होईलन। देवता अउरी ऋषि-मुनि फूल बरसावे लगलन अउरी बोललन, "हे कृपालु! राउर जय होखे। हे मुकुन्द भगवान, राउर जय होखे।"

858 कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुर बृंद। 6.103.D1
859 भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद॥ 6.103.D2
भगवान राम किरपा के बरखा से देवता लोग के निर्भय कर देलन। बंदर-भालू सब बहुत खुश होईलन अउरी सुख के धाम मुकुन्द रामचन्द्र के जय-जयकार करे लगलन।

860 सब मिलि जाहु बिभीषन साथा। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा॥ 6.106.C3
861 सादर सिंहासन बैठारी। तिलक सारि अस्तुति अनुसारी॥ 6.106.C6
रघुकुल के नाथ राम कहलन, "तू सभ विभीषण जी के साथे जाके उनकर राजतिलक करअ जा।" सभ विभीषण के आदर से लंका के सिंहासन पर बईठा के तिलक करके उनकर स्तुति कईलन।

862 पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना॥ 6.107.C1
863 समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु॥ 6.107.C2
फिर भगवान हनुमान के बोलाके कहलन, "लंका जाके सीता के सभ समाचार सुनाव अउरी उनकर कुशलता के समाचार लेके लौट आव।"

864 सब बिधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा॥ 6.107.C7
सीता के पास पहुँच के हनुमान बोललन, "हे माई! कोसलपति भगवान राम सभ ढ़ंग से कुशल बाड़न, उ युद्ध में दस गो सिरवाला रावण के जीत ले ले बाड़न।"

865 सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत। 6.107.D1
866 सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत॥ 6.107.D2
सीता कहली, "हे बेटा! सुनअ! सभ सद्गुण तोहरा हृदय में बसे अउरी लक्ष्मण साथे कोसलपति भगवान तोहरा पर सदा खुश रहस।"

867 अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता॥ 6.108.C1
868 तब हनुमान राम पहिं जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई॥ 6.108.C2
"हे तात! अब तू उहे उपाय करअ जेकरा से हम श्याम अउरी कोमल देहवाला आपन मालिक के देख सकीं।" तब राम के पास जाके हनुमान सीता के कुशलता के समाचार सुनअवलन।

869 सुनि संदेसु भानुकुलभूषन। बोलि लिए जुबराज बिभीषन॥ 6.108.C3
870 मारुतसुत के संग सिधावहु। सादर जनकसुतहि लै आवहु॥ 6.108.C4
समाचार सुनके सूर्यवंश के भूषण राम युवराज अंगद अउरी विभीषण के बोला के कहलन, "तू पवनपुत्र हनुमान के साथे जा जा अउरी सीता के इहाँ आदर के साथे ले आव।"

871 सीता प्रथम अनल महुँ राखी। प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी॥ 6.108.C14
सीता के अईला पर उनकर असली रुप के परगट करे खातिर राम उनकरा पहिले आग में घुसे खातिर कहलन।

872 जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं॥ 6.109.C7
873 तौ कृसानु सब कै गति जाना। मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना॥ 6.109.C8
तब सीता बोलली, "यदि मन, कर्म अउरी वचन से हमार हृदय में श्री रघुवीर के छोड़के कवनों दूसर के भाव नईखे त, आग के देवता जवन सभ कोई के मन के गति जानेलन, हमरा खातिर चंदन जईसन शीतल हो जाई।"

874 धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो। 6.109.X13
875 जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो॥ 6.109.X14
तब आग के देवता देह धरके, वेद अउरी संसार में प्रसिद्ध साँचों के सीता के हाथ राम के अईसे सौंप देलन, जईसे क्षीरसागर विष्णु के लक्ष्मी सौंपले रहन।

876 सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली। 6.109.X15
877 नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली॥ 6.109.X16
सीता राम के बायाँ ओरे विराज के अईसन लागत रही, जईसे नया खिलल नील-कमल भीरी सोना के कमल के कली शोभा देत होखस।

878 जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार। 6.109b.D1
879 देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार॥ 6.109b.D2
सीता साथे भगवान राम के ना मिटेवाला अउरी बड़ी भारी शोभा देखके बंदर-भालू खुश हो गईलन अउरी सुख के समुन्दर रघुनाथ के जय-जयकार करे लगलन।

880 अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस। 6.112.D1
881 सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस॥ 6.112.D2
छोट भाई लक्ष्मण अउरी जानकी के साथे परम कुशल रामचंद्र के शोभा देखके देवता के राजा इन्द्र मने-मने खुश होके उनकर स्तुति करे लगलन।

882 अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल। 6.113.D1
883 काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥ 6.113.D2
उ बोललन, "हे कृपालु! अब हमरा ओरे किरपा से देखके अग्या दीहीं कि हम का सेवा करीं?" इन्द्र के प्रिय वचन सुनके गरीब पर दया करेवाले भगवान ई बोललन,

884 सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निसचरन्हि जे मारे॥ 6.114.C1
885 मम हित लागि तजे इन्ह प्राना। सकल जिआउ सुरेस सुजाना॥ 6.114.C2
"सुनअ देवता के राजा इन्द्र! हमार जवन बंदर-भालू राक्षस सभ से मारल गईलन, उ सभ धरती पर पड़ल बाड़न। ई सभ हमरा हित खातिर आपन जान देले बाड़न। हे सुजान इन्द्र! इनकरा जीया दीहीं।"

886 प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई। केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई॥ 6.114.C4
887 सुधा बरषि कपि भालु जिआए। हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए॥ 6.114.C5
जवन राम तीनों लोक के मुआ के फिर से जीया सकेलन, उ खाली इन्द्र के ऐकर श्रेय देलन। इन्द्र अमृत बरसा के बंदर-भालू के जीया देलन। उ सभ खुश होके उठलन अउरी भगवान के पास अईलन।

888 राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुकुत निसाचर झारी॥ 6.114.C9
889 खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनिबर पाव न॥ 6.114.C10
भगवान राम के जईसन गरीब के भला करेवाला अउरी के बा, उ राक्षस तक के मुक्ति दे देलन। दुष्ट, पाप के घर अउरी कामी रावण के जवन गति भगवान देलन, उ श्रेष्ठ मुनि भी ना पईलन।

890 सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान। 6.114a.D1
891 देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान॥ 6.114a.D2
फूल के वर्षा करके सभ देवता आपन-आपन सुघर विमान में लौट के चल गईलन। तब ठीक अवसर जानके सुजान शिव जी भगवान राम के पास अईलन।

892 परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि। 6.114b.D1
893 पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि॥ 6.114b.D2
बड़ा प्रेम से दूनों हाथ जोड़के, आपन कमल जईसन अँखियाँ में पानी भरके अउरी पुलकित होके, त्रिपुरारी शिव जी गदगद बोली से राम के विनती करे लगलन।

894 करि बिनती जब संभु सिधाए। तब प्रभु निकट बिभीषनु आए॥ 6.116.C1
895 दीन मलीन हीन मति जाती। मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती॥ 6.116.C4

जब शिव जी स्तुति करके चल गईलन, विभीषण भगवान के पास आके बोललन, "हे भगवन! रउआ हम गरीब, पापी, बुद्धि अउरी जाति से हीन पर बहुत तरीका से किरपा कईले बानी।"

896 सुनत बचन मृदु दीनदयाला। सजल भए द्वौ नयन बिसाला ॥ 6.116.C8
विभीषण के कोमल वचन सुनके गरीब पर दया करेवाले राम के दूनों बड़ अँखियाँ में पानी भर आईल।

897 बहुरि बिभीषन भवन सिधायो। मनि गन बसन बिमान भरायो॥ 6.117.C3
898 चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन। गगन जाइ बरषहु पट भूषन ॥ 6.117.C5
फिर विभीषण आपन महल में गईलन अउरी उ मणि अउरी कपड़ा के ढ़ेर से पुष्पक विमान के भरवईलन। राम कहलन, "हे दोस्त! विमान के आकाश में ले जाके ई कपड़ा अउरी गहना के नीचे बरसा द।"

899 भालु कपिन्ह पट भूषन पाए। पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए ॥ 6.118.C1
जब भालू अउरी बंदर सभ के कपड़ा अउरी गहना मिलल, ओकरा पहिन-पहिन के उ रघुनाथ के पास अईलन।

900 तुम्हरें बल मैं रावनु मार्यो। तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्यो॥ 6.118.C4
901 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू। सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू॥ 6.118.C5
भगवान कहलन, "हम तोहरा बले से रावण के मरनी अउरी विभीषण के राजतिलक कईनी। अब तू सभ अपना-अपना घरे लौट जा। हमरा के याद करत रईह अउरी केहु से डेरईह मत।"

902 प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि। 6.118a.D1
903 हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि॥ 6.118a.D2
भगवान के अग्या मान के सभ बंदर-भालू राम के रुप के आपन हृदय में रख के ढ़ेरों तरीका से विनती करके खुशी अउरी दुख के साथे आपन-आपन घरे लौट चललन।

904 कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान। 6.118b.D1

905 सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान॥ 6.118b.D2
906 कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि। 6.118c.D1
907 सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि॥ 6.118c.D2
बंदर के राजा सुग्रीव, नील, जामवंत, अंगद, नल, हनुमान, विभीषण अउरी दूसर बलशाली बंदर सेनापति प्रेम के वश कुछो कह ना पावत रहन। उ सभ आँख में पानी भरके बिना पलक झपकईले खाली रामचंद्र जी के ओरे देखत रहन।

908 अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई॥ 6.119.C1
909 सिंहासन अति उच्च मनोहर। श्री समेत प्रभु बैठे ता पर॥ 6.119.C4
उनकर गहरा प्रेम देखके रघुनाथ सबके पुष्पक विमान में बईठा लेलन। विमान में एगो ऊँचा मन के हरेवाला सिंहासन रहे, ओह पर सीता साथे राम बईठलन।

910 रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर। कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर॥ 6.119.C6
911 कह रघुबीर देखु रन सीता। लछिमन इहाँ हत्यो इँद्रजीता॥ 6.119.C9
सुघर विमान बहुत तेजी से चल देलस, जेकरा देखके देवता खुश होके फूल के वर्षा करे लगलन। राम बोललन, "हे सीते! नीचे लड़ाई के मैदान के देखअ। लक्ष्मण मेघनाद के इहें मरले रहन।"

912 हनूमान अंगद के मारे। रन महि परे निसाचर भारे॥ 6.119.C10
913 कुंभकरन रावन द्वौ भाई। इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई॥ 6.119.C11
"हनुमान अउरी अंगद के मारल बड़-बड़ राक्षस ई लड़ाई के मैदान में पड़ल बाड़न। देवता अउरी मुनि लोग के दुःख देवेवाला रावण अउरी कुंभकर्ण दूनों भाई भी इहें मारल गईलन।"

914 इहाँ सेतु बाँध्यों अरु थापेउँ सिव सुख धाम। 6.119a.D1
915 सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम॥ 6.119a.D2
"इहाँ समुन्दर पर पुल बनल अउरी सुख के धाम शिव जी के स्थापना करल गईल।" ई कहके सीता साथे राम महादेव के प्रणाम कईलन।

916 तुरत बिमान तहाँ चलि आवा। दंडक बन जहँ परम सुहावा॥ 6.120.C1

917 सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आए जगदीसा ॥ 6.120.C3
विमान जल्दीये उहाँ जा पहुँचल, जहँवा बहुत सुंदर दंडकवन रहे। सभ ऋषि लोग से आशीर्वाद लेके संसार के ईश्वर भगवान राम चित्रकूट पहुँचलन।

918 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा ॥ 6.120.C7
919 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि ॥ 6.120.C9
उ फिर सीता के तीर्थ के राजा प्रयाग देखईलन, जेकरा देखला भर से करोड़ों जन्म के पाप भाग जाला। फिर बहुते पवित्र अयोध्या नगरी के देखलन, जवन तीनों तरीका के ताप अउरी भवरोग के नाश करेवाली हई।

920 प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥ 6.121.C1
921 भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु। समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥ 6.121.C2
भगवान तब हनुमान के समझा के कहलन, "तू ब्रह्मचारी के भेष में अयोध्या जा। भरत के हमार कुशलता सुनाके अउरी उनकर समाचार लेके लौट आव।"

922 समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान। 6.121a.D1
923 बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान ॥ 6.121a.D2
जवन बुद्धिमान लोग श्री रघुनाथ के लड़ाई में विजय के चरित्र सुनेलन, उनका भगवान हमेशा विजय, विवेक अउरी ऐश्वर्य देवेलन।

उत्तरकाण्ड

924 रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग। 7.0a.D1
925 जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग॥ 7.0a.D2

राम के वनवास से लौटे के समय के खाली एगो दिन बच गईल रहे, जेकरा से अयोध्या के लोग बड़ा अधीर हो रहल बाड़न। भगवान के वियोग में दुबर होखल औरत अउरी आदमी जेने-तेने सोच-विचार कर रहल बाड़न।

926 राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत। 7.1a.D1
927 बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥ 7.1a.D2

राम के विरह जईसन समुन्दर में भरत के मन डूबल जात रहे। ओहि घड़ी पवनपुत्र हनुमान ब्राह्मण के भेष में अईसे अईलन, जईसे डूबत के बचावे खातिर कवनों नाव आईल होखे।

928 देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जल बरषेउ॥ 7.2.C1
929 रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता। आयउ कुसल देव मुनि त्राता॥ 7.2.C4

हनुमान भरत के देखते बहुत खुश हो गईलन। उनकर देह पुलकित हो गईल, दूनों आँख से आँसू बहे लागल। उ कहे लगलन, "सज्जन लोग के सुख देवेवाले अउरी देवता अउरी मुनि लोग के रक्षा करेवाले, भगवान राम सकुशल लौट के आ गईल बाड़न।"

930 हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए॥ 7.3.C1

भरत खुश होके अयोध्यापुरी में अईलन अउरी उ गुरु के सभ समाचार सुनईलन।

931 सुनत सकल जननीं उठि धाईं। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाईं॥ 7.3.C3
932 समाचार पुरबासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरषि सब धाए॥ 7.3.C4

समाचार सुनके सब माई दौड़ल अईली। भरत भगवान के कुशल कहके सबके समझवलन। जब नगर के लोगन के ई खबर मिलल, सभ औरत-आदमी खुश होके दौड़ पड़लन।

933 आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान। 7.4a.D1
934 नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥ 7.4a.D2
जब किरपा के समुन्दर भगवान राम लोगन के आवत देखलन, उ पुष्पक विमान के नगर के पास धरती पर उतरलन।

935 आए भरत संग सब लोगा। कृस तन श्रीरघुबीर बियोगा॥ 7.5.C1
936 बामदेव बसिष्ट मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक॥ 7.5.C2
भरत के साथे अईलन सभ लोग के देह भगवान के वियोग में दुबर हो गईल रहे। वामदेव, वशिष्ठ अउरी दूसर बड़ ऋषि-मुनि लोग के देखके भगवान आपन धनुष-बाण धरती पर रख देलन।

937 धाइ धरे गुर चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह॥ 7.5.C3
938 सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा। धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा॥ 7.5.C5
छोट भाई लक्ष्मण साथे दौड़ के अउरी बहुते पुलकित होके उ गुरु के चरणकमल पकड़ लेलन। धर्म के धुरी के धारण करेवाले रघुकुल के मालिक रामचंद्र सभ ब्राह्मण के सिर नवईलन।

939 गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज॥ 7.5.C6
940 परे भूमि नहिं उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए॥ 7.5.C7
फिर भरत भगवान के उ चरणकमल पकड़ लेलन, जेकर वंदना देवता, मुनि, शंकर अउरी ब्रह्मा भी करेलन। भरत धरती पर गिर पड़लन, उ उठईला से भी नईखन उठत। तब किरपा के सागर राम जबरदस्ती उनकरा उठाके हृदय से लगा लेलन।

941 पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ। 7.5.D1
942 लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥ 7.5.D2
फिर बड़ा खुशी से भगवान शत्रुघ्न के हृदय से लगाके मिललन। भरत अउरी लक्ष्मण दूनों भाई भी बड़ा प्रेम से मिललन।

943 अमित रूप प्रगटे तेहि काला। जथा जोग मिले सबहि कृपाला॥ 7.6.C5
944 कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी॥ 7.6.C6
ओह घड़ी किरपा करेवाले राम अनगिनत रुप में परगट हो गईलन अउरी सब कोई से जेकरा खातिर जवन योग्य रहे ओइसहीं एके साथे मिललन। राम सभ औरत-आदमी के किरपा के नजर से देखके शोक से छुटकारा कर देलन।

945 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए। मुनि पद लागहु सकल सिखाए॥ 7.8.C5
946 गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे॥ 7.8.C6
फिर उ सभ दोस्त के बोलवलन अउरी समझईलन कि मुनि के चरण में पड़ जा। भगवान कहलन, "गुरु वशिष्ठ हमनिके कुल के पूज्य हवन, इनकरा किरपा से ही लड़ाई के मैदान में हमनिके राक्षस सभ के मरनी हई जा।"

947 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहँ बेरे॥ 7.8.C7
फिर उ गुरु से कहलन, "हे मुनि! सुनि, ई सभ हमार दोस्त हवन, जे युद्ध जईसन समुन्दर में हमरा खातिर जहाज जईसन साबित होईलन।"

948 प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गए भवानी॥ 7.10.C1
949 ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा॥ 7.10.C2
शिव जी कहत रहन, "हे पार्वती! ई सोच के कि माई कैकेयी बहुत लज्जित बाड़ी, भगवान सबसे पहिले उनकर महल में गईलन। उनकरा समझा-बुझाके बहुत सुख देलन, फिर उ आपन महल के गईलन।"

950 गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई। आजु सुघरी सुदिन समुदाई॥ 7.10.C4
गुरु वशिष्ठ ब्राह्मण लोग के बोलवईलन अउरी कहलन, "आज शुभ घड़ी, सुंदर दिन अउरी दूसर सभ शुभ करेवाला योग ह।"

951 सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद। 7.11c.D1
952 चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद॥ 7.11c.D2

काकभुशुण्डि कहत बाड़न, "हे पक्षी के राजा गरुड़! उ अवसर पर ब्रह्मा, शिव, ऋषि-मुनि लोग के झुण्ड अउरी विमान पर चढ़के सभ देवता, सुख के कंद रामचन्द्र के देखे खातिर अईलन।"

953 प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिब्य सिंघासन मागा॥ 7.12.C1
954 रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥ 7.12.C2
गुरु तब राम के बोलवलन, उनकरा देखके मन में प्रेम उमड़ आईल। उ तुरंते एगो दिव्य सिंहासन मँगवईलन, जेकर तेज सूरज के जईसन रहे। ओकर सुन्दरता के वर्णन ना कईल जा सके। ब्राह्मण सभ के सिर नवाके रामचन्द्र ओकरा पर बईठ गईलन।

955 प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥ 7.12.C5
956 सुत बिलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी॥ 7.12.C6
सबसे पहिले गुरु वशिष्ठ तिलक कईलन, फिर उ सभ ब्राह्मण लोग के तिलक करे के अग्या देलन। बेटा के राजसिंहासन पर देखके सभ माई बहुत खुश होईली जा अउरी उ बार-बार आरती उतरली जा।

957 बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर। 7.13b.D1
958 बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥ 7.13b.D2
काकभुशुण्डि कहत बाड़न, "हे गरुड़! सुनी, ओह घड़ी शिव जी रघुवीर के पास अईलन। उनकर देह पुलकित हो गईल उ गदगद बोली से स्तुति करे लगलन।"

959 बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग। 7.14a.D1
960 पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥ 7.14a.D2
"हे श्रीपते! हम बेर-बेर इहे वर माँग तानी कि हमरा राउर चरणकमल के स्थिर भक्ति अउरी राउर भक्त लोग के सत्संग हमेशा मिले। रउआ खुश होके हमरा इहे दीहीं।"

961 ब्रह्मानंद मगन कपि सब कें प्रभु पद प्रीति। 7.15.D1
962 जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥ 7.15.D2
सभ बंदर भगवान के चरण में प्रेम के चलते ब्रह्मानंद में मग्न बाड़न। दिन जईते कोई ना जानल, ऐह ढ़ंग से छह महीना बीत गईल।

963 तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिरु नाए॥ 7.16.C2
तब राम सभ दोस्त के बोलईलन। आके सभ आदर से सिर नवईलन।

964 परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥ 7.16.C3
965 तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई॥ 7.16.C4
बड़ा प्रेम से भगवान उनकरा अपना भीरी बइठईलन अउरी भक्त लोग के सुख देवेवाला कोमल वचन बोललन, "तू हमार बड़ी सेवा कईल, तोहर मुँहे पर तोहर बड़ाई कईसे करीं।"

966 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे॥ 7.16.C5
967 सब कें प्रिय सेवक यह नीती। मोरें अधिक दास पर प्रीती॥ 7.16.C8
"हमरा हित खातिर तू घर अउरी दूसर सुख के छोड़ देहल, जेकरा से तू हमरा बहुते प्रिय बाड़अ। सेवक त सबके प्रिय लागेलन, ई स्वाभाविक बा, लेकिन हमरा त उनकरा पर खास प्रेम बा।"

968 तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥ 7.17.C5
तब भगवान उनकरा खातिर रंग-बिरंगा बढ़िया सुंदर कपड़ा-गहना मंगवईलन।

969 जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ। 7.17a.D1
970 हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ॥ 7.17a.D2
जामवंत अउरी नील आदि सभके राम खुद गहना अउरी कपड़ा पहनईलन। उ सभ हृदय में भगवान के रुप के रखके अउरी उनकर चरण में सिर नवा के अपना-अपना घरे चल देलन।

971 तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना॥ 7.19.C7
972 दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा॥ 7.19.C8
तब बंदर के राजा सुग्रीव के चरण पकड़ के हनुमान ढ़ेर तरीका से विनती कईलन अउरी कहलन, "हे देव! हमरा दस दिन रघुनाथ जी के चरण के सेवा में रहे के अग्या दीहीं, फिर हम आके राउर चरण के देखब।"

973 पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥ 7.19.C9
सुग्रीव बोललन, "हे पवनपुत्र! तू पुण्य के राशि बाड़अ। जा,किरपा के धाम रामचन्द्र के सेवा करअ।"

974 पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा॥ 7.20.C1
975 तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता॥ 7.20.C3
फिर किरपा करेवाले राम निषाद के राजा गुह के बोलाके उनकरा गहन-कपड़ा प्रसाद के रूप में दिहलन अउरी कहलन, "तू हमार दोस्त अउरी भरत के जईसन भाई हव। अयोध्यापुरी हमेशा आवत-जात रईह।"

976 राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥ 7.20.C7
रामचंद्र के राजा होईला पर तीनों लोक में लोग खुश हो गईलन। उनकर सभ दुःख अउरी शोक जात रहल।

977 बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग। 7.20.D1
978 चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥ 7.20.D2
सभ लोग आपन-आपन वर्ण अउरी आश्रम के धर्म के अनुसार रहत रहन। वेद के बतावल रास्ता पर चलके उ हमेशा सुख पावत रहन। उनकरा ना डर बा, ना शोक बा अउरी ना ही कवनों रोग।

979 राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं। 7.21.D1
980 काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥ 7.21.D2
काकभुशुण्डि कहत बाड़न, "हे पक्षी के राजा गरुड़! सुनी, राम के राज में सभ जड़-चेतन जगत में काल, कर्म, स्वभाव अउरी गुण सभ से पैदा होईल दुःख केकरो ना सतावे।"

981 भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥ 7.22.C1
982 राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥ 7.22.C6
कोसलपुरी में राम सात समुन्दर के करधनी वाली धरती के एके गो राजा बाड़न। रामराज्य के सुख अउरी समृद्धि के वर्णन शेष अउरी सरस्वती भी ना कर सकेलन।

983 सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥ 7.22.C7
984 ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥ 7.23.C6
सभ आदमी-औरत उदार बाड़न, परोपकारी बाड़न, ब्राह्मण के चरण के सेवक बाड़न। इहाँ के धरती हमेशा खेती से भरल रहत बाड़ी। त्रेतायुग में सतयुग जईसन वातावरण हो गईल।

985 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती॥ 7.25.C3
986 हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा॥ 7.25.C4
राम आपन भाई सभ से बहुत प्रेम रखेलन अउरी उनकरा कई ढ़ंग से नीति सिखावेलन। नगर के लोग खुश रहेलन, जवन देवता सभ के भी मिलल मुश्किल होखे, अईसन सुख भोगत रहन।

987 दुइ सुत सुन्दर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥ 7.25.C6
988 दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर॥ 7.25.C7
सीता लव अउरी कुश दूगो बेटा के जन्म देली, जिनकर वेद-पुराण वर्णन कईले बा। दूनों भाई बड़ योद्धा, विनम्र, गुण के धाम अउरी बहुत सुघर बाड़न, जईसे राम के छाया ही होखस।

989 ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार। 7.25.D1
990 सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार॥ 7.25.D2
जवन ज्ञान, वाणी अउरी इन्द्रिय से परे अउरी अजन्मा बाड़न, माया, मन अउरी गुण से परे बाड़न, उहे सच्चिदानंद भगवान बढ़िया मानव-लीला करत बाड़न।

991 गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा। मैं सब कही मोरि मति जथा॥ 7.52.C1
992 राम चरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनै पारा॥ 7.52.C2
शिव जी कहत बाड़न, "हे पार्वती! हम तोहरा ई निर्मल कथा आपन बुद्धि के अनुसार कहनी हईं। रामचंद्र जी के चरित्र सौ करोड़ यानी अपार बा। वेद अउरी शारदा भी ओकर वर्णन करे में समर्थ नईखन।"

993 राम अनंत अनंत गुनानी। जन्म कर्म अनंत नामानी॥ 7.52.C3

994 बिमल कथा हरि पद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी॥ 7.52.C5
राम अनंत बाड़न, उनकर गुण अनंत बा, जन्म कर्म अउरी नाम भी अनंत बा। ई पवित्र कथा भगवान के परम पद के देवेवाला ह। सुने से स्थाई भक्ति मिलेला।

995 भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा॥ 7.53.C3
996 राम कथा गिरिजा मैं बरनी। कलि मल समनि मनोमल हरनी॥ 7.129.C1
जे भवसागर के पार जाईल चाह ताड़न, ओकरा खातिर राम-कथा एगो मजबूत नाव के तरह बा। शिव जी कहत बाड़न, "हे गिरिजे! हम कलियुग के पाप के नाश अउरी मन के गंदगी दूर करेवाली रामकथा के वर्णन कईनी हईं।"

997 रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं। 7.130.X13
998 कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं॥ 7.130.X14
जवन आदमी रघुवंश के भूषण रामचंद्र जी के ई चरित्र कहेलन, सुनेलन अउरी गावेलन, उ कलियुग के पाप अउरी मन के गंदगी के धो के बिना कवनों मेहनत के, भगवान राम के परमधाम के चल जालन।

999 सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै। 7.130.X15
1000 दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै॥ 7.130.X16
जवन आदमी पाँच-सात चौपाई के भी मनोहर जानके आपन हृदय में धर लेवेलन, ओकर भी अविद्या से उपजे वाला पाँच ढ़ंग के कष्टकर विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर) के रामचंद्र जी हर लेवेलन।

1001 सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो। 7.130.X17
1002 सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को॥ 7.130.X18
तुलसीदास कहत बाड़न, "सुघर, सुजान, कृपानिधान अउरी जे अनाथ पर प्रेम करेलन, अईसन त खाली भगवान राम हीं बाड़न। इनकरा जईसन निस्वार्थ भलाई करेवाला अउरी मोक्ष देवेवाला दूसर के बा?"

1003 जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ। 7.130.X19
1004 पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ॥ 7.130.X20

जेकर तनकि-सी कृपा से हम कम बुद्धि तुलसीदास भी परम शांति पईनी, उ भगवान राम के जईसन कोई अउरी नईखे।

1005 मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर। 7.130a.D1
1006 अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर॥ 7.130a.D2

हे रघुवीर! हमरा जईसन ना त कोई गरीब बा अउरी ना ही रउआ जईसन कोई गरीब के भलाई करेवाला बा। अईसन विचार के हे रघुवंश के मणि! हमार जीये-मरे के भयानक दुःख के हर लीहीं।

1007 कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम। 7.130b.D1
1008 तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥ 7.130b.D2

जईसे कामी आदमी के औरत प्रिय लागेली, लोभी के धन प्यारा लागेला, हे रघुनाथ! रउआ हमरा ओईसे हीं हमेशा प्रिय लागत रहीं।

श्री रामायण जी की आरती

आरति श्री रामायन जी की। कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिसारद ॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥1 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस ॥
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सब ही की ॥2 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की ॥3 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ॥
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की ॥4 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

ई रामायण जी के आरती ह जवन सीतापति राम के सुंदर अउरी मधुर कीर्ति ह।

ई आरती के ब्रह्मादि देव,ऋषि नारद, बहुते परम विज्ञानी वाल्मीकि, शुकदेव जी, सनकादि, शेषनाग अउरी सरस्वती गावेलन अउरी जिनकर जस के वर्णन हनुमान जी बड़ा सुंदर ढ़ंग से करेलन, उहे रामायण जी के आरती हम करत बानी ।।1।।

जेकरा में चारों वेद,अठ्ठारह पुराण,छहों शास्त्र अउरी सभ ग्रंथ के सार भरल बा, जवन मुनि लोग के धन अउरी संत लोग के सबकुछ ह अउरी जेकरा में सभ के सारांश अउरी सहमति बा, अईसन हम रामायण जी के आरती करत बानी ।।2।।

जेकरा शिव अउरी पार्वती जी हमेशा गावेलन, जिनकर ज्ञानी मुनि लोग में बड़ अगस्त्य जी अउरी व्यास अउरी दूसर श्रेष्ठ कवि लोग बखान कईले बाड़न, अउरी जवन कागभुशुण्डी जी अउरी गरुड़ जी के हृदय में हमेशा रहेलन, अईसन श्रीराम के रामायण के हम आरती करत बानी ।।3।।

ई आरती कलियुग के विषय वासना के रस के स्वाद से हमनिके मुक्त करेवाली बाड़ी, मुक्ति जईसन युवती के सुघर सिंगार ह, यानि बाहरी आडम्बर से मुक्त करके महान अंदर के सुंदरता देवेवाली बाड़ी अउरी सभ रोग से मुक्त करेवाली अमृत जईसन बूटी हई। तुलसीदास जी कहत बाड़न- अईसन आरती हर ढ़ंग से हमार माई-बाप ह। ऐहिसे हम रामायण जी के आरती करत बानी ।।4।।

श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख कर कञ्ज पद कञ्जारुणं ॥1॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरं।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥2॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनं।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चंद दशरथ नन्दनं ॥3॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अङ्ग बिभूषणं।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥4॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनं ॥5॥

मनु जाहि राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥6॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥7॥

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अङ्ग फरकन लगे ॥

॥ सियावर रामचंद्र जी की जय॥

हे मन! किरपा करेवाले श्री रामचन्द्र जी के भजन करअ। उ संसार के जिये-मरे जईसन बड़ा कष्टदायक डर के दूर करेवाला बाड़न। उनकर आँख नया विकास कईल कमल के जईसन बा। मुँह-हाथ अउरी चरण भी लाल कमल के जईसन बा ।।1।।

उनकर सुंदरता के छटा अगणित कामदेव से बढ़के बा। उनकर देह नया-नीला-जल से भरल बादल जईसन सुंदर वर्ण के बा। पीताम्बर मेघ जईसन देह मानो बिजली जईसन चमक रहल बा। राजा जनक के बेटी सीतापति पावनरुप राम जी के हम नमस्कार करत बानी ।।2।।

हे मन! गरीब सभ के भाई, सूरज के जईसन तेज वाला, दानव अउरी राक्षस सभ के वंश के समूल नाश करेवाले, आनंद के भंडार कोशल देश जईसन आकाश में निर्मल चंद्रमा के जईसन दशरथ के पुत्र राम के भजन करअ ।।3।।

ललाट पर तिलक, अउरी हर अंग में सुंदर गहना शोभा दे रहल बा। उनकर भुजा घुटना तक लंबा बा। उ धनुष-बाण ले ले बाड़न, उ लड़ाई में खर-दूषण के जीत ले ले बाड़न ।।4।।

उ शिव जी, शेष अउरी मुनि लोग के मन के खुश करेवाले अउरी काम, क्रोध, लोभ अउरी दूसर दुश्मन सभ के नाश करेवाला बाड़न। तुलसीदास जी प्रार्थना करत बाड़न कि उ रघुनाथ जी हमार हृदय कमल में हमेशा वास करस ।।5।।

गौरी जी सीता जी के कहत बाड़ी - जेकरा में तोहर मन लग गईल बा, उ सुभावे से सुघर साँवर वर (रामचन्द्र जी) तोहरा मिलिहन। उ जवन दया के समुन्दर अउरी सुजान(सब कुछ जानेवाला) बाड़न, तोहर शील अउरी स्नेह के जान ताड़न ।।6।।

ऐह ढ़ंग से गौरी जी के आशीर्वाद सुनके जानकी जी के साथे सभ सखी हृदय में खुश होईली। तुलसीदास जी कहत बाड़न- भवानी जी के बेर-बेर पूज के सीता जी खुश मन से राजमहल के लौट चलली ।।7।।

गौरी जी के अनुकूल जानके सीता जी के हृदय में जवन खुशी होईल उ कहल ना जा सके। सुंदर मंगल के जड़ उनकर बाँया अंग फड़के लागल।।

किताब में आईल नाम के सूची

अंगद: बालि के बेटा
अगस्ति (अगस्त्य): एगो ऋषि
अच्छकुमारा (अक्षयकुमार): रावण के एगो बेटा
अज: ब्रह्मा
अत्रिः एगो ऋषि
अनंतः लक्ष्मण
अनुसुइया (अनसूया): अत्रि के मेहरारु
अवध: राम के जन्म के जगह
अवधपुर: अयोध्या
अवधपुरीः अयोध्या
इंद्रजित (इंद्रजीत): मेघनाद
इँद्रजीता (इंद्रजीत): मेघनाद
इंदिरा: विष्णु के मेहरारु लक्ष्मी
इंदु: चन्द्रमा
उमा: पार्वती

कपटमृग: कपट के हिरन मारीच
कुंभज: अगस्त्य ऋषि
कोसलपुर: कोसल के राजधानी अयोध्या
कोसला (कोसल): एगो देश के नाम जहँवा दशरथ के राज्य रहे
कुंभकरन (कुम्भकर्ण):
रावण के छोट भाई जवन छह महीना सुतत रहे अउरी एगो दिन जागत रहे
कुश: राम और सीता के बड़ बेटा
केवट: एगो नाविक जवन राम के गंगा पार करईलन
केवटु (केवट): केवट

कैकई (कैकेयी): दशरथ के छोटकी मेहरारु; भरत के माई
कैकयसुता (केकयसुता): कैकेयी
कौसल्या: दशरथ के पहिला मेहरारु; राम के माई
कौसिक (कौशिक): विश्वामित्र
खगेस (खगेश): पक्षी सभ के मालिक अउरी भगवान विष्णु के वाहन गरुड़
खर: एक राक्षस
खरदूषन (खर-दूषण): खर अउरी दूषण नाम के दूगो राक्षस
गनपति (गणपति): गणेश
गनेसु (गणेश): शिव अउरी पार्वती के बेटा, पहिला पूजा के अधिकारी देवता
गाधितनय: गाधि के बेटा विश्वामित्र
गिरिजा: पार्वती
गुहँ (गुह): ऋंगवेरपुर के राजा
गोदावरी: एगो नदी जेकरा तट पर पंचवटी नाम के जगह में राम आश्रम बनईलन
गौतम: एगो ऋषि
गौरि (गौरी): पार्वती

चतुरानन: ब्रह्मा
चित्रकूट: एगो पहाड़ जहँवा राम वास कईलन
चूड़ामनि (चूड़ामणि): सिर पर पहिने के गहना जवन सीता जी हनुमान के देहली
छीरसागर (क्षीरसागर): भगवान विष्णु अउरी देवी लक्ष्मी के रहे के जगह
जनकसुता: सीता
जटायू (जटायु): एगो गिद्ध जवन सीता के रावण से बचावे खातिर ओकरा से युद्ध कईलन अउरी आपन जान दे देलन
जनक: सीता के बाबूजी के नाम
जनकु (जनक): जनक
जानकी: सीता
जामवंत: ऋक्ष प्रजाति के राजा, राम के सेना में अनुभवी योद्धा अउरी सलाहकार

ताड़का: एगो राक्षसी के नाम
तुलसिदास (तुलसीदास): रामचरितमानस के रचयिता
तुलसी (तुलसीदास): तुलसीदास
त्रिकूट: तीन गो पहाड़ के समूह जेकरा पर लंका बसल रहे
त्रिपुरारि: शिव
त्रिसिरा (त्रिशिरा): एगो राक्षस
त्रिसिरारि (त्रिशिरारि): त्रिशिरा के दुश्मन राम
दसकंठ: रावण
दसकंध: रावण
दसकंधर: रावण
दसमुख: रावण
दसरथ: राम के बाबूजी
दससीसा (दससीस): रावण
दसानन: रावण
नंदिगावँ (नन्दिग्राम): अयोध्या के पास एगो जगह जहँवा भरत राम के वनवास के समय 14 बरिष रहलन
नभगेस (नभगेश): खगेस
नल: विश्वकर्मा के वानर बेटा जवन आपन भाई नील के साथे मिलके समुन्दर पर पुल बनईलन
नारदादि: नारद अउरी दूसर ऋषि
नील (नील): विश्वकर्मा के वानर बेटा जवन आपन भाई नल के साथे मिलके समुन्दर पर पुल बनवलन

पंचबटी (पंचवटी): गोदावरी के तट पर एगो जगह जहँवा राम आश्रम बनईलन, इहँवा से रावण सीता के हरण कईलस
पंपा: एगो सरोवर के नाम
परसुधर (परशुराम): विष्णु के छठवाँ अवतार

परसुराम (परशुराम): परशुराम
पवनकुमार: हनुमान
पवनतनय: हनुमान
पवनसुत: हनुमान
प्रभंजन: पवन
प्रभंजनसुत: हनुमान
प्रयाग: तीर्थस्थान जहँवा गंगा, यमुना अउरी सरस्वती के संगम मानल जाला
फनीस (फणीश): शेष
बसिष्ट (वसिष्ठ): एगो ऋषि, राम के गुरु, अयोध्या के राजगुरु
बसिष्ठ (वसिष्ठ): वसिष्ठ
बामदेव (वामदेव): एगो ऋषि
बालमीकि (वाल्मीकि): आदिकवि जवन रामायण के रचना कईलन
बालिः किष्किन्धा के राजा, सुग्रीव के बड़ भाई, अंगद के बाबूजी
बालिकुमारा (बालिकुमार): अंगद
बालितनय: अंगद
बाली (बालि): बालि
बिभीषन (विभीषण): रावण के छोट भाई जवन राम के भक्त रहन
बिभीषनु (विभीषण): विभीषण
बिरंचि: ब्रह्मा
बिराध (विराध): एक राक्षस
बिस्वामित्र (विश्वामित्र): एगो ऋषि जवन राम के आपन आश्रम के सुरक्षा खातिर साथे ले गईलन
बैनतेय (वैनतेय): गरुड़
बैदेही (वैदेही): सीता
ब्रह्म: परम सत्य, जगत के सार, परम तत्व
ब्रह्माः सृष्टि के बनावेवाला
भरतः कैकेयी के बेटा

भरतु (भरत): भरत
भरद्वाजः एगो ऋषि
भवानी: पार्वती
भुसुंडि (काकभुशुण्डि): कौवा के भेष में राम भक्त जवन गरुड़ के राम कथा सुनवलन
भौम: मंगलवार
मंथरा: कैकेयी की दासी
मंदोदरीं: रावण के मेहरारु मंदोदरी ने
मधुमासा (मधुमास): चैत्र मास
महेस (महेश): शिव
मारीचः एगो राक्षस; ताड़का के बेटा, रावण के मामा
मारीचा (मारीच): मारीच
मारुतसुत: हनुमान
मेघनादः रावण के बेटा
मैनाकः एगो पहाड़ जवन समुन्दर के अंदर रहत रहे

रमानिवासा (रमानिवास): राम
रमापति (राम): राम
रामचंद (रामचंद्र): राम
रामचरितमानसः तुलसीदास द्वारा राम के जीवन पर लिखल गईल महाकाव्य
रामा (राम): राम
रामु (राम): राम
रामेस्वर (रामेश्वर): शिव लिंग जेकर स्थापना राम कईलन
रावन (रावण): लंका के राजा, राम से दुश्मनी के कारण ओकर वध होईल
रावनु (रावण): रावण
रिपुदमनु (शत्रुघ्न): शत्रुघ्न
रिष्यमूक (ऋष्यमूक): एगो पहाड़ जहँवा सुग्रीव वास करत रहन

लंकाः एगो द्वीप जहँवा रावण शासन करत रहे
लंकिनी: रावण के दुआर के देखेवाली
लखन (लक्ष्मण): दशरथ के बेटा, सुमित्रा के बड़ बेटा जवन राम के साथे जंगल गईलन, राम के छोट भाई
लखनु (लक्ष्मण): लक्ष्मण
लछिमन (लक्ष्मण): लक्ष्मण
लव: राम अउरी सीता के छोट बेटा
लिंग: शिवलिंग

षडाननः शिव जी के बड़ बेटा कार्तिकेय जवन राक्षस तारकासुर के वध कईलन
संकर (शंकर): शिव
संपातीः जटायु के बड़ भाई
संभु (शंभु): शिव
सृंगबेरपुर (श्रृंगवेरपुर): एगो नगर के नाम जहँवा निषादराज गुह के शासन रहे
सृंगी (श्रृंगी): एगो ऋषि जवन राजा दसरथ खातिर पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवईलन, दसरथ के बेटी के पति
सतानंद (शतानन्द): राजा जनक के पुरोहित, गौतम अउरी अहल्या के बेटा
सत्रुहन (शत्रुघ्न): सुमित्रा के छोट बेटा, राम, लक्ष्मण, भरत के छोट भाई
सबरी (शबरी): एगो भीलनी औरत जवन राम के भक्त रही, जेकरा राम नवधा भक्ति के उपदेश देलन
सहसबाहु (सहस्रबाहु): हजार बाँह वाला एगो राजा जेकर वध परशुराम जी कईलन
सारदा (शारदा): सरस्वती
सिय (सीय): सीता
सियपति: राम
सिवा (शिवा): पार्वती
सीता: राम की मेहरारु
सीय: सीता

सुग्रीवः बालि के छोट भाई, राम के दोस्त
सुतीछन (सुतीक्ष्ण): ऋषि अगस्त्य के एगो शिष्य
सुमंत्रः दशरथ के एगो मंत्री
सुमंत्रु (सुमंत्र): सुमंत्र
सुपनखाँ (शूपर्णखा): रावण के बहिन
सुमित्राः दशरथ के मँझली मेहरारु, लक्ष्मण अउरी शत्रुघ्न के माई
सुरसाः सर्प सभ के माई
सुरेस (सुरेश): इन्द्र
सुषेन (सुषेण): लंका के वैद्य
सुषेना (सुषेण): सुषेण
सूपनखा (शूर्पणखा): शूर्पणखा
सौमित्रि: लक्ष्मण

हनुमंत: हनुमान
हनुमंता (हनुमंत): हनुमान
हनुमान: राम के अनन्य भक्त
हनुमाना (हनुमान): हनुमान
हनूमान (हनुमान): हनुमान
हर: शिव
हरि: भगवान, प्रभु, परमात्मा, विष्णु

अनुवादक के ओरे से दू शब्द

गोस्वामी तुलसीदास सभ लोग के कल्याण के खातिर भगवान राम के आदर्श दरसवते 'रामचरितमानस' जईसन महान ग्रंथ के रचना कईलन, जवन लोकभाषा अवधी में बा। ऐकरा पहिले महर्षि वाल्मीकि संस्कृत में 'रामायण' के रचना कईले रहन। भारतवर्ष के संस्कृति शुरुये से आध्यात्मिकता से भरल रहे। बीच-बीच में ऐकरा खंडित करे के कोशिश होत रहल। लेकिन ढ़ेर महापुरुष लोगन के कोशिश के चलते ई जस-के-तस बनल रहल।

भगवान राम के जीवन ऐकरा में खास योगदान देलस। आज इक्कीसवीं सदी में इंसान के भीरी समय के कमी हो गईल बा। उ भौतिकता में हीं व्यस्त रहे लागल बा। अईसन घड़ी में ओकरा भीरी 'रामचरितमानस' जईसन विशाल ग्रंथ के पढ़े खातिर समय के कमी पड़े लागल। ऐहिसे डॉo ओमप्रकाश गुप्ता जी ऐकर छोट रुप के जनता के सामने लईलन, जेकरा से उ कमे समय में राम के पूरा जीवन के जान जाए।

भोजपुरी में 'रामचरितमानस' के ई छोट रुप के अनुवाद होखला से भोजपुरी क्षेत्र के जनता भी कम समय में राम के जीवन से परिचित हो जईहन, अउरी भोजपुरी साहित्य के भी ई एगो महत्वपूर्ण ग्रंथ रही। ई ग्रंथ के भोजपुरी अनुवाद करके हम बहुत संतोष अउरी आनंद के अनुभव करत बानी अउरी ऐकरा भगवान राम के किरपा मानत बानी। राम के काम कईला बिना हमरा आराम कहँवा, अईसने मानसिक स्थिति हमार अनुवाद करते घड़ी बनल रहल। हम अनुवाद के ध्यान से पढ़ के ओकरा में मूल्यवान सुझाव देला खातिर आदरणीय डाo मीरा सिंह जी अउरी श्रीमती स्मिता लधवाला जी के आभार प्रकट करत बानी। ओम जी के विश्वास हमरा ऊपर बनल रहल कि ई भोजपुरी अनुवाद के यज्ञ में हम आपन आहुति डाल सकनी। हम आशा करत बानी कि पाठक ई किताब के पसंद करिहन। हम कामना करत बानी कि सियाराम के किरपा सभ लोग पर बनल रहे, अउरी ई ग्रंथ से संसार के भला होखे। भगवान राम हमरा के निमित्त बनाके आपन ई काम करववलन, ऐकरा खातिर भगवान राम के बहुत-बहुत धन्यवाद।

जय सियाराम

अम्बे कुमारी

बोधगया, बिहार, भारत

US $5.45

ISBN 978-1-7362088-7-8

9 781736 208878